साहित्यकार ब० माणकचन्द नाहर
व्यक्तित्व एवं कृतित्व

साहित्यकार ब० माणकचंद नाहर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

सम्पादक

तुलसीप्रसाद शर्मा

ग्रंथायन

सर्वोदय नगर, सासनी गेट,

[illegible]

प्रकाशक

ग्रन्थायन
सर्वोदयनगर, सासनी गेट,
अलीगढ-२०२००१

सम्पादक

तुलसीप्रसाद शर्मा

मूल्य

बाईस रुपए

सस्करण

प्रथम, १९८१

मुद्रक

नवयुग प्रेस,
महावीरगज,
अलीगढ

अपनी ओर से दो शब्द

हिन्दी साहित्य के अगाध सागर मे इतने अमूल्य रत्न छिपे हुए हैं कि आज तक उन सभी से हमारा परिचय नही हो पाया है। श्री बख्तावरचन्द माणकचद नाहर भी ऐसे ही अज्ञात हिन्दी-सेवी हैं जिन्होने सुदूर दक्षिण भारत मे रहकर सभी तरह से हिन्दी की सेवा का व्रत लिया है और वे इस दिशा मे निरतर कार्यरत हैं।

बहुमुखी प्रतिभा के घनी श्री नाहर न सिर्फ हिन्दी साहित्य मे अपनी रचनाओ के द्वारा श्रीवृद्धि ही कर रहे है, अपितु अन्य भाषाओ—तमिल, तेलगू, मलयालम आदि के साहित्य का परिचय भी हिन्दी जगत् को देते रहे है। देश की एकात्मता के लिए परस्पर विचार-विनिमय का यह सकल्प प्रशसनीय है। उनकी सत्प्रेरणा से अनेक अहिन्दी भाषी हिन्दी के अध्ययन के प्रति आकर्षित हुए हैं और उनके कदमो से कदम मिलाकर इस अभियान की सपूर्त्ति मे लगे है।

ऐसे एकान्तनिष्ठ साधक के व्यक्तित्व और कृतित्व पर यह छोटा-सा विनम्र प्रयास विद्वानो के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मैं सतोष का अनुभव कर रहा हूँ। सतोष का एक और कारण है कि इस पुस्तक के लिए जिन लेखको के लेख मैंने आमन्त्रित किए थे उनमे से अधिकाश ने मुझे बहुत पहले (१९७७-७८ मे) ही दे दिए थे, किन्तु मैं अस्वस्थता और आलस्यवश पुस्तक को जल्द ही प्रकाशित न करा सका। यह एक प्रकार से ठीक ही हुआ, क्योकि इस सामग्री के पर्याप्त उपयोग से डॉ० नरेन्द्र कुमार शर्मा की प्रेरणा से, डॉ० हरिमोहन के निर्देशन मे कु० शैला सकलानी ने एक लघुशोध प्रबध प्रस्तुत कर गढवाल विश्वविद्यालय, की एम० ए० की परीक्षा प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण की है। इस बीच अन्य लेखको ने भी कुछ देकर मुझे अनुगृहीत किया है। मै इन सभी लेखको का हृदय से अभारी हूँ।

अत मे मैं 'ग्रथायन' के स्वत्वाधिकारी श्री अभयकुमार गुप्त का कृतज्ञ हूँ, जिन्होने बडे उत्साह और लगन के साथ इस पुस्तक का प्रकाशन किया है।

—तुलसीप्रसाद शर्मा

साहित्यकार ब० माणकचंद नाहर की स्वर्गीया माता

श्रीमती झनकार बाई

और

स्वर्गीय पिता श्री बख्तावरचंद नाहर

की पुण्य स्मृति को समर्पित

विषय क्रम

अध्याय 1

ब० माणकचंद नाहर : एक बहुमुखी व्यक्तित्व

हिन्दी साहित्य के अगाध सागर मे इतने बहुमूल्य रत्न छिपे हुए है कि आज तक सभी से हमारा परिचय नही हो पाया है, और इसीलिए यह आश्चर्य की बात नही कि प्रतिभा के धनी, साहित्य के मनीषी, काव्यकमला-कर के दिवाकर और उदारता के उदाहरण श्री माणकचद नाहर के सतरगी व्यक्तित्व से अधिकाश हिन्दी प्रेमी अद्यावधि अपरिचित से ही है। नई पीढी के हिन्दी-सेवको मे आपका योगदान अनुकरणीय है। भारती के भव्य-भवन मे नित्य आकर नवीन काव्य प्रसूनो से माँ की पूजा करना आपका सहजधर्म है। कविता के क्षेत्र मे आपकी लेखनी 'सत्याग्रह' का लोभ सवरण नहीं करती। यथार्थ के चितेरे एक समर्थ कवि होने के साथ ही साथ आप अच्छे निबन्धकार और आलोचक भी है। अपनी प्रखर प्रतिभा और मौलिक चिन्तन से आपने हिन्दी साहित्य की जो श्रीवृद्धि की है और कर रहे है, वह विविध रूपो मे स्मरणीय है।

श्री माणकचद जी नाहर का जन्म राजस्थान के नागौर जिले के अन्तर्गत भोजास गाँव मे ३, अक्टूबर, १६४४ ई० को हुआ था। आपका पालनपोषण जैन परिवार मे हुआ, आपके पिता का नाम श्री बख्तावर चद और माता का नाम श्रीमती भनकार बाई था। बहुत ही छोटी अवस्था मे आपको अकेला छोडकर माता-पिता दोनो ही स्वर्गवासी हो गए। अनाथ श्री माणकचद जी नाहर का जीवन अत्यन्त सघर्ष-पूर्ण हो गया, फिर भी उत्साही आप जन्मजात है, इसलिए सकटो का सामना करने मे आपने धैर्य और सहिष्णुता का परिचय

दिया। आपके सघर्षपूर्ण व्यक्तित्व के लिए श्री मैथिलीशरण गुप्त की इन पक्तियो मे जितने उपयुक्त शब्द हो सकते है, उतने मेरे नही —

जितने कष्ट-कटको मे है जिनका जीवन सुमन खिला।
गौरव-गध उन्हे उतना ही, यत्र-तत्र-सर्वत्र मिला॥

वस्तुत श्री नाहर जी की शिक्षा-दीक्षा भी सघर्ष के क्षणो मे ही हुई। आपके प्रारम्भिक शिक्षा-गुरुओ मे दो के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं—श्री हीरालाल जी पारख और श्री गुलाबचन्द जी जैन। इधर आपकी प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा जैन विद्यालय मद्रास मे हुई तो उधर हिन्दी प्रचार सभा मद्रास (ससदीय अधिनियम द्वारा घोषित राष्ट्रीय महत्व की सस्था) से राष्ट्रभाषा-पारगत जैसी परीक्षाएँ उच्च श्रेणी मे उत्तीर्ण की। साथ ही विभिन्न विश्व विद्यालयो से एम०ए०, साहित्य रत्न एव "शिक्षा विशारद" आदि परीक्षाएँ भी उत्तीर्ण की। यह नही, आपने एल० एल० बी० के द्वितीय वर्ष मे तदर्थ कानून का अध्ययन छोडकर वकालत का पेशा स्वीकार नही किया, क्योकि आपके हृदय के अन्दर तो हिन्दी भाषा और साहित्य के लिए अपूर्व तडपन थी। फलत वकालत का पेशा क्योकर रुचता। श्री नाहर जी हिन्दी और तमिल के प्रभावशाली विद्वान हैं। अँग्रेजी मे भी आपकी वाक् स्पर्द्धा स्पृहा के योग्य है। यद्यपि आपकी भाषा राजस्थानी रही है, तथापि इन भाषाओ के अतिरिक्त आप सस्कृत के प्रेमी और सस्वर पाठी भी है।

श्री माणक चन्द जी नाहर अपने परिवार मे दो भाई थे। एक भाई का युवावस्था मे ही बगाल मे शरीर पूरा हो गया। श्री माणक चन्द जी की पत्नी श्रीमती सुशीला नाहर (जन्म ३-१२-५०) स्वभावत सौम्य और मृदु है। आपकी पाच सन्ताने है—उषा, सुरेश, सुनील, शीला एव शर्मिला। श्री नाहर श्याम वर्ण के ३६ वर्षीय सुदृढ शरीर यष्टि वाले सच्चरित्र, उत्साही नवयुवक है। आपके चरित्र की दृढता का उदाहरण नही है। श्री नाहर जी पर अपने गुरुओ का चरित्र अकित है। वे अपने विद्यार्थी जीवन से निर्भीक वक्ता भी रहे है। यही कारण है कि आप सत्यभाषी, विनम्र, स्पष्ट वक्ता और शातिप्रिय व्यक्ति हैं। वे सभी धर्मों को आदर भाव से देखते है, परन्तु मूलत वे जैन धर्म मतावलम्बी है। आचार्य मानतुंग रचित "भक्तामर" आपका प्रिय स्तोत्र है। इसका पाठ आप जितने प्रेम और तन्मयता से करते है, उतने ही प्रेम से आप "वैष्णवो" के प्रिय स्तोत्र "सुप्रभातम्" का भी पाठ करते हैं।

श्री माणक चद जी नाहर का शैक्षणिक जीवन भी उच्चस्तरीय है। आजकल आप राजस्थानी ग्रेजुएट एसोशियेशन, मद्रास के अध्यक्ष हैं। श्री जैन हिन्दी प्रचार महाविद्यालय, मद्रास के आप प्रधानाचार्य के पद को भी अलकृत किए हुए है। हिन्दी प्रचार सभा (दक्षिण भारत) की परीक्षा कार्य-कारिणी के सक्रिय सदस्य होने का आपको सौभाग्य प्राप्त है। "सेठ बख्तावर चन्द नाहर पोस्ट ग्रेजुएट कालेज एण्ड रिसर्च इन्सटीट्यूट मद्रास" के आप अध्यक्ष पद का भार भी वहन कर रहे है। आपने शिक्षा-जगत मे अनेक ऐसे उत्कृष्ट कार्य किए है, जिनसे कि आपका नाम हिन्दी साहित्याकाश मे सदैव देदीप्यमान रहेगा।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि श्री ब० माणक चन्द नाहर बहुमुखी प्रतिभा के धनी है। आपका व्यक्तित्व अनेक विशेषताओ से युक्त है। आप एक उच्च कोटि के साहित्य-सर्जक होने के साथ ही शिक्षा-शास्त्री, समाज-सेवक, राष्ट्र-भाषा हिन्दी के अनन्य सेवक, राष्ट्रभक्त और सक्रिय राजनीतिज्ञ है। इस तरह आपका कार्य क्षेत्र अत्यन्त व्यापक होने के कारण व्यक्तित्व भी बहुमुखी है। अब हम उनके व्यक्तित्व के इन सब पक्षो पर अलग अलग सामान्य रूप से विचार करे।

(अ) शिक्षा शास्त्री माणकचंद नाहर

श्री नाहर एक सजग शिक्षा-शास्त्री है। आप बाल-साहित्य, प्रौढ-शिक्षा-साहित्य सम्बन्धी तथा अनेक शैक्षणिक सस्थाओ से सबधित है। यही नही आपने साक्षरता और प्रौढ शिक्षा का राष्ट्र-व्यापी प्रचार करने मे अमूल्य योग-दान दिया है। मद्रास मे आपने हिन्दी तथा साक्षरता का प्रचार अपनी पूरी शक्ति से किया है। आपने साहित्य के माध्यम से ही नही, अपितु अपने प्रयत्नो से कई शिक्षा सस्थाओ की स्थापना करके इस दिशा मे अनुकरणीय कार्य किया है। इस दृष्टि से आप द्वारा स्थापित "श्री जैन हिन्दी प्रचार महा-विद्यालय" एव सेठ भक्तावर रिसर्च इन्सटीट्यूट" साक्षरता प्रचार-प्रसार के जीते-जागते उदाहरण है। सन् १९६६ से अब तक आपके कार्य क्षेत्र दक्षिण भारत मे आप द्वारा सैकडो मजदूर व नौकरी पेशा लोग प्राथमिक शिक्षा से विशारद परीक्षा तक साक्षर हो गये है। प्रौढ शिक्षा और साक्षरता-द्वारा आपने राष्ट्रीय एकता को सुदृढ किया है।

आपके अनेक निबन्ध आपके शिक्षा शास्त्री रूप को हमारे सामने उजागर करते है, यथा—

१—रूस और अमेरिका की प्राथमिक शिक्षा (तुलनात्मक सर्वेक्षण)—
"राष्ट्रभारती"–वर्धा मे प्रकाशित

२—तमिल और तेलगू मे बाल-साहित्य—
"नवभारत टाइम्स" (बम्बई) मे प्रकाशित

३—मलयालम और कन्नड मे बाल-साहित्य एक अध्ययन—
साप्ताहिक राष्ट्रदूत, छपरा, बिहार मे प्रकाशित

४—तमिल और तेलगू बालगीत—
साहित्य सम्मेलन पत्रिका, प्रयाग, १९७१ मे प्रकाशित ।

इसके अतिरिक्त आपने समय-समय पर विभिन्न स्थलो पर प्रौढ शिक्षा के सन्दर्भ मे गोष्ठियां, सेमिनार शिविर तथा पखवाडो का आयोजन किया । आज भी वे इस क्षेत्र मे पूरी निष्ठा के साथ कार्यरत है ।

(ब) समाज-सेवक श्री नाहर

आप एक सफल सामाजिक कार्यकर्ता है । आप राष्ट्र की अनेक सस्थाओ से विभिन्न रूप से जुडे हुये है । सामाजिक रूढियो, अन्ध विश्वासो, दहेज जेसी कुरीतियो की रोकथाम मे आप सक्रिय है । आपके साहित्य मे भी इस तरह की समस्याओ को स्वर मिला है । सास्कृनिक एकता के सबध मे आपके अनेक लेख प्रकाशित हुए है, जैसे सास्कृतिक एकता की प्रतीक कहावते, (न० भा० टा०) बम्बई, मन्दिर भी, मस्जिद भी (नवनीत) सास्कृतिक एकता का प्रतीक अफगानिस्तान (हि० प्र० समाचार, मद्रास ।)

आप किसी न किसी रूप मे निम्नलिखित राष्ट्रीय महत्त्व की सस्थाओ से सबन्वित है—

१—दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास ।

२—हिन्दी-साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ।

३—भारतीय हिंदी परिषद्, प्रयाग ।

४—इण्डियन एडल्ट एजुकेशन एशोशिएसन, नई दिल्ली ।

आप क्षेत्रीय स्तर की निम्न सस्थाओ से संबधित है—

१—नार्थ मद्रास भारत स्काउट्स एड गाइड्स,

२—राजस्थानी एसोशिएसन, मद्रास,

३—पजाब एसोशिएसन, मद्रास,

४—राजस्थानी जैन समाज, मद्रास,

५—राजस्थानी ग्रेजुएट एसोशिएशन, मद्रास,

६—साहित्यानुशीलन समिति, मद्रास,

७—मद्रास फाइनेन्शियर्स एण्ड पान ब्रोकर एसोशिएसन, मद्रास,

८—पी० एम० चैरिटेबल ट्रस्ट, मद्रास।

(स) राष्ट्रभाषा हिन्दी के अनन्य सेवक : ब० माणकचन्द

मूल निवासी राजस्थान के होते हुये भी आपने सन् १९५७ मे मद्राम-क्षेत्र को अपना कार्यक्षेत्र मानकर दक्षिण मे हिन्दी का प्रचार किया। इम हेतु आपने सर्व प्रथम हिन्दी का गहन अध्ययन किया। "साहित्य विशारद", साहित्यरत्न", "शिक्षा विशारद", पारगत एव एम० ए० (हिन्दी) आदि शैक्षणिक योग्यताएँ हासिल करके आपने हिन्दी समाज मे नया चरण रखा। दक्षिण वासियो को उनकी मातृभापा के माध्यम से हिन्दी की शिक्षा दी जाए, इस दृष्टिकोण के साथ आपने दक्षिण भारतीय भाषाओ का तुलनात्मक रूप मे अध्ययन कर अनेक विपयो पर इस सदर्भ मे तुलनात्मक निबन्ध प्रकाशित किए। आप द्वारा स्थापित श्री जैन हिन्दी प्रचार महाविद्यालय एव सेठ बख्तावर चन्द नाहर पोस्ट ग्रेजुएट कालेज एण्ड रिसर्च इन्सटीट्यूट राष्ट्रभाषा प्रचार के जीते जागते उदाहरण है। अन्य भाषाओ से हिन्दी की तुलना सबधी आपके अनेक निवन्ध प्रकाशित हुए है। आपकी लेखनी हिन्दी-साहित्य की विविध विधाओ को समृद्ध करने मे व्यस्त है।

आप राष्ट्रीय एकता के अटल अनुरागी है। 'चाहे कन्याकुमारी मे रहे, या काश्मीर मे, हम भारत के निवासी है, यह आपका स्पष्ट विचार है। भारतीय भाषाओ की कहावतो द्वारा आपने सास्कृतिक एकता को भारतीय जनता के सामने रखा। आपके निम्नलिखित प्रकाशित निबन्ध राष्ट्रीय एकता के प्रबल प्रमाण हैं—

१—सास्कृतिक एकता की प्रतीक कहावते (न० भा० टा०, बम्बई)

२—मन्दिर भी मस्जिद भी ("नवनीत", बबई),

३—तमिल और कश्मीर कहावते (सरस्वती, प्रयाग),

४—कन्नड और कश्मीरी कहावते (सरस्वती, प्रयाग),

५—हिन्दी और तमिल कहावतो का तुलनात्मक अध्ययन (भाषा शिक्षा मत्रालय, भारत सरकार),

६—स्वतत्रता की नीव एकता (दक्षिण राजस्थानी पोस्ट, मद्रास)।

संकटकालीन राष्ट्र को आपका समर्पित योगदान भी अमूल्य है। आपने सन् १९६२ ई० के चीन के युद्ध के समय, सन् १९६५ के पाकिस्तान-युद्ध के समय तथा गत युद्ध के दौरान जवानो-हेतु अपने समृद्ध समाज द्वारा प्रत्यक्ष एव परोक्ष रूप मे कपडे दवाइयाँ एव अन्य आवश्यक सामग्री इकट्ठी करवाकर जवानो की सेवा मे प्रेषित की। शिक्षित एव अशिक्षित समाज को तत्कालीन स्थिति समझाने हेतु अनेक सेमीनार, गोष्ठियाँ एव कविसम्मेलनो का आयोजन किया, तथा अपने विचारो को जनता के सम्मुख प्रस्तुत किया।

राष्ट्र-सेवा के इन कार्यों के अतिरिक्त आप सक्रिय राजनीति से भी सम्बद्ध रहे है। सुदूर दक्षिण मे अनेक चुनावो मे प्रत्याशी बनकर श्री नाहर ने प्रवासी हिन्दी भाषियो के लिए रिकार्ड बनाया है। अधोलिखित चुनावो मे आप प्रत्याशी रहे। वरीयता के अनुसार चुनावो का विवरण इस प्रकार है—

१—उप-राष्ट्रपति चुनाव के लिये नामाकन किया, अगस्त, १९७९।

२—लोकसभा के लिए १९७७ मे मद्रास उत्तरीय ससदीय निर्वाचन क्षेत्र से निर्दलीय उम्मीदवार के रूप मे ऊँट "चिह्न" के साथ प्रत्याशी थे।

३—सन् १९८० मे मद्रास मध्य ससदीय निर्वाचन क्षेत्र से निदलीय उम्मीदवार के रूप मे दोनो स्थान से चुनाव चिन्ह "ऊँट" के साथ उम्मीदवार थे।

४—तमिलनाडु विधानसभा चुनाव १९७२ मे मद्रास बदरगाह विधान-सभायी क्षेत्र से "ऊँट" चिन्ह के साथ निर्दलीय उम्मीदवार थे।

५—तमिलनाडु विधान परिषद् चुनाव, १९७८ मे मद्रास जिला स्नातक निर्वाचन क्षेत्र से निदलीय उम्मीदवार थे।

प्रत्याशी बनना भी असाधारण योग्यता का सूचक है, इसके लिये अने: औपचारिकताएँ पूरी करनी पडती है। दूरदर्शिता अनुभव व ज्ञान की आवश्यकत है। "वोटर लिस्ट" मे नाम रहना, फिर वोट डालना इत्यादि साधारण बा भी कभी-कभी कठिनाई महसूस कराती है। उदाहरणार्थ—भारत के ए: प्रात के मुख्य न्यायाधीश श्री चाँदमलजी लोढा काफी देर लाइन मे ख होने के बाद वापिस घर लौटे, क्योकि उनका "वोटर लिस्ट" मे ना: नही था।

इसी प्रकार तमिलनाडु राज्य के मुख्य सचिव (भूतपूर्व) रामप्पा क नामाकन पत्र चुनाव अधिकारी ने रद्द किया, क्योकि वह पूरा भरा हुअ नही था।

(द) साहित्यकार के रूप में : श्री ब० माणकचंद नाहर

हिन्दी साहित्य की विविध विधाओ को समृद्ध बनाने मे श्री माणकचन्द नाहर का अविस्मरणीय योगदान है। सर्व प्रथम उनके कवि रूप की चर्चा करें तो हमे भ्रमित होना पडेगा। कभी तो ऐसा लगता है कि आप निराला के निकट है, कभी ऐसा प्रतीत होता है कि बालकृष्ण शर्मा के निकट है, कभी ऐसा प्रतीत होता है कि बालकृष्ण शर्मा "नवीन" को आप पुन अभिव्यक्त कर रहे है। कभी आप बिलकुल नयी कविता के कवियो से जुडे हुये मालूम पड़ते है।

आपके निबन्धो मे भी व्यक्ति-प्रधानता, गहन चिन्तन के साथ हास्य और व्यग्य की भी प्रधानता है। आपने साहित्य सबधी, कलात्मक सभी प्रकार के निबन्धो पर लेखनी चलाई है, आपके साहित्यिक निबधो मे "विचार-विमर्श" "अल्पविराम" "हिन्दी साहित्य मे पचपरमेश्वर" आदि प्रमुख है। सास्कृतिक निबन्धो मे "रक्षा बन्धन" "भिन्न-भिन्न देशो के स्वतन्त्रता दिवस", "कालिदास की नगरी उज्जैन" और हास्य-व्यग्य प्रधान निबन्धो मे "स्वर्ग की सैर" "कर्ज लेना एक वरदान", "जुआ एक झाँकी" इन प्रधान निबन्धो के अतिरिक्त और भी अनेक निबन्ध प्रकाशित हो चुके है।

समीक्षा के क्षेत्र मे श्री माणक चन्द जी नाहर का महत्वपूर्ण योगदान है। "जयशकर प्रसाद के नाटक" "भुनिचौन्थमल की कविता" आदि निबध आपकी समीक्षा शैली के अच्छे उदाहरण है। भाषा-विज्ञान के पडितो से आपका विशेष सम्पर्क रहा है। इसलिये भाषा सबधी निबध भी आपकी लेखनी से नि सृत हुए है। "हिंदी और तमिल की कहावतें", "सास्कृतिक एकता की प्रतीक कहावतें", "क, ख, ग, घ, च, छ" हिन्दी के सख्यावाचक शब्दो का त्रिकोणात्मक अध्ययन आदि निबन्ध आपकी भाषा-रुचि के प्रयास है। रेडियो पर आपकी ज्ञान-वर्द्धक वार्ताएं विशेष चाव से सुनी जाती है

आपके निबधो, कविताओ और कहानियो का प्रकाशन विभिन्न पत्र-पत्रिकाओ मे आये दिन होता रहता है। आपके लेखो को प्रकाशित करने वाले पत्र, पत्रिकाएँ हैं—राष्ट्रसेवक, अग्रगामी, सुलभा, सद्भावना, धन्वन्तरि, नवभारत टाइम्स, जोरदार, हिन्दी साहित्य, भक्तामर, अमर जगत, नवनीत, भाषा, सरस्वती, राष्ट्रभारती, सयुक्त भारती, युगप्रभात, राष्ट्रदूत, आदि। इसके अतिरिक्त पत्रकार के रूप मे भी आपकी सेवाये उल्लेखनीय है। आपके

पास जब भी कोई पत्रिका-प्रेमी अपनी नव-प्रकाशित अथवा पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएँ भेजते हैं, तो आप बडे मनोयोग से उन पत्रिकाओ को पढकर अपनी निष्पक्ष सम्मति तुरन्त भेजते हैं, और अमूल्य सुझाव देकर ऐसे लोगो का उत्साह वधन करते है। ऐसी अनेक पत्रिकाओ मे इनकी सम्मति-सदेश और अभिमतियाँ प्रकाशित होती रही है यथा—(१) अनेकान्त पथ, जबलपुर (अक सोलह जुलाई, अगस्त १६७०), जिनवाणी, जयपुर, मई, १६७१, अमरभारती, जुलाई, १६७१, अक–२, आत्म रश्मिया, लुधियाना, अप्रैल, १६७२, प्रकाशित मन, नई दिल्ली, विश्व हिन्दी सम्मेलन विशेषाक, माच, १६७५, समता-सदेश, बगलौर, २१ फरवरी ७६ अक, जैन ज्योति, अजमेर, अक्टूबर, १६७२, तीर्थंकर, (इन्दौर, दिवाकर जन्म शताब्दी विशेषाक, १६७८), जैन प्रकाश, नई दिल्ली ३५, (७६ अक आदि-आदि।

आप कवि के रूप मे अखिल भारतीय स्तर के अनेक हिन्दी कवि-सम्मेलनो मे भाग लेते रहे हैं, और श्रोताओ की प्रशसा प्राप्त करते रहे है। उन्हे अनेक पुरस्कार मिल चुके है और अनेक मानपत्र उनकी साहित्यक सेवाओ के उपलक्ष्य उनको प्रदान किए गए हे। सितम्बर, १६७७ के जिनवाणी के अक मे प्रकाशित यह समाचार उनके साहित्यिक महत्व को रेखाकित करने के लिए पर्याप्त है–"तमिलनाडु राज्यपाल महामहिम प्रभुदास पटवारी ने साहित्यानुशीलन समिति के रजत जयन्ती महोत्सव पर सुप्रसिद्ध जैन कवि, लेखक एव पत्रकार श्री माणकचद नाहर, एम० ए० को उनकी दीघकालीन साहित्यिक सेवाओ के उपलक्ष्य मे सम्मान-पत्र द्वारा सम्मानित किया। श्री नाहर गत बीस वर्षो से हिन्दी के प्रचार-प्रसार एव साहित्यिक तथा सास्कृतिक गति-विधियो के लिए समर्पित है।[१]

व्यक्तित्व के अन्य पक्ष

श्री नाहर धार्मिक प्रवृत्ति के शिक्षा शास्त्री और गम्भीर समाज–चिन्तक साहित्यकार तो हैं ही, वे हँसमुख स्वभाव वाले व्यक्ति भी है। गोष्ठियो, शिविरो और सेमिनारो मे आप एक श्रोता के रूप मे गम्भीर से गम्भीर विषयो पर सार्थक टीका-टिप्पणी करके पूरे माहौल को प्रफुल्लित कर देते है। एक बार उन्हे एक कवि सम्मेलन का सचालन करना पडा। इस कवि सम्मेलन मे आपका दायित्व बहुत ही महत्त्वपूर्ण था। इस कवि सम्मेलन की पूरी घटना आपके हँसमुख व्यक्तित्व और विलक्षण प्रतिभा को रेखाकित करती है, देखे—

स्थान—तमिलनाडु का चेंगलपेट जिला,
प्रसग—रामनवमी और महावीर जयती समारोह (मयुक्त ममारोह),
समय—७ वजे रात्रि (अप्रैल, १९७५),
श्रोताओ की उपस्थिति—प्रवासी राजस्थानी,
कवि सम्मेलन शुरू—एक वरिष्ठ कवि ने देश, काल, वस्तुस्थिति को विना समझे उस समय 'जूते' पर कविता पढ दी। वहाँ की जनता इम कविता को पचा नही सकी। वास्तव मे एक श्रोता इस कवि का सत्कार जूते से करने पर उतारू हो गया।

माणकचद नाहर ने अपनी विलक्षण प्रतिभा, तद्विपयक सूझबूझ से इस कविता पर टिप्पणी की—"अभी आपने रामनवमी के सुअवसर पर भगवान राम की चरण पादुका पर कविता सुनी — —"

और श्रोता खुशी की लहर मे — — —।

इसी तरह एक समारोह का दृश्य भी इस प्रसग मे देना अनुचित न होगा—

तारीख–६-४-८०, सध्या, ५ वजे।
स्थान–३४ नुंगम्वाकम हाई रोड, मद्रास-३४
समारोह—प्रेमचन्द-जन्म-शताब्दी ममारोह, मद्रास (साहित्यानुशीलन समिति, मद्रास के सान्निध्य मे)
प्रमुख वक्ता—डॉ० कमलकान्त पाठक, प्रोफेसर व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, नागपुर वि० वि०
उपस्थिति—श्रोता ९५% एम० ए० से ऊपर शिक्षा वाले, ७५% पी० एच० डी० उपाधिधारी। मद्रास शहर के सभी कालेजो के विभागाध्यक्ष एव प्राध्यापक उपस्थित (हिन्दी व एकाध अन्य विभागो के भी)
मुख्य विद्वान—डॉ० नेजुडन, डॉ० सुन्दरम्, डॉ० गणेशन, डॉ० कमलकान्त पाठक के गम्भीर, विद्वतापूण भाषण के वाद पूरा माहौल गम्भीर मुद्रा मे।

इन सब वातो को देखते हुए मद्रास विश्व विद्यालय के हिन्दी-विभाग के रीडर तथा उपन्यास विषय के विशेषज्ञ डा० एस० एन० गणेशन ने ठीक ही कहा कि—"श्री माणकचन्द नाहर को मै गत वीस-पच्चीस वर्षो से साहित्यिक ममारोह मे श्रोता के रूप मे, वक्ता के रूप मे समझने का प्रयास कर रहा हूँ। श्री नाहर गम्भीर से गम्भीर वातो को वडी आसानी से पकड लेते है तथा उसकी प्रतिक्रिया भी मार्मिक ढग से व्यजना शैली मे करते है। उनकी टीका-

टिप्पणी बडी सजग, जागरूक और आतरिक पट को खोलने वाली होती है। कभी कभी श्रोता के रूप मे उनकी-टिप्पणी उस समारोह की विशेपता बन जाती है। उनकी टिप्पणी को अन्य श्रोतागण मार्मिक ढग से समझने का प्रयास करे"[२]।

अन्तत माणकचन्द जी नाहर एक स्वतत्र चितक, स्वाभिमानी एव सवेदनशील मानव तथा अध्ययनरत अध्यवसायी के रूप मे हमारे स्नेह और श्रद्धा के पात्र है। आपकी सबसे बडी विशेपता यह है कि आप हृदय से शुद्ध और दृढ चरित्र के स्वामी है तथा गुरुओ मे आपकी अनन्य श्रद्धा है। आपका स्वतत्र व्यक्तित्व और गरिमामयी प्रतिभा उदाहरण की वस्तु है।

२ —साहित्यानुशीलन समिति, मद्रास द्वारा आयोजित प्रेमचन्द जन्म शताब्दी समारोह (६-५-८० मे वार्तालाप में कही गयी प्रतिक्रिया)।

अध्याय २

नाहर-साहित्य में हास्य, विनोद और व्यंग्य

श्री व० माणकचन्द नाहर प्रवासी राजस्थानी हैं। बाल्यकाल मे ही माता-पिता का साया उनके सिर से उठ गया था। बचपन से ही संघर्ष उन्हे झेलना पडा। संघर्षों ने उन्हे बहुत कुछ सिखाया है। दृढ निश्चय, उत्साह, कर्मठता, अध्ययनशीलता उनके व्यक्तित्व के अग बनते गये, और एक निर्भीक, सहृदय तथा कर्तव्यपरायण नागरिक के रूप मे श्री नाहर आज हमारे सामने है। प्रतिभा के धनी माणकचन्द एक श्रेष्ठ साहित्यकार, शिक्षाशास्त्री, समाजसेवी आदि रूपो मे अपनी पहचान रखते है। इस गम्भीर व्यक्तित्व के बीच हास्य, विनोद और व्यग्य की चर्चा करना भले ही कुछ लोगो को विनोद लगे, किन्तु यह बात अपनी जगह एकदम सही है कि वे जितने गम्भीर है उतने ही विनोदी भी। उनके साहित्य मे हास्य, विनोद और व्यग्य पर्याप्त मात्रा मे मिलता है।

हास्य, विनोद और व्यग्य इन तीन शरारती तत्त्वो की अपनी विशिष्ट प्रकृति है। कहा जाता है कि जघन्य अपराध के लिये पुलिस और अदालत है। उससे छोटे अपराध के लिये सार्वजनिक आलोचना या लोक निन्दा है, जिसे निर्भीक लोग ही कर सकते है। कुछ भयभीत और शिष्ट लोग इसके निवारण के लिए साहित्यिक ढग अपनाते है, और व्यग्य का प्रयोग करते है।

व्यग्य मे प्रहारकर्त्ता सुरक्षित रहता है, क्योकि वह दुहरा निशाना मारता है और आहत से यह कह सकता है कि मैं आपको नही मार रहा, बल्कि उसे मार रहा हूँ।

टिप्पणी बडी सजग, जागरूक और आतरिक पट को खोलने वाली होती है। कभी-कभी श्रोता के रूप मे उनकी-टिप्पणी उस समारोह की विशेपता बन जाती है। उनकी टिप्पणी को अन्य श्रोतागण मार्मिक ढग से समझने का प्रयास करे"[२]।

अन्तत माणकचन्द जी नाहर एक स्वतत्र चितक, स्वाभिमानी एव सवेदनशील मानव तथा अध्ययनरत अव्यवसायी के रूप मे हमारे स्नेह और श्रद्धा के पात्र है। आपकी सबसे बडी विशेपता यह है कि आप हृदय से शुद्ध और दृढ चरित्र के स्वामी है तथा गुरूओ मे आपकी अनन्य श्रद्धा है। आपका स्वतत्र व्यक्तित्व और गरिमामयी प्रतिभा उदाहरण की वस्तु है।

२ —साहित्यानुशीलन समिति, मद्रास द्वारा आयोजित प्रेमचन्द जन्म शताब्दी समारोह (६-५-८० मे वार्तालाप मे कही गयी प्रतिक्रिया)।

उनका हास्य बडो का हास्य है जो चरित्र की एक विशिष्टता को लक्षित करता है । इसी प्रकार उनका विनोद भी रूप-विन्यास की, चरित्र की एव स्वभाव की विचित्रता की ओर सकेत करता है, अहम्मन्यता का प्रदर्शन नही करता । कटुता एव क्रोध का मिला-जुला रूप जो गर्हित भूत एव लज्जास्पद वर्तमान को दलित करके नवनिर्माण करना चाहता हे उनक व्यग्य मे दृष्टिगत होता है, और उनका यह व्यग्य पक्षपात–रहित है ।

हास्य और व्यग्य का सम्मिलित रूप उनकी कविता की इन पक्तियो मे देखे—

'मै विश्व का महान कवि,
अफ्रीका से लेकर अमेरिका तक
आइलैण्ड से लेकर थाइलैंड तक फिरता हूँ
इसलिये नोबेल पुरस्कार विजेता हूँ ।

लाइफ से लेकर वाइफ तक लिखता हूँ,
इसलिये ज्ञानपीठ और अकादमी की लाटरियो मे विकता हूँ ।
कभी-कभी जडी बूटी को छानता हूँ
इसलिये अपना पडाव गवर्नर के यहाँ डालता हूँ ।
बोथ से लेकर जोथ तक
प्ले से लेकर ग्ले तक लेटता हूँ
इसलिये कि विधान परिषद और राज्य सभा मे बैठता हूँ ।
मै विश्व का महान कवि ।'

['राष्ट्रसेवक' (मासिक), अप्रेल १९७३ मे प्रकाशित]

अपात्र मे पात्रता की उद्भावना जहाँ हास्य का कारण बनती है, उसके आचार व्यवहार उस हास्य को जहाँ मुँहफट बनाते हे, वही व्यवस्था पर करारा व्यग्य भी हो गया है ।

सामाजिक व्यग्य की उद्भावना उनकी 'दहेज' नामक कविता मे इस प्रकार हुई है—

'रिवाज दुलारा दहेज प्यारे, धन का अनुमान कर ले ।
शादी के पहले दूल्हे कँवर, दहेज का फरमान कर ले ।
लडकी अनपढ और असुन्दर, व्यर्थ बाते क्यो बनाना ।
मिल रहा जब हजार-लाख, फिर क्यो टेवा मिलाना ।

उससे छोटे अपराध मे, जिसे त्रुटि या स्खलन कह सकते है, हास्य का प्रयोग होता है। इसमे प्रहारकर्त्ता प्रत्यक्ष रूप से वार करता है। व्यग्यकार की तरह छिपकर गोली नही मारता।

विनोद मे परस्पर मार होती है, इसे 'वाणी का मल्लयुद्ध' कहेगे। इसमे कहने वाले को भी सुनना पडता है और सुनने वाले को भी कहना पडता है। विनोद मे कोई त्रुटि नही करता, पर उसकी त्रुटि खोज निकाली जाती है, सप्रयत्न दोपारोपण किया जाता है। यह गुलगुलो की मार है और इसमे कोई बुरा नही मानता, क्योकि इसमे दोनो पक्षो की पूर्व स्वीकृति होती है। विनोद हास्य का शतरज है।

कहे तो कह सकते है कि हास्य मन पर प्रभाव छोडता है, विनोद मस्तिष्क को प्रभाव मे लेता है और व्यग्य हृदय को छील देता है।

विनोद सर्वाधिक भद्रो मे, हास्य सामान्य भद्रो मे तथा व्यग्य प्रत्यक्ष और प्रच्छन्न भद्रो मे होता है।

डॉ० पुत्तूलाल शुक्ल ने विनोद, हास तथा व्यग्य का विवेचन करते हुए निष्कर्ष निकाला है[1]—

विनोद—परस्पर लक्ष्य, स्थिति—त्रुटिहीनता, पूर्वस्वीकृति, व्युत्पन्नता का आश्रय।

हास—एक पक्ष लक्ष्य, एक पक्ष लक्षी, एक पक्ष त्रुटित, एक पक्ष न्यायाधीश, त्रुटिकर्त्ता से कुछ सद्भाव और द्वेपहीनता, जनता की न्यायाधीश से सहमति।

व्यग्य—लक्ष्य करने वाला चतुर अहेरी, दर्शको का समर्थन, लक्ष्य पक्ष उच्च और गौर वास्पद और प्रच्छन्न घृणास्पद, एक साथ दो तीर एक कल्पित लक्ष्य पर, एक असली लक्ष्य पर। मानस हिंसा की तुष्टि, लोक मे व्यग्यकार निर्दोप और क्षणिक रूप मे लोकनायक।

प्राय व्यग्य के लिए 'Satire', विनोद के लिये 'wit' तथा हास्य के लिए 'humour' शब्द का प्रयोग किया जाता है।

श्री ब० माणकचद नाहर का साहित्य मुख्यत काव्य, रेखाचित्र–जीवनी और निबधो मे रूपायित है। उनके साहित्य मे प्राप्त हास्य, विनोद और व्यग्य उतना ही सयत एव स्नेहप्रसूत है जितना उनका दृढ एव कोमल व्यक्तित्व।

१ डा० पुत्तूलाल शुक्ल 'हास्य, विनोद और व्यग्य' (स० डा० प्रेमनरायण टडन साहित्य मे हास्य और व्यग्य, लखनऊ हिन्दी साहित्य भडार, १९७५), पृ० ३७

उनका हास्य बडो का हास्य है जो चरित्र की एक विशिष्टता को लक्षित करता है। इसी प्रकार उनका विनोद भी रूप-विन्यास की, चरित्र की एव स्वभाव की विचित्रता की ओर सकेत करता है, अहम्मन्यता का प्रदर्शन नही करता। कटुता एव क्रोध का मिला-जुला रूप जो गर्हित भूत एव लज्जास्पद वर्तमान को दलित करके नवनिर्माण करना चाहता है उनके व्यग्य मे दृष्टिगत होता है, और उनका यह व्यग्य पक्षपात–रहित है।

हास्य और व्यग्य का सम्मिलित रूप उनकी कविता की इन पक्तियो मे देखें—

'मै विश्व का महान कवि,
अफ्रीका से लेकर अमेरिका तक
आइलैण्ड से लेकर थाइलेंड तक फिरता हूँ
इसलिये नोबेल पुरस्कार विजेता हूँ।

लाइफ से लेकर वाइफ तक लिखता हूँ,
इसलिये ज्ञानपीठ और अकादमी की लाटरियो मे विकता हूँ।
कभी-कभी जडी बूटी को छानता हूँ
इसलिये अपना पडाव गवर्नर के यहाँ डालता हूँ।
बोय से लेकर जोय तक
प्ले से लेकर ग्ले तक लेटता हूँ
इसलिये कि विधान परिषद और राज्य सभा मे बैठता हूँ।
मै विश्व का महान कवि।'

['राष्ट्रसेवक' (मासिक), अप्रेल १९७३ मे प्रकाशित]

अपात्र मे पात्रता की उद्‌भावना जहाँ हास्य का कारण बनती है, उसके आचार व्यवहार उस हास्य को जहाँ मुँहफट बनाते हे, वही व्यवस्था पर करारा व्यग्य भी हो गया है।

सामाजिक व्यग्य की उद्‌भावना उनकी 'दहेज' नामक कविता मे इस प्रकार हुई है—

'रिवाज दुलारा दहेज प्यारे, धन का अनुमान कर ले।
शादी के पहले दूल्हे कँवर, दहेज का फरमान कर ले।
लडकी अनपढ और असुन्दर, व्यर्थ बाते क्यो बनाना।
मिल रहा जब हजार-लाख, फिर क्यो टेवा मिलाना।

विश्वास करो इस दहेज से ही यह जिन्दगी बनेगी,
सफल दूल्हा वह है जिसकी राकेट चाल चलेगी ।
सब अभी ध्यान मे रखके अपने पूरे अरमान करले,
शादी से पहले दूल्हे कँवर, दहेज का फरमान करले ।

[दक्षिण राजस्थानी पोस्ट (मासिक), अक १, जून १९७२]

यह व्यग्य व्यक्तिगत न होकर सामाजिक है । कही कोई छल नही, कपट नही । लोकमगल के लिए निष्पक्ष दृष्टि की अनिवार्यता को कवि ने स्वीकार किया है ।

सामाजिक दायित्व की यही महत् भावना उनके 'कॉफी' नामक व्यग्य-निबध मे देखी जा सकती है, जिसमे हास्य का भी समावेश हो गया है—

"यह न ब्राजील की काफी थी, जो ऊँची-ऊँची घाटियो पर अधिक पानी, लेकिन जडो मे नही ठहरे, यथेष्ट ताप पर पैदा हो । उसमे काफिन नामक जहर प्राकृतिक हो जो दिन प्रतिदिन जनता को आकर्षित कर रोगो का 'बर्थ डे' दे । न यह शब्दो का 'काफी' शब्द था जो काफी मात्रा मे यत्र-तत्र सर्वत्र प्रयुक्त हो ।"

['अग्रगामी' (जयपुर), जन० १९५८]

भाषा का चमत्कार इसे विनोद के निकट ले जाता है । मूल चेतना व्यग्य और हास्य की होते हुए भी विनोद अपना प्रभाव प्रबल कर रहा हैं । भाषा का यह चमत्कार मुहावरो के प्रयोग से द्विगुणित हो गया है, इसी निबन्ध की कुछ मुहावरेदार पक्तियाँ देखें—

यदि काफी नही रहे तो उनकी काफी खिल्ली उड जाय
फिर 'काफी' उल्टीगगा बहाकर 'फीका' कहलाये ।'
उनकी आँखो मे धूल डालकर अपनी जेब गर्म कर लेते हैं ।

खिल्ली उडाना, उल्टी गगा बहाना, आँखो मे धूल झोकना और जेब गर्म करना' जैसे मुहावरो का प्रयोग इस निबध मे नयी चेतना, स्फूर्ति और चमत्कार प्रदान करता है । और विनोद के नये आयामो का उद्घाटन हो गया है ।

'राष्ट्रीय अपराध निवारण के सदर्भ मे नीति' जैसे गम्भीर निबन्ध मे व्यग्य का पुट देना लेखक के अभिव्यक्ति कौशल का अच्छा प्रमाण है, जो उसकी गद्यशैली का उत्कृष्ट नमूना है । रोचकता के साथ-साथ व्यग्य की मार्मिकता इस निबन्ध का आकर्षण बन गयी है, कुछ पक्तियाँ पढे—

"आज भारत मे कानून पर अधिक ज़ोर दिया जा रहा है, जिसमे अपराधो को प्रोत्साहन मिलता है। कानून गरीबो के लिए है, अमीरो के लिए नही, क्योकि धनवान साधारणतया अपने धन के बल पर कानून से मुक्त हो जाते है। चोरी करना, धोखा देना और अपशब्द कहना आदि अपराध माने जाते हैं। धनवान इन अपराधो को करते है, लेकिन वकीलो की चतुराई से यह अपराध न्यायालय मे प्रमाणित नही हो पाते है। वे अपने अपराधी मुवक्किलो को अदालत के पजे से बडी आसानी से छुडाते है। अत ऐसी विषम परिस्थितियो मे क्रमश लोकनीति, समाजनीति, अर्थनीति, तथा राजनीति का अनुशीलन अथवा विवेचन राष्ट्र के लिए प्रत्येक नागरिक हेतु अवश्य पठनीय है।"

(हिन्दी प्रचार समाचार, नई दिल्ली, १६ जुलाई १६७१)

हास्य-विनोद का एक अच्छा उदाहरण उनका लिखा एक बालोपयोगी लेख है—शीर्षक 'बच्चो का प्रिय फल बेर'। श्री नाहर के इस लेख की शब्दावली देखे—

"महाकवि तुलसीदास जी ने शायद काशी मे बेर अधिक खाये होगे तभी आत्मानुभूति करके उन्होने महाकाव्य रामचरितमानस मे 'शबरी के झूठे बेर रामचन्द्र जी को खिलाना,' प्रसग का बडा रोचक वर्णन किया। इसमे भक्त की श्रद्धा का, भगवान के भक्तो पर कृपा का वर्णन मिलता है। साथ ही बेर का महत्त्व मालूम होता है—

'सबरी कटुक बेर तजि मीठे की कछु सक न मानी, भाई।'

[राष्ट्रदूत (साप्ताहिक), छपरा, १६ जून ७० अक]

लेख मे रोचकता का समावेश इस हास्य-विनोद से स्वत ही हो गया है। प्रसग के साथ अपने चातुर्य से खिलवाड कर, विनोद की सृष्टि करने मे श्री नाहर माहिर है।

कभी-कभी प्रसग को वे नया ही वातावरण दे देते है। वाक्पटुता और बुद्धिचातुर्य इस जोखिम के काम के लिये अनिवार्य है। श्री नाहर मे ये दोनो ही बाते है। एक कविसम्मेलन का दृश्य है।[2] श्री नाहर कविसम्मेलन के सचालक थे। एक वरिष्ठ कवि सकट मे पड गये। कवि महोदय ने देश, काल, वस्तुस्थिति को बिना समझे उस समय 'जूते' पर कविता पढनी शुरू करदी। श्रोता इस कविता को झेल नही पाये। एक क्रुद्ध श्रोता तो वास्तव मे

२ अप्रेल १६७५ मे रामनवमी व महावीर जयती का सयुक्त समारोह तमिलनाडु के चेगल पेट जिले मे आयोजित।

कवि का सत्कार जूते से करने पर उतारू हो गया । श्री नाहर ने अपनी विलक्षण प्रतिभा, सूझबूझ मे इस कविता पर टिप्पणी की—"अभी आपने रामनवमी के शुभअवसर पर भगवान राम की चरण पादुका पर कविता सुनी— – – ।"

श्रोता खुशी की लहर मे !

वास्तव मे उनके सम्बन्ध मे डॉ० एस० एन० गणेशन ने ठीक ही कहा है, "श्री माणकचद नाहर गम्भीर से गम्भीर बातो को बडी आसानी से पकड लेते है तथा उसकी प्रतिक्रिया भी मार्मिक ढग से व्यजना शैली मे करते है । उनकी टीका टिप्पणी बडी सजग, जागरूक और आतरिक पट को खोलने वाली होती है ।"

हास्य की सजीवनी शक्ति जिस प्रकार जीवन मे सजीवता का सचार करती है, उसी प्रकार लेखक की रचनाओ मे भी । श्री माणकचद नाहर इस बात को अच्छी तरह समझते है और इसीलिये उनकी रचनाओ मे हास्य व्यग्य-पूर्ण अनेक स्थल मिलते है । हास्य-विनोद आदि के ततु मानवव्यक्तित्व मे गहराई तक जुडे रहते हैं । इनके अभाव मे व्यक्ति को 'गभीर', 'मनहूस' आदि विशेपणो मे लपेट दिया जाता है, पर इनका आधिक्य व्यक्ति को हल्का, मजाकिया या मसखरा कहला देता है । श्री नाहर न तो मनहूसियत के अवतार हैं और न पहले दर्जे के मसखरे ! फ्रायड की शब्दावली मे कहे तो कह सकते है कि इनके व्यक्तित्व मे सहज चमत्कार (Harmless wit) के ततु जितने अधिक ह, प्रवृत्ति चमत्कार (Tendency wit) के ततु उतने अधिक नही ।

अध्याय ३

कवि ब० माणकचन्द नाहर का काव्य : जीवन-मूल्यों की पुनर्व्याख्या

श्री नाहर की काव्य-प्रतिभा उनके द्वारा रचित सैकडो कविताओ मे देखी जा-सकती है। उनकी कविताएँ देश की अनेक पत्र-पत्रिकाओ और सकलनो मे बिखरी पडी है। यह उल्लेखनीय है कि इस कवि ने अन्य ऐसे कवियो की तरह अपना कोई काव्य-सकलन अपनी ओर से प्रकाशित नही करवाया है, जो प्राय शौक और झूठी प्रशसा अर्जित करने के लिये अपने खर्चे पर अपने काव्य सकलन छपवाते है।

काव्य का सामान्य परिचय

कवि माणकचन्द नाहर के काव्य-साहित्य को प्रकाशन की दृष्टि से दो रूपो मे देखा जा सकता है—

१—प्रतिनिधि सकलनो मे सकलित रचनाएँ।

२—पत्र-पत्रिकाओ मे प्रकाशित रचनाएँ।

सकलनो मे सकलित विशेष उल्लेखनीय रचनाएँ हैं—

१—रुबाइयाँ (प्रतिनिधि रुबाईयाँ नामक सकलन मे सकलित, प्रकाशक गिरधर प्रकाशन, दिल्ली–६)

२—"तुम मिली वनके अँधेरे मे रोशनी मुझको" (गीत)–प्रेमगीत नामक सकलन, जनवरी, १९६७ मे प्रकाशित;

३—गजल–(गजलाजलि नामक सकलन, प्रकाशक, प्रगति प्रकाशन, आगरा)

४—"मुक्तक" (मानसरोवर नामक संकलन, जबलपुर मे प्रकाशित)

कवि का सत्कार जूते से करने पर उतारू हो गया । श्री नाहर ने अपनी विलक्षण प्रतिभा, सूझबूझ मे इस कविता पर टिप्पणी की—"अभी आपने रामनवमी के शुभअवसर पर भगवान राम की चरण पादुका पर कविता सुनी---- -- -- ।"

श्रोता खुशी की लहर मे !

वास्तव मे उनके सम्बन्ध मे डॉ० एम० एन० गणेशन ने ठीक ही कहा है, "श्री माणकचद नाहर गम्भीर से गम्भीर बातो को बडी आसानी से पकड लेते है तथा उसकी प्रतिक्रिया भी मार्मिक ढग से व्यजना शैली मे करते ह। उनकी टीका टिप्पणी बडी सजग, जागरूक और आतरिक पट को खोलने वाली होती है।"

हास्य की सजीवनी शक्ति जिस प्रकार जीवन मे सजीवता का सचार करती है, उसी प्रकार लेखक की रचनाओ मे भी । श्री माणकचद नाहर इस बात को अच्छी तरह समझते है और इसीलिये उनकी रचनाओ मे हास्य व्यग्य-पूर्ण अनेक स्थल मिलते है। हास्य-विनोद आदि के ततु मानवव्यक्तित्व मे गहराई तक जुडे रहते हैं। इनके अभाव मे व्यक्ति को 'गभीर', 'मनहूस' आदि विशेषणो मे लपेट दिया जाता है, पर इनका आधिक्य व्यक्ति को हल्का, मजाकिया या मसखरा कहला देता है। श्री नाहर न तो मनहूसियत के अवतार है और न पहले दर्जे के मसखरे ! फ्रायड की शब्दावली मे कहे तो कह सकते है कि इनके व्यक्तित्व मे सहज चमत्कार (Harmless wit) के ततु जितने अधिक है, प्रवृत्ति चमत्कार (Tendency wit) के ततु उतने अधिक नही ।

इन सकलनो के अतिरिक्त उनकी अनेक रचनाएँ अनेक स्मारिकाओ और अनेक पत्र-पत्रिकाओ मे प्रकाशित होती रही है। उनकी अब तक प्रकाशित कविताओ की सख्या लगभग दो सौ है।

वर्ण्य विषय

कवि "नाहर" की कविताएँ अनेक विपयो और समस्याओ को अभिव्यक्त करती है, उन्होने एक ही विषय को लेकर अनेक कविताए नही लिखी। इनकी प्रत्येक कविता का स्वर अलग होता है। उनके काव्य मे देश-प्रेम, मानव-प्रेम, सामाजिक, राजनीतिक व्यग्य और प्रकृति-प्रेम इत्यादि भावनाएँ समान रूप से देखी जा सकती है। विपय के अनुसार यदि हम माणकचन्द जी के काव्य का वर्गीकरण करना चाहे तो इस प्रकार कर सकते है—
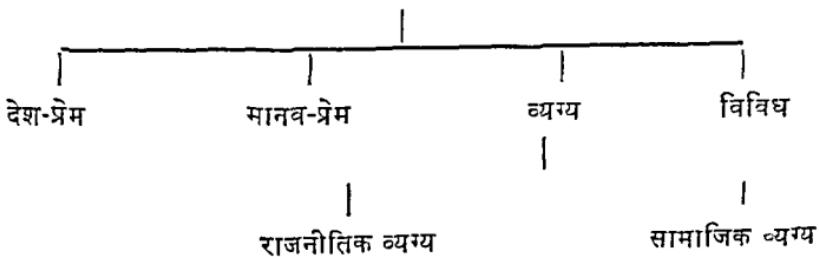
हम अब इस वर्गीकरण के आधार पर ही श्री नाहर जी के काव्य की विपय-वस्तु का विश्लेपण करेगे।

देश-प्रेम

श्री माणकचन्द नाहर की अनेक कविताओ मे देशप्रेम की भावना विद्यमान है। एक कविता मे उन्होने अपने जन्म-प्रदेश राजस्थान के प्रति अपने प्राणो को समर्पित कर देने की पावन भावना व्यक्त की है। राजस्थान के इतिहास की झाकी प्रस्तुत करते हुए वहाँ के वीरो, वहाँ की इतिहास कथाओ, वहाँ के ऐतिहासिक स्थलो, मन्दिरो और सस्कृति तथा कला की प्रशसा करते हुए कवि कहता है—

"ओ मरुधरे! मेरे प्राण,
मेरे प्राणो से प्यारे राजस्थान,
ओ वीरो की रणभूमि ललाम,
तुम मीरा के पुनीत धाम।

× × ×

बिखर पडी है शिल्पकला
आबू के जैन मन्दिरो मे,
मुस्लिम की पाक ख्वाजा दरगा,
हिन्दू के पुष्कर पर्वत सिरो मे।

× × ×

वीर प्रताप की स्वतत्रता गाती
गाथा आज भी हल्दीघाटी,
गढ चित्तौड की ऊँची पहाडी
उस जौहर की कथा सुनाती।

× × ×

सुवह हुई सिदूर लाली से,
लाल विजय से रँगी शाम,
युग बदले, ना बदले तेरी शान,
हर पत्थर पर अकित है बलिदान,
मेरे प्राणो से प्यारे राजस्थान"[1]

मानव-प्रेम

उनकी अनेक कविताओ मे मानव-प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है। यह मानव-प्रेम दो रूपो मे मिलता है—एक ओर तो मानव के प्रति दया भाव, करुणा और उसके दुखो मे हाथ बँटाने की भावना कवि मे विद्यमान है, दूसरी ओर वे मानव को उज्ज्वल चरित्र और सत्कर्म करने की ओर प्रेरित करते हुए जैसे शिक्षा प्रदान करते है।

कवि इन्सानियत के प्रति भावना व्यक्त करता है—

"दुनियाँ मे नही कही ईमान नजर आता है,
यहाँ इन्सान मे भी शैतान नजर आता है,
वसा बशर ने ली हैं यद्यपि अनेको वस्तियाँ,
दिल आदमी का मगर वीरान नजर आता है॥[2]

इसी तरह एक रुबाई मे भौतिकता को तमाम दुखो और चिंताओ का कारण बताते हुये एक शिक्षक के रूप मे कवि बडी ही नीतिपरक बात कहता है—

१ प्राणो से प्यारे राजस्थान (कविता), राजस्थान सर्राफा सघ स्मारिका, पृ० ८३
२ प्रतिनिधि रुबाईया, गिरधर प्रकाशन, दिल्ली–६, पृ० ८६

घन दु ख है, सुख नही,
मात्र चिन्ता है,
और कुछ नही ।[१]

व्यग्य

श्री माणकचद नाहर का तमाम लेखन व्यग्य प्रधान है । वे व्यक्ति और समाज दोनो पर निर्मम प्रहार करते है । बडी ही सीधी-सादी भाषा मे वे विसगतियो को सामने रखने मे बडे माहिर है । उनके व्यग्य काव्य को दो वर्गों मे रखा जा सकता है–

१–राजनीतिक व्यग्य,
२–सामाजिक व्यग्य ।

राजनीतिक व्यग्य मे उनकी ऐसी व्यग्य कवितायें रखी जा सकती है, जो राजनीतिक व्यक्तियो अर्थात् तथाकथित राजनेताओ और उनके गुर्णो पर प्रहार करने के लिये लिखी गयी ह । ऐसी एक कविता की कुछ पक्तियाँ देखिये–

'मै विश्व का महान कवि,
अफ्रीका से लेकर अमेरिका तक
आइलैण्ड से लेकर थाइलैड तक फिरता हूँ
इसलिये नोबेल पुरस्कार विजेता हूँ ।
लाइफ से लेकर वाइफ तक लिखता हूँ,
इसलिये ज्ञानपीठ और अकाडेमी की लाटरियो मे बिकता हू ँ ।
कभी-कभी जडी-बूटी को छानता हू ँ
इसलिये अपना पडाव गवर्नर के यहाँ डालता हूँ ।
बोय से लेकर जोय तक
प्ले से लेकर ग्ले तक लेटता हू ँ
इसलिये कि विधान परिषद और राज्य सभा मे बैठता हू ँ ।
मै विश्व का महान कवि ।'[२]

इसी तरह एक कविता की पक्तियाँ और देखिये जिनमे सामाजिक व्यग्य उभर कर आया है । इन पक्तियो मे दहेज जैसी सामाजिक कुरीति पर बडा ही मारक व्यग्य किया गया है–

१ प्रतिनिधि रुबाईयाँ, गिरधर प्रकाशन, दिल्ली–६, पृ० ८६
२ मैं विश्व का महान कवि (कविता), राष्ट्र सेवक, अप्रैल, १९७३

'रिवाज दुलारा दहेज प्यारे, धन का अनुमान कर ले।
शादी के पहले दूल्हे कँवर, दहेज का फरमान कर ले।
लडकी अनपढ और असुन्दर, व्यर्थ बाते क्यो बनाना।
मिल रहा जब हजार-लाख, फिर क्यो टेवा मिलवाना।
विश्वास करो इस दहेज से ही यह जिन्दगी बनेगी,
सफल दूल्हा वह है जिसकी राकेट चाल चलेगी।
सब अभी ध्यान मे रखके अपने पूरे अरमान करले,
शादी से पहले दूल्हे कँवर, दहेज का फरमान करले।"[1]

विविध : प्रेमानुभूति

आवेग, ओजस्विता और व्यग्य के अतिरिक्त श्री नाहर के काव्य मे व्यक्तिगत प्रेम की तीव्र अनुभूति और मादकता भी विद्यमान है। इस प्रेमानुभूति की यह विशेषता है कि उसमे वियोग का रोना-धोना नही है, बल्कि सयोग का चित्रण अधिक है। उनके एक प्रेमगीत की कुछ पक्तियाँ विशेप रूप से उल्लेखनीय है–

"कब तलक हममे मेरी जिन्दगी शरमाओगी।
आज या कल मेरी बॉहो मे समा जाओगी॥
बाद मुद्दत के मिली है ये हँसी रात प्रिये।
बाद मुद्दत के हुई तुम से मुलाकात प्रिये॥
जिन्दगी भर नही भूलोगी कभी आज की बात।
आओ बतला दूँ तुम्हे जिन्दगी की राज की बात॥[2]

उन्होने अपने प्रेम को गजल के माध्यम से भी व्यक्त किया है। उनकी एक ग़ज़ल की कुछ पक्तियाँ द्रष्टव्य है–

"तुमको ए जॉ प्यार करते है,
जान अपनी निसार करते है।
कर न पाये उम्र भर जिनसे,
उनसे ऑखे चार करते है।"[3]

१ दहेज कविता, प्रथम अक दक्षिण राजस्थानी पोस्ट, जून, १६७२
२ तुम मिली बनके अँधेरे मे रोशनी मुझको। (गीत) प्रेमगीत, जनवरी, ६७, पृ० ६८
३ सकलन प्रगति प्रकाशन, आगरा, पृ० ६३

जीवन के प्रति दृष्टि

आज के काव्य मे जीवन के प्रति ऊब, अनास्था, कु ठा आदि भावनाएँ मिलती है। किन्तु इसके साथ ही नाहर का काव्य जीवनो-मुख काव्य है। उन्होने अपनी कविताओ मे जीवन के विविध चित्र खीचे है। जिन्दगी के सिलसिले को एक रुबाई मे वे इस प्रकार व्यक्त करते है—

"हर रात ढलकर भोर होती है,
हर भोर थक कर शाम होती है।
इस तरह यह वक्त कट जाता है,
इस तरह उम्र तमाम होती है॥[1]

इसी तरह एक मुक्तक देखिये—

"हर रात ढलकर हो रही है भौर,
हर भोर ढलकर हो रही है शाम।
है यही इस जिन्दगी का क्रम,
इस तरह ही चल रहा हर काम॥"[2]

निराशा और आशा के इन चित्रो मे जीवन की परिभाषा को शब्दायित किया हे।

नीति और शिक्षा

श्री नाहर ने पुरातन जीवनमूल्यो के प्रति अपनी प्रगाढ निष्ठा व्यक्त की है। वे जैन धर्म के प्रति समर्पित है। उनके सस्कार धार्मिक सस्कार है। उनकी जीवन चर्या के अनुकूल उनके काव्य मे सूक्तियो के रूप मे नीति और शिक्षा की बाते स्वत ही समाविष्ट हे। इस दृष्टि से उनकी अनेक रचनाओ को यहाँ उद्धृत किया जा सकता है यथा—

(अ) लडते नही कभी जो लडना क्या आयेगा?
बढते नही कभी जो बढना क्या आयेगा?
चलते है जो डर-डर के जमी पे ही फिर उन्हे
आकाश की ऊँचाई पे चढना क्या आयेगा?[3]

(ब) "हर मेघ मे जल नही होता,
जीवन आज, कल नही होता।

१ प्रतिनिधि रुबाईयाँ, गिरधर प्रकाशन, दिल्ली-५, पृ० ८५
२ पाँच मुक्तक (सकलन) पुस्तक, जबलपुर, पृ० २३
३ वही।

कल्पना मिथ्या नही होती,
सपना सदा छल नही होता ॥'[1]

नीति और शिक्षा सम्बन्धी उनकी एक कविता है "हार को स्वीकारे" इस कविता मे यह दोनो भावनाएँ बडी ही सफलता के साथ व्यक्त हुई है। इस कविता की कुछ पक्तियाँ भी देख लेना समीचीन होगा—

"हार फूल काँटो के बहरो मे खिलते हैं,
सफलता वही मिलती है, पाप जहाँ छिलते है,
हार ही जीत देकर जाती है, क्यो इसे धिक्कारे,
आओ सब मिल, खुशी से हार को स्वीकारे ॥

× × ×

नयी-नयी बाधाओ से हार को मिलता पोषण है,
जीतने वालो ने नही सोचा उसमे उनका शोषण है,
जीत बाहर से फूलो पर चमकीली शबनम है,
इसके अन्दर झाँको तो पत्थर भारी भरकम है,
जो हारने से रोके, छोडो ऐसे रखवारे,
आओ सब मिल खुशी से हार को स्वीकारे ॥[2]

इसी तरह उनकी अनेक बालोपयोगी रचनाये भी शिक्षाप्रद है। ऐसी रचनाओ का स्वतन्त्र अध्ययन उनके बालसाहित्य के सदर्भ मे किया जा सकता है।

इस प्रकार हम देखते है कि श्री व० माणकचन्द नाहर का काव्य विविध विषयो को अपने अन्दर सँजोये हुए है। उसमे देश-प्रेम, नीति, शिक्षा से लेकर व्यक्तिगत प्रेमानुभूति, मानव-प्रेम और व्यग्य की भावना विशेष रूप से देखी जा सकती है।

काव्य-शिल्प

वर्ण्य विषय से सम्पन्न श्री नाहर का काव्य, शिल्प की दृष्टि से भी कम सम्पन्न नही है। उसके काव्य का शिल्प उत्तरोत्तर समृद्ध होता गया है। श्री नाहर ने अपने काव्य को अद्भुत कलात्मकता, सौन्दर्य और नूतनता प्रदान की है। यही कारण है कि यदि हम उनके काव्य को शिल्प के कलात्मक प्रतिमानो की कसौटी पर कस कर देखे तो हमे निराश नही होना पडता।

१ प्रतिनिधि रुबाईया, गिरधर प्रकाशन, दिल्ली ६ पृ० ८६
२ हार को स्वीकारे (कविता) हलकारा (हिन्दी पत्रिका) सादडी, १-५-७६

अब हम उनके काव्य के कलापक्ष पर निम्नलिखित शीर्षकों के आधार पर विचार करेंगे—

१—काव्य भाषा–जिसके अन्तर्गत भाषा-प्रयोग, प्रतीक, विम्ब, पर विचार किया जायेगा।

२—रस योजना,

३—अलकार योजना, और

४—छन्द योजना।

काव्य-भाषा

काव्य-भाषा सामान्य भाषा से अलग होती है। काव्य भाषा ही कवि के व्यक्तित्व की अलग पहचान निर्धारित करती है। यही कारण है कि अनेक विद्वानो ने काव्य भाषा के महत्त्व को रेखाकित किया है। जैसे– "काव्यात्मक भाषा सृजनात्मक तथा कलात्मक सवेदनाओ का वह विशिष्ट प्रकटीकरण है, जिसकी परिधि मे भाव-प्रकाशन की समस्त सीमाएँ आ जाती है। साहित्यिक भाषा सामान्य प्रकटीकरण के क्षेत्र से परे विशिष्ट शैली का रूप धारण करती है। यह भाषा वक्ता की अनुभूति को सहृदय के अन्तस्तल मे ज्यो का त्यो उद्बुद्ध कर देती है। साधारण भाषा का उद्देश्य केवल मात्र भावो के आदान-प्रदान मे ही निहित रहता है, जबकि काव्य-भाषा मे विषय और शैली एक होकर पाठक के हृदय मे विम्ब उपस्थित करते है। काव्य-विषय और शैली के ऐकात्म्य के लिए यह आवश्यक है कि भाषा व्याकरण सम्बन्धी नियमो से परिचालित हो। प्रभावशाली भाषा मे कलात्मक और व्याकरण सम्बन्धी नियमो का समन्वय होना चाहिये।"[१]

प्रत्येक प्रतिभा-सम्पन्न कवि अपनी प्रतिभा के बल पर अपनी काव्यभाषा का निर्माण करता है, वह शब्दो के पुराने अर्थो को तोडता है और उनमे से नये अर्थ निकालता है, शब्दो और अर्थों को नये सन्दर्भ प्रदान करता है। शब्द-चयन काव्य-भाषा का एक महत्त्वपूर्ण अग है। प्रत्येक सजग कवि उपयुक्त शब्दो के चयन की ओर सचेष्ट रहता है। पहले वह शब्दो की शक्ति को तोलता है, फिर उन्हे नये सन्दर्भो मे रखकर नये-नये अर्थो की सम्भावनाये देखता है और प्रचलित शब्दो का इस रूप मे प्रयोग करता है कि प्रमाता चकित हो उठे।

१ बुद्धिराज, देव के काव्य में अभिव्यक्ति विधान', पृ० १४५

(अ) भाषा प्रयोग

भाषा प्रयोग की दृष्टि से यदि हम श्री माणकचद के काव्य का अध्ययन करे तो पायेगे कि उन्होने प्रचलित शब्दो को ही अपने काव्य मे प्रयुक्त किया है। उनकी भाषा मे अँग्रेजी, तमिल, राजस्थानी, उर्दू, अरबी-फारसी आदि के शब्द बडी मात्रा मे प्रयुक्त हुए है। ऐसे शब्दो की सामान्य सूची इस प्रकार दी जा सकती है—

१ अँग्रेजी शब्दावली—मिनिस्टर, डॉक्टर, इजीनियर, डिमान्ड, पी० यू० सी०, सिलेक्शन, एम० एल० ए०, एडमीशन, ऐम्पलायमेट, एक्सचेंज, आलराउन्ड, ट्यूशन, इटरव्यू, ग्रेजुएट, बी० ए०, एम० ए०, पी० एच० डी०, डिग्री, गवर्नर, जज, गाडन, डिनर, पार्टी, टी, फूड, फरनीचर आदि।

२ उर्दू, अरबी, फारसी—रिवाज, मुहब्बत, राज, जिन्दगी, मुद्दत, वक्त, इशारो, जिकर, मुलाकात, तलक, अल्लाह, मुश्किल आदि।

श्री नाहर ने अपनी रचनाओ मे मुहावरो का भी प्रयोग किया है। मुहावरो के प्रयोग से उनकी रचनाओ मे चुस्ती, प्राणवत्ता और अद्भुत लाक्षणिकता के साथ ही अर्थ विस्तार की नई सम्भावनाओ का समावेश हुआ है। मुहावरा प्रयोग के कुछ उदाहरण इस प्रकार देखे जा सकते है—

१ "कर न पाये उम्र भर जिन से,
उनसे आँखे चार करते है।'[1] (आँखे चार होना)

२ "भाषा की बहती गगा, जमुना मे हाथ मारता हूँ,
बोल्गा से मिससिपी का साहित्य पालता हू।"[2]
(बहती गगा मे हाथ धोना—का नया प्रयोग)

३ 'पी-एच०डी०, डी० लिट् सारे को,
रोटी ही चपत लगाती है।"[3] (चपत लगाना)

४ "यह मौहब्बत हाय तोबा,
कब से तारे शुमार करते है।"[4] (तारे गिनना का नया प्रयोग)

इस तरह भाषा-प्रयोग की दृष्टि से श्री नाहर का काव्य कलापूर्ण है। उसमे सस्कृत की तत्सम शब्दावली से लेकर सामान्य लोक-प्रचलित शब्दावली,

१ गजलाजलि (सकलन) प्रगति प्रकाशन, आगरा, पृ० ६३

२ मे विश्व का मानव हू महान् (कविता) द० रा० पोस्ट, हिन्दी मासिक अप्रैल, ७३

३ "रोटी" (कविता) आधुनिक गणित, अगस्त, ६७, अग्रगामी, २६

४ गजलाजलि (सकलन) प्रगति प्रकाशन, आगरा, पृ० ६३

अँग्रेजी, उर्दू, अरबी' फारसी के सामान्य शब्द और मुहावरे प्रचुर मात्रा मे प्रयुक्त हुए है।

(ब) प्रतीक-योजना

"प्रतीक" का अर्थ मानक-हिंदी कोष मे इस प्रकार दिया गया है—

"वह बात या वस्तु जो अपने आकस्मिक सादृश्य अभिसाम्य अथवा तर्क संबध के आधार पर किसी दूसरी बात या वस्तु का स्थान ग्रहण करती हो।"[१]

प्रतीक शब्द अँग्रेजी के "सिम्बल" शब्द का हिन्दी पर्याय है। प्रतीक की परिभाषा विभिन्न विद्वानो ने अलग-अलग ढग से दी है यथा— बेपेन ने प्रतीक की परिभाषा देते हुए लिखा है, "मेरे विचार से प्रतीक मुख्य रूप से इन्द्रिय अथवा कल्पना के सम्मुख प्रस्तुत कोई वस्तु है जिसका किसी अन्य वस्तु के लिये प्रयोग होता है।"[२]

डॉ० राजबली पाण्डेय ने प्रतीक की परिभाषा इस प्रकार प्रस्तुत की है– "अपने समान गुणो या विशेषताओ अथवा मानसिक सम्बन्ध के कारण जिस वस्तु को देखते या सुनते ही कोई अन्य लक्षित वस्तु तत्काल ही बरबस स्मरण हो आती हो, उसे प्रतीक कहा जाता है।"[३]

प्रतीक का काव्य मे बहुत ही महत्त्व है। प्रतीक अपने लघु आकार मे बहुत बडा अर्थ सजोये हुए रहते है। जिस बात को अनेक शब्दो मे कवि नही कह पाता वह एक छोटे से प्रतीक के माध्यम से सफलतापूर्वक कही जा सकती है।

श्री नाहर के काव्य मे अनेक तरह के प्रतीको का प्रयोग मिलता है। कुछ उल्लेखनीय प्रतीक इस प्रकार देखे जा सकते है—

१ रोटी—जीवन की मूलभूत आवश्यकताओ का पतीक है। इसका प्रयोग "रोटी" नामक कविता मे बहुत प्रभावशाली ढग से किया गया है—

१ रामचन्द्र वर्मा (स०) मानक हिंदी कोष (तीसरा खड), हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, पृ०-६१

2 A symbol certainly I think means some thing presented to the senses or the imagination usually to the senses-which stands for something else Symbolism in that way lums through the life

३ हिंदू सस्कार, डा० राजबली पाण्डय, पृ० २३६

"रोटी ही बी, ए० कराती है,
रोटी ही एम० ए० पढाती है,
पी० एच० डी, डी० लिट० सारे को-
रोटी ही चपत लगाती है।
बिन रोटी डिग्री रोती है,
रोटी से मास्टरी पलती है,
गवंनर, जज कुछ भी हो,
रोटी से बोली चलती है।"[१]

२ शेर और गीदड—

भारतीय जनता के प्रतीक के रूप मे, जिसमे अह और दब्बूपन, नासमझी इत्यादि के मिले-जुले भाव सन्निहित है। "मै विश्व का महान् कवि" नामक कविता मे इस प्रतीक का प्रयोग बडा ही सफल बन पडा है—

"किसी का होठ मिले ना मिले, मुझे वोट चाहिए,
शेर और गीदड के वोट चाहिये।"[२]

३ फूल और कॉटा—

प्रसन्नता, उपलब्धि और बाधाओ के प्रतीक है। "हार को स्वीकारे" नामक कविता मे इन दोनो ही प्रतीको का सार्थक प्रयोग देखने को मिलता है—

"हार-फूल कॉटो के पहरो मे खिलते है,
सफलता वही मिलती है, पाप जहॉ छिलते है।"[३]

(स) बिम्ब-योजना

बिम्ब अँग्रेजी "इमेज" शब्द का पर्यायवाची है। शब्दकोष के अनुसार "बिम्ब" से आशय है, किसी पदार्थ का मन चित्र या मानसी प्रतिकृति[४]। बिम्ब वस्तुत ऐन्द्रिक होता है। अधिकाश विद्वानो ने बिम्ब की ऐन्द्रिकता को स्वीकार किया है। बिम्ब को विभिन्न विद्वानो ने अपने-अपने शब्दो से परिभाषित किया

१ "रोटी" (कविता), आधुनिक गणित अगस्त, ६८, अग्रगामी-२६
२ मै विश्व का महानकवि राष्ट्र सेवक, १६७३
३ "हार को स्वीकारे" (कविता), हलकारा (हिंदी पत्रिका) सादडी, १-५-७६
4 A mental representation of something —Short Oxford Dictionary Vol I page 958

है। कुछ प्रमुख विद्वानो की परिभाषाएँ इस प्रकार देखी जा सकती हैं—आचार्य नगेन्द्र के अनुसार—"काव्य-बिम्ब शब्दार्थ के माध्यम से कल्पना द्वारा निर्मित एक ऐसी मानस छवि है, जिसके मूल मे भाव की प्रेरणा रहती हे।[१]

प्रसिद्ध पाश्चात्य् समीक्षक सी० डी० ल्यूइस के अनुसार— "बिम्ब केन्द्रीय माध्यम द्वारा आध्यात्मिक अथवा बौद्धिक सत्यो तक पहुँचने का मार्ग है अथवा वह एक ऐसा शब्द-चित्र है जो भाव या सवेग से अनुप्राणित होता है"। इसी तरह राबिन स्कल्टन नामक पाश्चात्य विद्वान के अनुसार बिम्ब ऐसा शब्द है, जो ऐन्द्रियानुभूति का भाव जागृत करता है।"[२]

डॉ० गणपति चन्द्र गुप्त "कवि-मानस मे बाह्य प्रभाव से निर्मित प्रकृति रचना को बिम्ब मानते है। भारतीय विद्वान प्रो० अखोरी ब्रजनन्दन प्रसाद के शब्दो मे— "काव्यात्मक बिम्ब अदम्य भावना-सम्पृक्त ऐसे शब्द-चित्र है, जिनमे ऐन्द्रिक ऐश्वर्य निहित है, जिसके प्रभाव स्वरूप आनन्द की उत्पत्ति होती है।"[३]

उपर्युक्त परिभाषाओ को देखने पर काव्य-बिम्ब के जो तत्त्व उभर कर आते है वे इस प्रकार है—

१—बिम्ब कल्पना-स्रोत से प्रस्फुटित होते है,

२—इनमे भावात्मकता होती है,

३—ऐन्द्रिकता बिम्ब का प्रधान गुण हे,

४—ये शब्द–निर्मित चित्र होते है,

५—बिम्ब सूक्ष्म और अमूर्त भावनाओ को स्थूल एव मूर्त रूप मे प्रस्तुत करते है।

समग्र रूप से हम कह सकते है कि "बिम्ब सूक्ष्म और अमूर्त मनोभावो को स्थूल और मूर्त (दृश्य) रूप मे प्रस्तुत करने का, वह शब्द-निर्मित प्रभावशाली माध्यम है, जिसमे भाव-प्रवणता, ऐन्द्रिकता एव चित्रात्मक आकर्षण होता है।"[४]

१ डा० नगेन्द्र, काव्य बिम्ब, पृ० ५

2 An Image is a word which arounses ideas of sensory Perception —The Poetic Pattern page 90

३ प्रो०-अखौरी ब्रजनन्दन प्रसाद, काव्यात्मक बिम्ब, पृ०—५६

४ डा० हरिमोहन, "काव्य बिम्ब, स्वरूप एव निर्माण प्रक्रिया" (सप्तसिन्धु, अप्रैल, ७७), पृ०—५२

एक सफल बिम्ब के अभाव मे अच्छे से अच्छा काव्य भी अपना महत्व खो देता है। इसलिए प्रत्येक कवि अपने काव्य मे बिम्ब-योजना पर विशेष ध्यान देता है। श्री माणकचन्द नाहर ने अपने काव्य मे अनेक प्रकार के बिम्बो की सयोजना की है। ये बिम्ब बहुत ही प्रभावशाली और सफल बन पडे है, कुछ उदाहरण देखे जा सकते हे—

"सुबह हुई सिन्दूर लाली से
लाल विजय मे रँगी शाम
युग बदले, न बदली तेरी शान
हर पत्थर पे अकित है बलिदान
मेरे प्राणो से प्यारे राजस्थान।"[1]

इस उद्धरण मे प्रथम दो पक्तियो मे "वर्ण बिम्ब" द्रष्टव्य है। इसी तरह निम्नाकित पक्तियो मे एक और बिम्ब देखा जा सकता है—

"फरनीचर पलग गद्दे बरतन मे क्यो कजूसी करो,
प्यारे दहेज के सेटो मे असली होती महक है।"[2]

इसी तरह एक पक्ति मे कितना सुन्दर "चाक्षुप (दृश्य) बिम्ब" कवि ने प्रस्तुत किया है—

"जीत बाहर से फूलों पर चमकीली शबनम है।"[3]

रस-योजना

भारतीय आचार्यो ने रस को काव्य की आत्मा स्वीकार किया है। अत रस का काव्य मे अत्यन्त महत्व है, क्योकि कविता का सम्बन्ध मुख्य रूप से हृदय से माना जाता है। इसलिये उसमे भावो की (नयी) भीनी गन्ध स्वत ही आ जाती है। यो आधुनिक (नयी) कविता विचार प्रधान है, किन्तु उसमे भी रस का अभाव नही।

नाहर के काव्य मे विविध रसो का समायोजन मिलता है। उदाहरण के लिये ऐसे कुछ स्थल इस प्रकार रेखाकित किये जा सकते हे—

१—शृंगार रस

"कब तलक हमसे मेरी जिन्दगी शरमाओगी।
आज या कल मेरी बाँहो मे समा जाओगी॥

१ 'प्राणो से प्यारे राजस्थान" (कविता), राजस्थान सर्राफा सघ—स्मारिका पृ० ८३
२ "दहेज" (कविता)) प्रथम अक, दक्षिण राजस्थानी पोस्ट (मा०) जून, १९७२
३ "हार को स्वीकारे" (कविता) [illegible]

है। कुछ प्रमुख विद्वानो की परिभाषाएँ इस प्रकार देखी जा सकती हैं—आचार्य नगेन्द्र के अनुसार—"काव्य-बिम्ब शब्दार्थ के माध्यम से कल्पना द्वारा निर्मित एक ऐसी मानस छवि है, जिसके मूल मे भाव की प्रेरणा रहती है।[१]

प्रसिद्ध पाश्चात्य् समीक्षक सी० डी० ल्यूइस के अनुसार— "बिम्ब केन्द्रीय माध्यम द्वारा आध्यात्मिक अथवा बौद्धिक सत्यो तक पहुँचने का मार्ग है अथवा वह एक ऐसा शब्द-चित्र है जो भाव या सवेग से अनुप्राणित होता है"। इसी तरह राबिन स्कल्टन नामक पाश्चात्य विद्वान के अनुसार बिम्ब ऐसा शब्द है, जो ऐन्द्रियानुभूति का भाव जागृत करता है।"[२]

डॉ० गणपति चन्द्र गुप्त "कवि-मानस मे बाह्य प्रभाव से निर्मित प्रकृति रचना को बिम्ब मानते हैं। भारतीय विद्वान प्रो० अखोरी ब्रजनन्दन प्रसाद के शब्दो मे— "काव्यात्मक बिम्ब अदम्य भावना-सम्पृक्त ऐसे शब्द-चित्र है, जिनमे ऐन्द्रिक ऐश्वर्य निहित है, जिसके प्रभाव स्वरूप आनन्द की उत्पत्ति होती है।"[३]

उपर्युक्त परिभाषाओ को देखने पर काव्य-बिम्ब के जो तत्त्व उभर कर आते है वे इस प्रकार है–

१—बिम्ब कल्पना-स्रोत से प्रस्फुटित होते है,

२—इनमे भावात्मकता होती है,

३—ऐन्द्रिकता बिम्ब का प्रधान गुण है,

४—ये शब्द–निर्मित चित्र होते है

५—बिम्ब सूक्ष्म और अमूर्त भावनाओ को स्थूल एव मूर्त रूप मे प्रस्तुत करते है।

समग्र रूप से हम कह सकते है कि "बिम्ब सूक्ष्म और अमूर्त मनोभावो को स्थूल और मूर्त (दृश्य) रूप मे प्रस्तुत करने का, वह शब्द-निर्मित प्रभाव-शाली माध्यम है, जिसमे भाव-प्रवणता, ऐन्द्रिकता एव चित्रात्मक आकर्षण होता है।"[४]

१ डा० नगेन्द्र, काव्य बिम्ब, पृ० ५

2 An Image is a word which arounses ideas of sensory Perception —The Poetic Pattern page-90

३ प्रो०-अखोरी ब्रजनन्दन प्रसाद, काव्यात्मक बिम्ब, पृ०—५६

४ डा० हरिमोहन, "काव्य बिम्ब, स्वरूप एव निर्माण प्रक्रिया" (सप्तसिन्धु, अप्रैल, ७७), पृ०–५२

एक सफल बिम्ब के अभाव मे अच्छे से अच्छा काव्य भी अपना महत्व खो देता है। इसलिए प्रत्येक कवि अपने काव्य मे बिम्ब-योजना पर विशेष ध्यान देता है। श्री माणकचन्द नाहर ने अपने काव्य मे अनेक प्रकार के बिम्बो की सयोजना की है। ये बिम्ब बहुत ही प्रभावशाली और सफल बन पड़े है, कुछ उदाहरण देखे जा सकते है—

"सुबह हुई सिन्दूर लाली से
लाल विजय से रँगी शाम
युग बदले, न बदली तेरी शान
हर पत्थर पे अकित है बलिदान
मेरे प्राणो से प्यारे राजस्थान।"[1]

इस उद्धरण मे प्रथम दो पक्तियो मे "वर्ण बिम्ब" द्रष्टव्य है। इसी तरह निम्नाकित पक्तियो मे एक और बिम्ब देखा जा सकता है—

"फरनीचर पलग गद्दे बरतन मे क्यो कजूसी करो,
प्यारे दहेज के सेटो मे असली होती महक है।"[2]

इसी तरह एक पक्ति मे कितना सुन्दर "चाक्षुप (दृश्य) बिम्ब" कवि ने प्रस्तुत किया है—

"जीत बाहर से फूलों पर चमकीली शबनम है।"[3]

रस-योजना

भारतीय आचार्यो ने रस को काव्य की आत्मा स्वीकार किया है। अत रस का काव्य मे अत्यन्त महत्व है, क्योकि कविता का सम्बन्ध मुख्य रूप से हृदय से माना जाता है। इसलिये उसमे भावो की (नयी) भीनी गन्ध स्वत ही आ जाती है। यो आधुनिक (नयी) कविता विचार प्रधान है, किन्तु उसमे भी रस का अभाव नही।

नाहर के काव्य मे विविध रसो का समायोजन मिलता है। उदाहरण के लिये ऐसे कुछ स्थल इस प्रकार रेखाकित किये जा सकते है—

१—शृगार रस

"कब तलक हमसे मेरी जिन्दगी शरमाओगी।
आज या कल मेरी बाँहो मे समा जाओगी।।

१ 'प्राणो से प्यारे राजस्थान" (कविता), राजस्थान सर्राफा सघ—स्मारिका पृ० ८३
२ "दहेज" (कविता)) प्रथम अक, दक्षिण राजस्थानी पोस्ट (मा०) जून १९७२
३ "हार को स्वीकारे" (कविता), हलकारा (हिंदी पत्रिका) सादडी १-५-७९

बाद मुद्दत के मिली है ये हसीं रात प्रिये।
बाद मुद्दत के हुई तुमसे मुलाकात प्रिये ।।
जिन्दगीभर नही भूलोगी कभी आज की बात।
आओ बतलादूं तुम्हे जिन्दगी की राज़ की बात ।।
फिर कभी रात नही ऐसी हँसी पाओगे।[1]

२—हास्य रस

"मैं विश्व का मानव हूँ, महान्
इसान हूँ, मगर दुनियाँ पूजती है।
लाइफ से लेकर वाइफ तक मेरी नालेज हैं
और डिग्रियाँ बाँटने की जानता हूँ कई कालिज हैं।
अकादमी और विद्यापीठ मे घुसने का जो एक एवरेज है,
इसीलिए तो करते सब मेरे गुणगान
मै विश्व का मानव हूँ महान्।"[2]

३—वीररस

"लडते नही कभी जो लडना क्या आयेगा ?
बढते नही कभी जो बढना क्या आयेगा ?
चलते है जो डर-डर के जमी पे ही फिर उन्हे,
आकाश की ऊँचाई पे चढना क्या आयेगा ?[3]

४—वीभत्स रस

"कटा शीश, पर धड है लडा
शत्रु के छुडाके छक्के तमाम।[4]

अलकार-योजना

हिंदी काव्य साहित्य मे अलकारो का प्रयोग आदिकाल से चला आ रहा है। अलकारवादी आचार्यों ने काव्य मे अलकारो को अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान दिया है। किसी भी बात को अनूठे ढग से कहने के लिए अलकारो का आश्रय लिया जाता है।

१ तुम मिली बनकर अधेरे मे रोशनी मुझको (गीत) प्रेमगीत जनवरी, ६७/पृ०-६८
२ "मैं विश्व का मानव हूँ महान् (कविता), द० रा० पोस्ट (हिंदी मासिक) अप्रैल, ७३
३ प्राणा से प्यार राजस्थान (कविता), राजस्थान सर्राफा सघ स्मारिका, पृ० ८३
४ वही, पृष्ठ ८४

अलकार शब्द "अल" और "कृ" धातु से बना है। "अल" का अर्थ है आभूषण और 'कार' का अर्थ है 'करने वाला'। अलकार शब्द की व्युत्पत्ति विद्वानो ने इस प्रकार भी दी है–

"अलकरोति इति अलंकार ।"

अर्थात् विभूषित करने वाली वस्तु को अलकार कहा जाता है। जिस प्रकार आभूषण शरीर को अलकृत करते है, उसी प्रकार अलकार, शब्द और अर्थ को अलकृत करते है। अत काव्य मे अलकारो की स्थिति अनिवार्य है। परन्तु जहाँ अलकार आदि की स्पष्ट प्रतीति हो, वहाँ कभी-कभी अलकार रहित शब्द और अर्थ के होने पर काव्यत्व की हानि नही होती। अलकार काव्य मे उत्कर्षाधार होते ह। अलकार शब्द को विभिन्न विद्वानो ने परिभाषित किया है, जिनमे कुछ परिभाषाएँ इस प्रकार है–

१ "काव्य शोभाकरान् धर्मान् अलकारान् प्रचक्षेते ।"
(आचार्य दण्डी)

२ "न विभाति कान्तामपि निर्भूषणम् वनिता मुखम् ।
(भामह)

३ 'सौन्दर्यमलकार" (वामन)

श्री नाहर के काव्य मे विविध अलकारो का समायोजन मिलता है। उदाहरण के लिए ऐसे कुछ स्थल इस प्रकार रेखाकित किये जा सकते है–

१ छेकानुप्रास–एक से अधिक व्यजनो का एक बार सादृश्य छेकानुप्रास कहलाता है। माणकचन्द जी की काव्य पक्तियो मे इस अलकार का उदाहरण देखिये–

"कोरे कागज फस्ट आये,
दिल दिमाग उसका चकराये ।"[1]

२ मानवीकरण—जब जड अथवा अमानवीय पदार्थों पर चेतना का आरोप किया जाता है तब मानवीकरण अलकार होता है।

माणक जी की पक्तियाँ

"तुम मिली वनके अधेरे मे रोशनी मुझको।
तुम न मिलती तो मेरी आस-भटकती रहती।
सर मरुस्थल मे मेरी प्यास पटकती रहती है ॥ (गीत)

१ बेकार ग्रेजुएट, अग्रगामी, जयपुर दिसम्बर, ६७, पृ० ३२

३ विरोधाभास—जब परस्पर दो विरोधी बातो को एक ही स्थल पर साथ साथ दिया जाता है, तब विरोधाभास अलकार होता है। माणकचन्द जी की काव्य पक्तियो मे इस अलकार का प्रयोग देखिये—

> "हार फूल काँटो के पहरो मे खिलते है
> सफलता वही मिलती है, पाप जहाँ छिलते है।
> हार ही जीत देकर जाती है, क्यो इसे धिक्कारे,
> आओ सब मिल खुशी से हार को स्वीकारे।"[1]

छन्द विधान

छन्द भावो और विचारों की अनुशासन व्यवस्था है। आज के कवि प्राय इस पर ध्यान नही देते। यही कारण है कि वे मुक्त छन्द के नाम पर छन्द की दृष्टि से दोषयुक्त रचनाये करते है। इधर कुछ कवियो ने छन्दो की दृष्टि से नये प्रयोग किये हैं।

श्री माणकचन्द नाहर का काव्य छन्द-विधान की दृष्टि से बहुत सशक्त नही है। यदि हम छन्द विधान की दृष्टि से माणकचन्द नाहर के काव्य का वर्गीकरण करना चाहे, तो इस प्रकार कर सकते है।

(१) छन्दोबद्ध रचनाएँ—श्री नाहर का काव्य कुछ छन्दो का विधान मानकर भी चलता है, लेकिन ऐसी रचनाओ की सख्या कम है। उनके द्वारा उर्दू छन्दो का प्रयोग अधिक किया गया है। कुछ प्रयुक्त छन्दो को उनकी रचनाओ मे हम इस प्रकार देख सकते है—

> तुमको एजाँ प्यार करते है,
> जान अपनी निसार करते है।

१ हार को स्वीकार करे, हलकारा (हिंदी पाक्षिक), सादडी १ ५-७६

कर न पाये उम्र भर जिनसे,
उनसे आँखे चार करते है ।" (गज़ल)

(ब) मुक्तक

"हर रात सितारो की नही होती ।
हर बात इशारो की नही होती ।
खिलती है कली बाग मे, पर रोज
हर कली बहारो की नही होती ।।'[1]

(स) रुबाई

"हर मेघ मे जल नही होता,
जीवन आज, कल नही होता ।
कल्पना मिथ्या नही होता,
सपना सदा छल नही होता ।।'[2]

२ छन्द-मुक्त काव्य

श्री नाहर ने आज के युग के अनुकूल नयी कविता के ढग पर बहुत सी रचनाये लिखी है, लेकिन इन रचनाओ मे छन्द की ओर से सजगता देखने को नही मिलती । कुछ रचनाओ की पक्तियाँ द्रष्टव्य है—

मै विश्व का महान् कवि,
अफ्रीका से लेकर अमेरिका तक
आइलैण्ड से लेकर थाइलैण्ड तक फिरता हू
इसलिये नोबल पुरस्कार विजेता हूँ ।'[3]

लेकिन इस सबध मे ध्यान देने की बात है कि उनकी ऐसी रचनाएँ कही-कही तुकान्त हैं । ऐसी रचनाओ के अतिरिक्त श्री नाहर ने कुछ गीत भी लिखे है । उनका एक प्रणय गीत बहुत ही प्रभावपूर्ण है, जिसमे भाव और बिम्बो की ताज़गी रेखाकित की जा सकती है—

"तुम मिले तो ये रात मिल गई है, जिन्दगी मुझको
तुम मिली वनके अँधेरे मे रोशनी मुझको ।।

१ पाँच मुक्तक, सकलित पुस्तक, जबलपुर, पृ० २३
२ प्रतिनिधि रुबाईयाँ (गिरधर प्रकाशन), दिल्ली ६, पृ० ८५
३ मैं विश्व का महान कवि, द० रा० पोस्ट (हिंदी मासिक), अप्रैल, १९७३

तुम न मिलती तो मेरी आस भटकती रहती
सर मरुस्थल मे मेरी प्यास पटकती रहती ॥[1]

श्री माणकचन्द नाहर के काव्य का अध्ययन-विश्लेपण करने पर हम पाते है कि उनकी काव्य रचनाएँ देश-प्रेम, मानव-प्रेम, प्रणय-भावना, नीति और शिक्षा तथा राजनैतिक, सामाजिक व्यग्य को लेकर चली हैं। उनमे यथार्थ की पकड है और भावो तथा विचारो की कलात्मक अभिव्यक्ति। विषय-वस्तु की दृष्टि से निश्चित ही ये रचनाएँ सशक्त हैं और कवि की व्यापक दृष्टि की परिचायक है। कवि ने जीवन को निकट से देखा है और शब्दायित किया है। इस दृष्टि से उनकी व्यग्य रचनाएँ विशेष रूप से सफल वन पडी है।

शिल्प की दृष्टि से भी उनका काव्य सशक्त है। भापा, बिम्व, रस और अलकारो की दृष्टि से सफल है, किन्तु छन्द की दृष्टि से इतना सशक्त नहीं है। सब कुछ मिलाकर उनकी रचनाएँ यह सिद्ध करती है कि श्री माणकचन्द नाहर मे काव्य-प्रतिभा है और उनके काव्य मे अनेक सम्भावनाएँ सन्निहित है। उनका काव्य जीवन-मूल्यो की पुनर्व्याख्या है, जो अपने युग का दीपक जलाने के लिए ही लिखा गया है।

१. तुम मिला बनके अंधरे मे रोशनी मुझको, प्रेमगीत जनवरी, ६७

अध्याय ४

निबंधकार ब० माणकचंद नाहर

'निबन्ध' एक ऐसी विधा है जो अनेक गद्य-रूपो की धुरी है। निवन्ध ही एक ऐसी सक्षम गद्य-विधा है, जिसके माध्यम से व्यक्ति चयन की गई किमी वस्तु अथवा व्यक्ति के प्रति मानसिक प्रतिक्रियाओ की निर्वाध अभिव्यक्ति कर सकता है।

निवध का व्युत्पत्तिपरक अर्थ नि+वन्ध (वाधना)+घञ् (मग्रह)= रोकना है।[1] सस्कृत मे निवन्ध का समानार्थी किन्तु अधिक व्यापक शब्द प्रवन्ध है। जिसका मूल अर्थ प्र+बन्ध (वांधना=अच्) सन्दर्भ या रचनग्रन्थ है। आधार (कला-विपय) पर कल्पना से ग्रन्थ-रचना करना भी प्रवन्ध कहा जाता था। दूसरे शब्दो मे, परम्परानुमोदन के साथ किमी विपय या कथा का गद्य या पद्य मे प्रस्तुतीकरण प्रबन्ध कहलाता था। धीरे-धीरे यह शब्द आख्यान या कथा के सम्यक् तारतम्य पर आधारित केवल काव्य के लिये प्रयुक्त होने लगा और प्रवन्ध काव्य के लिए रुढ हो गया[2]।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने बताया ह कि भारत मे प्राचीन काल मे भी निवन्ध होते थे—"प्राचीन सस्कृत साहित्य मे निवन्ध नाम का एक अलग साहित्य भाग है। इन निवन्धो मे धर्मशास्त्रीय सिद्धान्त की विवेचना हे। विवेचना का ढग यह है कि पहले पूर्वपक्ष मे ऐमे बहुत से प्रमाण उपस्थित किये जाते ह जो लेखक के अभीष्ट मिद्धान्त के प्रतिकूल पडते है। इस पूर्व वाली शकाओ का एक-एक करके उत्तर पक्ष मे जवाब दिया जाता है। सभी शकाओ

१ हिंदी साहित्य कोश, ज्ञान मडल वाराणसी, सस्करण स० २०१५, पृ‌ष्ठ, ४०७
२ वही, पृष्ठ ४०७

का समाधान हो जाने के बाद उत्तर-पक्ष के सिद्धान्त की पुष्टि मे कुछ प्रमाण उपस्थित किये जाते है। चूँकि इन ग्रन्थो मे प्रमाणो का निबन्धन होता है इसलिये इन्हे निवन्ध कहते हैं[1]।"

किन्तु यह प्राचीन रूप आधुनिक युग मे महत्वहीन है, क्योकि प्राचीनो के जैसे शास्त्रीय खण्डन-मण्डन की दृष्टि आज लुप्त हो चुकी है। आज बहुत-सी बातो का निबधन किया जाता है। "निबन्ध" शब्द तो भारतीय परम्परा से लिया गया है, पर वह पर्याय बन गया है 'ऐसे (Essay) का।

"ऐसे" शब्द फ्रेंच के "एसाइ" का पर्याय है, जो लैटिन के "एग्जीजियर" (निश्चिततापूर्वक परीक्षण करना) से निकला है। इन शब्दो का शाब्दिक अर्थ प्रयत्न, प्रयोग या परीक्षण होता है और प्रयोग की दृष्टि से जो लघु अथवा समर्याद दीर्घ कलेवर की उस अनवस्थित गद्य रचना के लिये प्रयुक्त होता है, जिसमे निबधकार आत्मीयता या अनात्मीयता, वैयक्तिता या निर्वैयक्तिता के साथ किसी एक विषय या उसके किन्ही अशो या प्रसगो पर अपनी निजी भाषा शैली मे भाव या विचार प्रकट करता है।

जिस निबध (या ऐसे) शब्द का उल्लेख ऊपर किया गया है उसके आरम्भ-कर्ता "मान्तेन" माने जाते है, जो फ्रान्सीसी विद्वान् थे। उनके निबन्धो के आधार पर ही डॉ० सैमुअल जॉनसन ने निबन्ध की यह परिभाषा दी—

"An essay is a loose sally of mind, an irregular ill digested piece"[2]

अर्थात् निबन्ध मानस की उन्मुक्त उत्सर्जना है, अनियन्त्रित और कुव्य-वस्थित रचना।

मान्तेन के निबन्ध-सग्रह सन् १५८० मे दो खण्डो मे प्रकाशित हुए थे, उसी दौरान सन् १५९७ मे इग्लैण्ड मे फ्रेसिस वेकन नामक विद्वान् का निबध-सग्रह प्रकाशित हुआ।

इस सग्रह के समपर्ण मे वेकन ने लिखा था—एक पूरे ग्रन्थ की रचना मे लेखक को भी समय चाहिए और पाठक के पास भी पढने के लिये समय होना चाहिये। इसी कारण मैंने ये छोटी-छोटी टिप्पणियाँ लिखीं, जिनमे सार्थकता है कौतूहल की अपेक्षा, और इन्हे ही मैने "ऐसेज" (निबन्ध) नाम दिया है।

स्पष्ट है कि वेकन मान्तेन से भिन्न शैली और भिन्न प्रकार की कृति को

१ द्विवेदी हजारी प्रसाद, साहित्य का साथी, पृ० १५०
२ डा० सेमुअल जानसन, कचनमणि (डा० सत्येन्द्र), पृष्ठ ६४ पर उद्धृत

भिन्न आवश्यकता से 'निबन्ध' का नाम दे रहा था। उसने अपने निबन्धो को टिप्पणियाँ बताया है। अभिप्राय यह है कि उसके निबन्ध सूत्र रूप मे है। थोडे शब्दो मे बहुत भाव या विचार भरने के प्रयत्न उसने किये थे। उसके निबन्धो मे उक्तिपूर्ण बौद्धिकता वाग्वैदग्ध्य (Wit) या बौद्धिक व्युत्पन्नता है।

बेकन की इन रचनाओ को भी निबन्ध का नाम दिया गया। इस प्रकार इस सत्रहवी शताब्दी के आरम्भ मे ही निबन्ध की दो शैलियाँ हो गयी थी—

१ मनमौजी प्रवाह मे लिखी गयी रोचकता वाली शैली (मान्तेन वाली शैली) और,

२ गम्भीर सूत्रात्मकता युक्त व्युत्पन्न बुद्धि की कृति (बेकन वाली शैली)

निबन्ध की ये दो शैलियाँ तब से आज तक निरन्तर गतिशील है।

निबन्ध की परिभाषा देते समय ये शैलियाँ परिभाषा देने वाले विद्वानो को प्रभावित करती रही है। अत इन परिभाषाओ को इन शैलियो के आधार पर दो वर्गो मे रखा जा सकता है। प्रथम वर्ग के अन्तर्गत जिन प्रमुख विद्वानो की परिभाषाओ को रखा जा सकता है, वे इस प्रकार है—

अ—एडीसन—निबन्ध नाम की रचना मे जगल जैसा असौष्ठव होता है।

ब—निबन्ध के लिये विषय कोई भी लिया जा सकता है, जो महत्त्वपूर्ण ह वह हे व्यक्तित्व का चमत्कार।

स—Montaigne—"Essay must have an autographical element in itself, if it lacks that it is not an essary"[1]

द—Johnson—"A loose sally of mind, an irregular undigested piece, not a regular orderly performance"[2]

य—नन्द दुलारे बाजपेयी—"असम्पूर्णता का विचार न करने वाला गद्य रचना का वह प्रकार, जिसमे स्वानुभूति की प्रधानता हो, विषय-निरूपण मे स्वतन्त्रता हो, जिसमे लेखक का व्यक्तिपूर्ण रूप से प्रतिबिम्बित हो, जिसकी शैली मौलिक तथा साहित्य कोटि की हो, निबन्ध कहलाएगी?[3]

र—डॉ० जगन्नाथ प्रसाद शर्मा—तर्क और पूर्णता का अधिक विचार न रखने वाला गद्य रचना का वह प्रकार निबध कहलाता है जिसमे किसी

१ डा० गगा प्रसाद गुप्त हिंदी साहित्य मे निबध और निबधकार, पृष्ठ १० पर उद्धृत

२ डा० गगा प्रसाद गुप्त हिंदी साहित्य मे निबध और निबधकार पृष्ठ १०-११ पर उदधृत

३ नन्ददुलारे वाजपयी, निबन्ध निचय (प्राक्कथन), पृष्ठ २५

विषय अथवा विषयाश का लघु विस्तार मे स्वच्छन्दता एव आत्मीयतापूर्ण ढग से ऐसा कथन हो, कि उसमे लेखक का व्यक्तित्व झलक उठे ।[१]

ल—डॉ० लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय—"निवन्ध लेखक मत का प्रनिपादन नही करता, सिद्धात स्थिर नही करता । वह मनोनीत विषय को अपने व्यक्तित्व के रस मे पगाकर प्रकट करता है । वह विषय का अध्ययन कर नही लिखता, वह पाठक के साथ आत्मीयता रखता हे ।[२]

द्वितीय वर्ग मे रखी जाने वाली कुछ प्रमुख विद्वानो की परिभाषाएँ इस प्रकार है—

अ—डॉ० भगीरथ मिश्र—"प्राय वह गद्य-रचना जिसमे किसी विषय का शृ खलित विवेचन अथवा वैयक्तिक भाव या विचारधारा का क्रमबद्ध रोचक प्रकाशन प्रस्तुत किया जाता है निवन्ध कहलाती है ।[३]

ब—शिवदानसिह—निवन्धक गद्य का अत्यन्त शक्तिशाली रूप विधान है। कुशल निवन्धकार अपने रचना-लाघव से अत्यन्त सक्षेप मे वहुत वडी तत्व की वात सरल कलात्मक ढग से या सुवोध वैज्ञानिक पद्धति से पाठको तक प्रेषित करता है ।[४]

द—श्री जयनाथ नलिन— निबन्ध स्वाधीन चिन्तन और निश्छल अनुभूतियो का सरस, सजीव और मर्यादित गद्यात्मक प्रकाशन ह ।[५]

य—डॉ० गुलावराय—'निवन्ध उस गद्य रचना को कहते हे, जिसमे एक सीमित आकार के भीतर किसी विषय का वर्णन या प्रतिपादन का एक विशेष निजीपन, स्वच्छन्दता, सौष्ठव और सजीवता तथा आवश्यक सगति और सम्बद्धता के साथ किया गया हो ।[६]

र—आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी—"भावो या विचारो की प्रधानता तथा शैली की रमणीयता के योग से जिस नवीन साहित्य का प्रचलन हुआ उसे ही निवन्ध साहित्य की सज्ञा दी गई ।[७]

१ डा० जगन्नाथ प्रसाद शमा, आदश निव ध, पृष्ठ ६
२ डा० गगा प्रसाद गुप्त, हिन्दी साहित्य मे निबन्ध और निबन्धकार, पृ० ७ पर उद्धृत
३ डा० गगा प्रसाद गुप्त हिन्दी साहित्य मे निबन्ध और निबन्धकार, पृ० ५ से उद्धत ।
४ शिवदान सिंह चौहान, हिन्दी साहित्व के अस्सी वष, पृ० १६५
५ श्री जयनाथ नलिन, हिन्दी निबन्धकार, पृ० १०
६ डॉ गुलाबराय, काव्य के रूप, पृ० २३६
७ डा० गगा प्रसाद गुप्त, हिन्दी साहित्य मे निव ध और निबन्धकार, पृ० १०

ल – बेकन—"An essay consists of few pages of concentrated wisdon with little elaboration of the ideas expressed"[१]

व—Murray—"An essay is a composition of moderate length on any particular subject or branch of subject, a composition more or less elaborate in style, though limited in range"[2]

निबन्ध की विशेषतायें और तत्त्व

उपर्युक्त परिभाषाओ के विश्लेषण के आधार पर निवन्ध के प्रमुख तत्त्व इस प्रकार देखे जा सकते है—

१ व्यक्तिनिष्ठता,
२ लेखक पाठक का निकटत्व,
३ कथ्य एव कुछ और,
४ विचारात्मकता,
५ विनोदात्मकता (रोचकता)।

इन तत्त्वो के आधार पर हम कह सकते हैं कि निवन्ध के लिए अनिवार्य है—

(अ) कि वह कम समय मे पढी जा सके, इतनी छोटी गद्य-रचना हो (किन्तु समय की कोई अनिवार्य सीमा नही है),

(ब) कि उसमे विविध विषयो की शाखाओ, प्रशाखाओ से सबधित चर्चा चित्रात्मक शैली मे की गई हो,

(स) कि उसमे विचार-प्रवाह हो, अर्थात् कलापूर्ण ढग से आत्मनिर्भर रहकर एक ही भाव या विचार पर केन्द्रित रहा जाये,

(द) कि विषय के प्रतिपादन मे विचार हीनता भी न लगे, साथ ही कोरी बौद्धिकता ही न हो, अर्थात् भावो और विचारो का कलापूर्ण सामजस्य हो,

(य) कि निवन्ध लेखक का व्यक्तित्व विषय के प्रतिपादन मे स्पष्ट दिखाई दे।

१ वही, पृ० ११
२ वही, पृ० ११

निबन्ध के रूप

निबन्ध के स्वरूप पर विचार करते समय हमने देखा कि निबन्ध आरम्भ से ही दो रूपो मे विकसित हुए है। एक तो मान्तेन की शैली वाले, दूसरे बेकन की शैली वाले निबन्ध। मान्तेन की शैली वाले निबन्धो मे विनोदात्मकता अथवा मन की वहक या मौज खूब मिलती है। बेकन की शैली वाले निबन्धो मे गम्भीर तात्विक अनुभूति और विचारो का समावेश मिलता है। यदि हिंदी के निबन्धकारो के आधार पर कहे तो मा तेन की जगह प० प्रताप नारायण मिश्र का नाम और बेकन की जगह प० बालकृष्ण भट्ट का नाम लिख सकते है।

इस तरह इन दो प्रकारो की शैलियो के निबन्धो को स्थूलत क्रमश व्यक्तिनिष्ठ और वस्तुनिष्ठ निबन्ध कह सकते हैं।

हिन्दी साहित्यकोप मे निबन्धो को प्रधान रूप से तीन वर्गो मे रखा गया है।[1]

१ कथात्मक (आख्यानात्मक) (नैरेटिव),
२ वर्णनात्मक (डिस्क्रिप्टिव), और
३ चिन्तानात्मक (रिफ्लेक्टिव)।

यह वर्गीकरण प्रतिपादन पद्धति के आधार पर है, जिसके अन्दर इन वर्गो मे और भी कई प्रकार हो सकते है। डॉ० सत्येन्द्र ने विषय-निरुपण शैली की दृष्टि से ही निबन्धो का वर्गीकरण इस प्रकार प्रस्तुत किया है[2]—
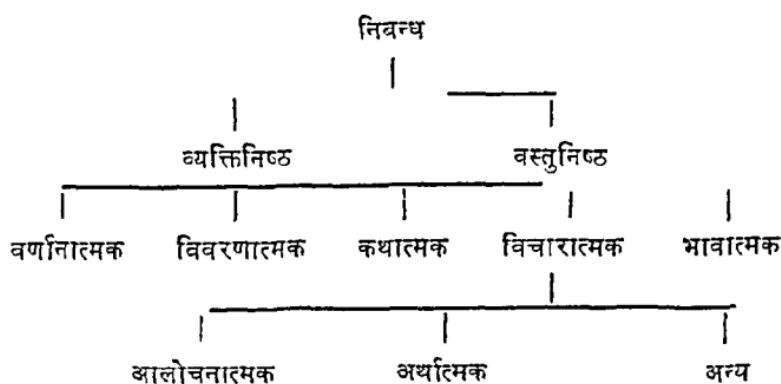
१ हिंदी साहित्यकोश (ज्ञानमडल वाराणसी), स० २०१५, पृ० ४०६
२ डा० सत्येन्द्र, काचनमणि, पृ० १२२।

विषय वस्तु के आधार पर भी निवन्धो को वर्गीकृत करने का प्रयास किया गया है और ऐतिहासिक, राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक आदि भेद किये हैं, किन्तु यह वर्गीकरण इतना वैज्ञानिक नही है, जितना विषय-निरुपण पद्धति के आधार पर किया गया वर्गीकरण ।

डॉ० हरिमोहन के अनुसार समन्वित दृष्टिकोण से काम ले तो निवन्धो को अग्राकित प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता हे ।[1]

कुछ विद्वान् कथात्मक और विवेचनात्मक दो और प्रकार निवन्धो के स्वीकार करते है, किन्तु हमारे विचार से कथात्मक निवन्ध विवरणात्मक मे और विवेचनात्मक भी विवरणात्मक मे ही समाहित किये जा सकते हैं ।

अव निवन्ध के इन प्रकारो का सक्षिप्त परिचय देख ले ।

१ विचारात्मक-निबन्ध

जिन निबन्धो मे विचार का प्रतिपादन या सिद्धान्त का निरूपण इस प्रकार किया जाता है कि "बुद्धि-तत्व" प्रधान रहता है, वे विचारात्मक निवन्ध कहलाते है । इनमे विचार का अधिकार अन्य तत्वो पर रहता हे । इस प्रकार के निवन्धो की यह शर्त है कि लेखक स्वानुभूत सत्य अथवा मौलिक विचारो को इस प्रकार प्रस्तुत करे कि वडे तर्क-पूर्ण ढग से वह पाठक के विचारो को आन्दोलित करने की क्षमता लिए हो । लेखक ऐसे निवन्धो मे एक नवीन वैचारिक दृष्टि, नवीन जीवन-दर्शन, नवीन सदेश देता है ।

भावात्मकता और कल्पना-प्रवणता की इस प्रकार के निवन्धो मे कमी रहती है । इस कारण ये प्राय शुष्क माने जाते है । किन्तु वौद्धिक चेतना

१ डा० हरिमोहन प्रतिनिधि हिन्दी निवन्धकार, पृ० १२२ ।

और वैचरिक आन्दोलन एक नवीन आनन्द प्रदान करता है।

इस प्रकार के निबन्ध सुगठित और नियन्त्रित होते है। आचार्य शुक्ल ने कहा है कि शुद्ध विचारात्मक निबन्धो का चरम उत्कर्ष वही कहा जा सकता है जहाँ एक एक पैराग्राफ मे विचार दवाकर कसे गए हो और एक एक वाक्य किसी विचार-खण्ड को लिये हो।

इस प्रकार विचारात्मक निबन्धो की विशेपताये है—

१ अन्य तत्वो की अपेक्षा बुद्धि का प्राधान्य,

२ भापा साकेतिक, श्लेपात्मक और सक्षिप्त,

३ प्रसाद शैली,

४ विचारो की सगठित, नियन्त्रित और सतुलित अभिव्यक्ति,

५ तकशीलता और प्रामाणिकता,

६ निर्भीक व्यक्तित्व की झलक।

इन निबन्धो मे विपय की अनेक रूपता मिलती है। राजनीति, सस्कृति, समाज, परम्परा, नैतिक आदश रसभाव या साहित्य के किसी भी क्षेत्र को लेकर ये निबन्ध लिखे जा सकते है।

हिन्दी मे आचार्य शुक्ल, डॉ० पीताम्बर दत्त वडथ्वाल, जैनेन्द्र, वासुदेव शरण और आचाय नन्द दुलारे वाजपेयी तथा डॉ० नगेन्द्र ऐसे प्रमुख नाम है, जिन्होने बहुत अच्छे विचारात्मक निबन्ध लिखे है। आचार्य शुक्ल की "चिन्तामणि" मे सगृहीत "लोभ और प्रीति", "क्रोध", "श्रद्धा और भक्ति", "घृणा, ईर्ष्या आदि, "जैनेन्द्र के विचार", "जड की वात", "पूर्वोदय" आदि सग्रह, वासुदेवशरण अग्रवाल के 'पृथ्वी पुत्र" तथा "कला और सस्कृति" आदि सग्रह, "डॉ० पीताम्वर दत्त वडथ्वाल के श्रेष्ठ निबन्ध" सग्रह मे सगृहीत कुछ निबन्ध तथा आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी और डॉ० नगेन्द्र के सैकडो निबन्ध हिंदी के विचारात्मक निबन्धो का सही परिचय पाने के लिये पठनीय है। आचाय विनय मोहन शर्मा ने भी अच्छे विचारात्मक निबन्ध लिखे है।

२ भावात्मक निबध

ऐसे निबन्ध जिनमे अन्य तत्वो की अपेक्षा हृदय का आग्रह प्रधान रहता है, अर्थात् भाव या रागात्मक तत्व का प्राधान्य होता है, भावात्मक निबन्ध की कोटि मे आते हैं। हृदय की स्वच्छन्द उडान, कल्पना का विस्तृत आकाश,

भावनाओ की तीव्रता, भावात्मक निवन्धो की पहचान है। अपने व्यक्तिगत अनुभव, आनन्द, विवाद, सुख-दु ख, अनुराग-विराग, को सहेजते हुये लेखक गहन अनुभूतियो तथा तीव्र भावो की निश्छल, अभिव्यक्ति भावनात्मक निबन्धो मे करता है।

आचार्य शुक्ल के निबन्ध, जयशकर प्रसाद, कृष्णदास, वियोगी हरि, प्रतापनारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, सरदार पूर्ण सिंह, माखनलाल चतुर्वेदी रामवृक्ष बेनीपुरी आदि के अनेक निबन्ध भावात्मक निबन्धो के अच्छे उदाहरण है।

३ आत्मपरक निबन्ध

वैयक्तिक या निजात्मक निबन्धो का यह तीसरा प्रकार है, जो उपर्युक्त दो (विचारात्मक, भावात्मक) निबन्धो के अन्तर्गत समाहित नही किया जा सकता। यद्यपि इसमे इन दोनो ही प्रकार के निबन्धो की विशेषतायें प्रमुख होती है। ये निबन्ध सस्मरण के अधिक निकट होते है। ये निबन्ध इतने स्वाधीन, वैयक्तिक, पृथक् और सशक्त है कि विचारात्मक निबन्धो की तरह विचारो मे डूबे हुये किन्तु आत्मा के तल मे जाकर बैठ जाने वाले तथा भावात्मक निबन्धो की तरह चचल किन्तु उन्मुक्त है। इनको इन दोनो प्रकारो से पृथक् करने मे बडी कठिनाई रहती है।

४—वर्णनात्मक निबन्ध

वर्णन की प्रधानता वाले निबन्ध वर्णनात्मक होते है। विचार, अनुभूति और कल्पना-तत्व ऐसे वर्णनो को प्राणवान, आकर्षक और रसपूर्ण बनाने मे अपने दायित्व का निर्वाह करते है। इस वर्णन से किसी भी घटना या व्यक्ति का ऐसा चित्र हमारे सामने उपस्थित हो जाता है कि मन मे रागात्मकता जाग्रत् हो जाती है।

सक्षेप मे किसी वस्तु, दृश्य, स्थान आदि का वर्णन इन निबन्धो मे कल्पना शक्ति के माध्यम से बडे सजीव और आकर्षक ढग से किया जाता है। इनमे विशेष रूप से प्राकृतिक वस्तुओ—नदी, पहाड, वृक्ष, जगल, लता, पुष्प, त्यौहार, रहन-सहन वेश-भूषा, सभा, सम्मेलन, मेले-तमाशे, यात्रा आदि का वर्णन रहता है। सरल, सर्वपरिचित, स्थूल और सामान्य वर्ण्य-विषयो मे प्राण-प्रतिष्ठा करना बडा कठिन कर्म है। सशक्त कला साधक ही इस कार्य को कर पाता है। अत वर्णनात्मक निबन्ध साधारण होते हुये भी कला-साधना की अपेक्षा रखते है।

हिंदी मे वर्णनात्मक निबध-लेखको मे बालकृष्ण भट्ट, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, माधव प्रसाद मिश्र आदि का नाम लिया जा सकता हे ।

५ विवरणात्मक निबन्ध

वे हैं जिनमे किसी वृतान्त या घटना का वर्णन रहता हे । कथा-प्रधान इन निबन्धो मे घटनाओ का सुसम्बद्ध विवेचन होता है । व्यक्तित्व की छाप और आत्मीयता इन निबन्धो मे अत्यावश्यक है । वणनात्मक और विवरणात्मक निबन्धो मे मोटा भेद यह है कि पहले मे स्थानगत वर्णन रहता है, दूसरे मे कालगत । दूसरे शब्दो मे यो समझिये कि वर्णनात्मक निबन्ध मे अधिकतर स्थिर क्रिया-हीन-पदार्थों का चित्र रहेगा, विवरणात्मक मे क्रियाशीलता का ।

क्रियात्मक ऐतिहासिकता मुक्त इन निबन्धो मे लेखक को वर्णनात्मक निबन्ध लेखक की अपेक्षा अधिक कठिनाई का सामना करना पडता है । कल्पना और अनुभूति के माध्यम मे लेखक क्रियाशील व्यक्तियो के अन्त बाह्य काय-व्यापारो को पकडने का प्रयत्न करता हे । इस प्रयत्न मे सफलता जितनी मिल सकती है, लेखक उतना ही अधिक कलात्मक विवरणात्मक निबन्ध लिख सकता है ।

शिकार, जीवनी, यात्राये पर्वतारोहण इत्यादि विषयक निबन्ध इसी कोटि मे आते हैं ।

हिन्दी मे विवरणात्मक निबन्ध लेखको मे बालकृष्ण भट्ट राधाकृष्ण गोस्वामी, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, वासुदेव शरण अग्रवाल राहुल साकृत्यायन, श्रीराम शर्मा आदि के नाम गिनाये जा सकते हे ।

ब० माणक चन्द नाहर का निबन्ध साहित्य

श्री नाहर का निबन्ध साहित्य कलापूण और उनके व्यक्ति की तरह विषय क्षेत्र की दृष्टि से अत्यन्त व्यापक और शैली की दृष्टि से वैविध्यपूर्ण है । उनके समस्त निबन्ध-साहित्य को विषय की दृष्टि से इस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है ।

विचारात्मक

इन निबन्धो मे ब० माणकचन्द नाहर का साहित्यिक और मामाजिक चिन्तन देखने को मिलता है। इन निवन्धो को विषय-वस्तु की दृष्टि से दो मुख्य वर्गों मे विभक्त किया जा सकता है।

अ—साहित्यिक समालोचना, शोध-साहित्य-समीक्षा विषयक-निबन्ध

इन निबन्धो की सामान्य सूची इस प्रकार है—

[१] १ भाषा-शैली की दृष्टि से गबन, २ स्कन्दगुप्त की नाटकीय स्त्रीपात्र, ३ चिंतामणि का उत्साह, ४ भारतरत्न इंदिरा गाधी का राष्ट्रीय सन्देश।

[२] १ हिंदी के सख्यावाची शब्दो का निकोणात्मक अध्ययन।

२ हिंदी और तमिल कहावतो का तुलनात्मक अध्ययन।

३ सास्कृतिक एकता की प्रतीक कहावते।

४ जैन और वैष्णव कवियो की समान्तर भक्ति-धारा।

५ हिन्दीसाहित्य के पच-परमेश्वर।

६ कवीर और चयनराय की वाणी का तुलनात्मक अध्ययन।

७ पशु-पक्षी एव जीव-जन्तु सवधी हिन्दी कहावतो और मुहावरो का क्रमानुसार अध्ययन।

८ कन्नड तथा कश्मीरी कहावतें, तुलानात्मक सर्वेक्षण।

९ हिन्दी और तमिल कहावतो का तुलनात्मक अध्ययन।

१० कश्मीरी तथा तमिल कहावते, तुलनात्मक सर्वेक्षण।

११ राजस्थानी भाषा मे रामायण।

१२ मलयालम और कन्नड के बाल साहित्य का सक्षिप्त इतिहास।

१३ "तमिल और तेलगू" बाल साहित्य एक अध्ययन।

भावात्मक निबन्ध

इन्हे हम ललित निबन्ध भी कह सकते है ये कही-कही आत्मपरकता को छूते हुए व्यग्य के निकट पहुँच जाते है। ऐसे निबन्धो की सामान्य सूची इस प्रकार देखी जा सकती है—

१ काफी, २ गाधीवाद की प्रायोगिकता ३ कर्ज लेना एक वरदान।

वर्णनात्मक और विवरणात्मक निबन्ध

ब० माणकचन्द जी नाहर के ऐतिहासिक, सॉस्कृतिक तथा धार्मिक विषयो पर लिखे गये निबन्ध वर्णनात्मक और विवरणात्मक निबधो की शैली मे आते है। इन निबन्धो की सख्या भी विचारात्मक निबधो की तरह ही व्यापक है। ऐसे निबधो की सामान्य सूची इस प्रकार है–

१ स्वतत्रता की नीव एकता, २ महावीर के उपदेश ३ भगवान महावीर का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, ४ नागूर आडवन, ५ राष्ट्रभाषा परीक्षा, ६ राष्ट्रीय अपराध निवारण के सदर्भ मे नीति, ७ कालिदास की नगरी उज्जैन, ८ महावीर सबधी साम्प्रदायिक मान्यताएँ, ९ बगलादेश के तीर्थस्थल, १० विदेशो मे दीपावली, ११ झीलो की नगरी उदयपुर, १२ विदेशी शासक जब जैन धर्म से प्रभावित हुए। १३ सस्कार परिवतन मे दिवाकर का अमूल्ययोग दान (किस्त न० ३, ४, ५, ६ अतिम)

ब० माणकचन्द नाहर के निबन्ध साहित्य का मूल्यांकन–

(अ) भाषा की विशेषताये–-भाषा निबन्ध शैली का आवश्यक तत्व है, इसलिये किसी भी निबन्धकार की निबध शैली का पूरा स्वरूप भाषा पर आधारित होता है। अब हम श्री माणकचन्द नाहर ने निबधो की भाषा का विश्लेषण करेगे। उनके निबधो की भाषा की सामान्य विशेषताए इस प्रकार देखी जा सकती है–

सरलता, सरसता और बोधगम्यता

श्री नाहर ने अपने निबधो मे विषयानुकूल अत्यन्त सरल, सरस और बोधगम्य भाषा का प्रयोग किया है। उनके निबधो मे भाषा की अस्पष्टता दुरूहता और जडता नही है। यही कारण है कि उनके निबध अत्यन्त सहजता के साथ बोधगम्य है। एक उद्धरण से यह बात अच्छी तरह समझी जा सकती है। इसमे उन्होने यथा सम्भव उदाहरणो का प्रयोग भी किया है– 'इस न्याय की भावना को लेकर वे हरिजन आन्दोलन मे प्रवृत्त हुए। "वैष्णव जन तो तेने कहिए जे पीड पराई जाणे रे" का आदश उनकी सेवाभावना को बल प्रदान करता है। भारतीय तप और त्याग की आत्मा उनके सिद्धान्तो मे मुखरित होती है।'[१]

१ गान्धीवाद की प्रायोगिकता, हिन्दी प्रचार समाचार, मद्रास, सि० १९६९, पृ० ४४

उर्दू, फारसी, अँग्रेजी के शब्दो का खुलकर प्रयोग

श्री माणकचद जी नाहर ने अपने निबधो मे उर्दू, फारसी और अग्रेजी के शब्दो का जमकर प्रयोग किया है, लेकिन उन्होने ऐसे शब्दो को प्रयुक्त नही किया जिन्हे आम पाठक समझ न पाये। इससे उनकी भाषा मे स्वाभाविकता, स्फूर्ति और प्रवाह आ जाता है। एक दो उद्धरणो मे इन भाषाओ के शब्दो का प्रयोग विशेष रूप से दृश्य है, देखे—

"गाधी जी का जीवन ही खुद उनका सदेश है, वही उनकी विरासत है। वे अपने समय मे ही विश्वबधु बन गये थे। वे सदा श्रेष्ठ विचारो का स्वागत करते थे। सफाई और वाद-विवाद द्वारा विषय के मूल तक पहुँच जाने पर बल देते थे, वे जिस चीज को लेते थे उसे पूर्ण रूप से हजम कर लेते थे।"[1]

इस उद्धरण मे उर्दू, अरबी फारसी के शब्दो का प्रयोग दृश्य है, अब एक उदाहरण और ले, जिसमे अग्रेजी शब्दो का प्रयोग देखा जा सकता है—

"यह न ब्राजील की काफी थी जो ऊँची-ऊँची घाटियो पर अधिक पानी लेकिन जडो मे नही उठहरे, यथेष्ट ताप पर पैदा हो। उसमे काफिन नामक जहर प्राकृतिक हो जो दिन प्रतिदिन जनता को आकर्षित कर रोगो का "वर्थ डे" दे। न यह हिन्दी का काफी शब्द था जो काफी मात्रा मे यत्र-तत्र-सवत्र प्रयुक्त हो।"[2]

उनके द्वारा प्रयुक्त ऐसी शब्दावली की सामान्य सूची इस प्रकार देखी जा सकती है—

अजीब, अगर, इन्सान, नजर, कानून, गरीब, जोर, दजा, कैदी, हिफाजत, कर्ज, हाजिर, अक्ल इत्यादि।

अँग्रेजी शब्दावली—फिल्म, ऑफिस, ऑफिसर, स्टेशन, जज, नेशन, बथडे, कॉफी, ऐजूकेशन, स्कूल, पौण्ड, ब्रिटेन, पोयेट इत्यादि।

अन्य भाषाओ के शब्द

अरबी, फारसी के अतिरिक्त श्री नाहर ने तामिल, तेलगू इत्यादि दक्षिण भारतीय भाषाओ के कुछ शब्दो का प्रयोग अपने निबन्धो मे किया है, उनका इन भाषाओ पर विशेषाधिकार भी है। इन्होने अनेक निबन्ध इन भाषाओ के साथ हिन्दी की तुलना करते हुए लिखे है। वे इन भाषा-भाषी प्रान्तो

१ गाधी जी की विरासत (निबन्ध) की समीक्षा, हिन्दी प्रचार समाचार, जुलाई, १९७२ पृ० ५।

२ काफी (अग्रगामी, जयपुर), जनवरी, १९६८।

मे रहकर साहित्य साधना कर रहे है, इसलिए भी इन भाषाओ के कुछ शब्द कही-कही उनके निबधो मे मिल जाते हैं। ऐसे शब्दो की एक सामान्य सूची इस प्रकार देख सकते है—लेजम, आँडवन, विग्रु, पयीर, तेरेयुमा, तेनिमरम, कल्तला, विट्टुविला, काँका, ताता इत्यादि।

मुहावरो का प्रयोग

श्री नाहर ने अपने निबधो की भाषा मे मुहावरो और कहावतो का प्रयोग करके अपनी भाषा को एक नई शक्ति और चुस्ती प्रदान की है। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य है—

१—"यदि यह "काफी" नही रहे तो उनकी "काफी" खिल्ली उड जाय फिर काफी उल्टी गगा बहाकर "फीका" कहलाये।[1]

२—उनकी आँखो मे धूल डालकर अपनी जेब गर्म कर लेते है।[2]

३—उसकी आँखे तब खुली जबकि राणा प्रताप यवनो से लडते लडते घायल हो गये।[3]

उपयुक्त मुहावरो और लोकोक्तियो का प्रयोग क्रमश इस प्रकार देखा जा सकता है—

१ खिल्ली उड जाय (खिल्ली उडाना),
२ आखो मे धूल डालकर (आखों मे धूल झोकना/डालना),
३ उल्टी गगा बहाकर, (उल्टी गगा बहाना),
४ जेब गर्म कर लेता है (जेब गर्म करना),
५ आखे तब खुली (आँखे खुलना)।

वाक्य-गठन

आपके निबधो के वाक्य व्याकरण सम्मत अत्यन्त गठे हुऐ होते हैं। यही कारण है कि आपकी भाषा मे स्पष्टता, स्वच्छता और प्रवाह उत्पन्न करने की अद्भुत शक्ति है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित पक्तियाँ द्रष्टव्य है—"स्कन्दगुप्त मे भारतीय एव पाश्चात्य शैलियो का समन्वय है। सम्पूर्ण कृति मे समष्टि-प्रभाव प्राप्त होता है। नाटक के आवश्यक सभी विषय इस रचना मे मिल जाते है। इस प्रकार पाश्चात्य एव भारतीय दोनो विचारो से

१ काफी, अग्रगामी, जयपुर जनवरी, १९६८, पृ० १५
२ वही।
३ स्वतत्रता की नव एकता, दक्षिण राजस्थानी पोस्ट, मद्रास, जून, १९७२, पृ० ८

स्कदगुप्त नाटक उत्तम है। सघर्ष और सक्रियता ही इस नाटक के प्राण है। इस सघर्ष को लेकर विचार करने से यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि नाटक के तृतीय अक की समाप्ति चरम सीमा के रूप मे हुई है। साथ-साथ चरित्र-चित्रण की ओर जो विशेष ध्यान दिया गया है, वह भी पाश्चात्य व्यक्ति वैचित्र्यवाद के ही अनुकूल है।"[1]

चित्रात्मकता

श्री नाहर की भाषा की एक और विशेषता है चित्रात्मकता। जब वे किसी विषय का वर्णन करते है तो विषय वस्तु का एक स्पष्ट चित्र हमारी आँखो के सामने खडा हो जाता है। इस तरह भाव-सम्प्रेषण की एक अद्भुत क्षमता उनकी भाषा मे विद्यमान है, देखिये ऐसा एक उदाहरण, "वह मदिर भी है, मस्जिद भी। वहाँ आपको "ओ नम शिवाय, नारायणाय नम ओम्" की मत्र-ध्वनि भी सुनाई देगी और "बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम ला इलाहा इल्लल्लाह" का पवित्र पाठ आपके कानो मे गूँजेगा।

यह विलक्षण मदिर-मस्जिद दक्षिण भारत के दक्षिणी ओर पर स्थित नागपट्टिणम् बन्दरगाह से छ मील दूर नागूर मे स्थित है और 'नागूर आडवन्" के नाम से प्रसिद्ध है।"[2]

नाटकीयता

अपने निबधो मे रोचकता, प्रामाणिकता और प्रभाव की दृष्टि के लिए आप किन्ही निबधो मे नाटकीयता की सृष्टि भी करते है। ऐसे स्थलो पर पात्रो के बीच सवाद बहुत ही सफल बन पडे है जैसे—"रिन्द सा, को ऐसे प्रभावशाली मुनि के दर्शनो की उत्कण्ठा हो आई। गुरुदेव उधर से ही शौचार्थ जाते थे, एक टैच साहब की दृष्टि पडी तो वे बँगले से बाहर निकले और शिष्टाचार के बाद गुरुदेव से कहा—"आपका ही नाम श्री चौथमल जी महाराज है?"

"हा"।

"साधु जी! मैं आपका आभारी हूँ। आपके सदुपदेश से मेरे नौकर ने अपनी तमाम बुरी आदते छोड दी है। अब वह शरीफ आदमी बन गया है।"

१ स्कन्द गुप्त मे नाटकीय स्त्रोपात, हिंदी प्रचार समाचार, पृ० ३२
२ नागरआडवन्। नवनीत, मई, १९७१, पृ० ७९

(यह बात श्री टैच ने अपनी टूटी-अंग्रेजी मिश्रित, हिंदी मे महाराज श्री को कही ।[1])

सूक्तियो का प्रयोग

आपके निबधो मे सूक्तियो का प्रयोग मिलता है । इन सूक्तियो के कारण आपकी भाषा मे अद्भुत प्रभावशीलता, चुस्ती देखने को मिलती है । ये सूक्तियाँ श्री नाहर के चिन्तन, मनन और स्पष्ट विचारो की द्योतक है, कुछ सूक्तियाँ इस प्रकार देखी जा सकती है—

१ "कहावते भाषा के भूषण है"[2]

२—"कोरे धैर्य अथवा साहस को उत्साह नही कहा जा सकता है"[3]

३—"फलभावना-प्रधान उत्साह मे लोभ की भावना किसी न किसी रूप रूप मे आवश्यक रहती है ।"[4]

४—"विरासत वह चीज है, जो उत्तराधिकार के रूप मे पिता से पुत्र को प्राप्त हो सकती है ।"[5]

निबध शैली

श्री माणक चन्द नाहर जी के निबधो मे जहाँ विषय की विविधता है वही शैली मे भिन्नता मिलती है । उनके निबधो मे प्रमुख शैलियाँ इस प्रकार देखी जा सकती है—

१ प्रसाद शैली,

२ समास शैली,

३ व्यग्य शैली,

४ विवेचन शैली ।

इन सभी शैलियो का प्रयोग मिश्र जी ने बहुत ही प्रभावपूर्ण ढग से किया है । इस शैलियो का व्यावाहारिक प्रयोग नाहर जी के निबधो मे देखे—

१ सस्कार परिवतन मे जैन दिवार का अमूल्य योगदान । जगत वल्लभ पथिक, पाचवी, पृ० ३

२ हिन्दी ओर तमिल कहावतो का तुलनात्मक अध्ययन, (भाषा) सितम्बर, १९७०, पृ० ६८

३ चिन्तामणि का 'उत्साह', हिन्दी प्रचार समाचार, १९६६, पृ० ७९

४ भारतरत्न इदिरा गाधी का राष्ट्रीय सदेश, हिन्दी प्रचार समाचार, १९७२, पृ० ४९

५ वही, पृ० ४९

प्रसाद शैली

उनके अधिकाश निबध प्रसाद शैली युक्त है। इस शैली मे लिखे गये निबधो मे भाषा अत्यन्त सरल, वाक्य सरल और छोटे-छोटे और उद्धरणो का प्रयोग किया गया है। प्रसाद शैली मे लिखे गए एक निबधाश को देखे—

"गाँधी जी नही चाहते थे कि लोग उनका अधानुकरण कर लकीर के फकीर बने। वे तर्क-वितर्क को प्रोत्साहन देते थे। हमे यह गुण सीखना होगा। वे कभी लोभ मे नही पडते थे और किसी बात से नही डरते थे। हमे भी लोभ तथा डर के प्रभाव से दूर रहना होगा। वे व्यग्य भी करते थे और विनोद भी। हमे यह ग्रहण करना होगा। उनकी दृष्टि के अनुसार क्रूरता शक्ति का पर्याय नही है। वे लोगो के दिलो को तथा उनकी भाषा को जानते थे।"[1]

इस उदाहरण मे भाषा की सरलता सुबोधता और वाक्यो की सरल रचना हमारा ध्यान अपनी ओर आकर्षित करती है। शब्दो का विशिष्ट प्रयोग उसकी शैली की सबसे प्रधान विशेषता है। वर्णनात्मक निबधो मे प्राय प्रसाद शैली का प्रयोग किया गया है।

समास शैली

नाहर जी जिन निबधो मे सस्कृत की सी सामासिकता, रचना, गठन और सस्कृत की तत्सम शब्दावली का बाहुल्य है, वहाँ समास शैली का आदर्श पूर्ण रूप से हमारे सामने आता है। थोडे मे बहुत कहने की प्रवृत्ति इस शैली का प्रमुख आकर्षण है। इस शैली का प्रयोग नाहर जी के विचारात्मक निबधो मे देखने को मिलता है। समास शैली का एक उदाहरण ले—

"स्कदगुप्त की नारी विलास और यौवन की आकाक्षाओ से परिप्लावित होती हुई भी पुरुष को ऊँचा उठाने वाली है। विद्वता, वीरता, शासनकुशलता आदि मनुष्योचित गुणो से भली भाँति परिचित होती हुई भी वह इन गुणो के द्वारा किसी निश्चित ख्याति को प्राप्त नही करती। उनकी मुख्य विशेषता सेवा, त्याग, प्रोत्साहन क्षमा एव उदारता का दिव्य प्रकाश है।"[2]

यह शैली नाहर जी के निबधो मे यद्यपि बहुत कम प्रयुक्त हुई है, तथापि जहाँ भी इसका प्रयोग किया गया है, बहुत ही सफल बन पडा है।

१ वही।

२ स्कदगुप्त मे नाटकीय स्त्रीपात्र, हिन्दी प्रचार समाचार जुलाई, १९७२, पृ० ४६

व्यंग्य शैली

नाहर जी बडे विनोदी है। उनके निबंधो मे यत्र-तत्र-सर्वत्र व्यंग्यविनोद के प्रसग अपने पूरे प्रभाव के साथ प्रयुक्त हुए हैं। इससे उनके निबधो मे रोचकता वढ गयी है। उनके व्यंग्य बहुत ही मार्मिक है। एक उदाहरण देखे—

"आज भारत मे कानून पर अधिक जोर दिया जा रहा है, जिससे अपराधो को प्रोत्साहन मिलता है। कानून गरीबो के लिए है, अमीरो के लिए नही, क्योकि धनवान साधारणतया अपने धन के बल पर कानून से मुक्त हो जाते है। चोरी करना, धोखा देना और अपशब्द कहना आदि अपराध माने जाते है। धनवान इन अपराधो को करते हैं लेकिन वकीलो की चतुराई से यह अपराध न्यायालय मे प्रमाणित नही हो पाते है। वे अपने अपराधी मुवक्किलो को अदालत के पजे से बडी आसानी से छुडाते है। अत ऐसी विषम परिस्थितियाँ क्रमश लोकनीति समाजनीति-अर्थनीति तथा राजनीति का अनुशीलन अथवा विवेचन राष्ट्र के लिए प्रत्येक नागरिक हेतु अवश्य पठनीय है।"[1] 'काफी' नामक निबध तो इस शैली का सर्वोत्तम उदाहरण है।

विवेचन शैली

विचारात्मक निबधो मे नाहर जी का निबन्धाकार सबसे अधिक सबल रूप मे उदित हुआ। वे शुद्ध विचारवादी थे। जानते थे कि ज्ञान की स्वीकृति से ही मानव की आस्था और विश्वास स्थिर रह सकते है, इसलिए सर्वत्र वे तर्क, युक्ति और कार्यकारण के विश्लेषण से पाठक को सन्तुष्ट और आश्वस्त करते है। ऐसे निबन्धो मे विवेचनात्मक शैली प्रयुक्त हुई है। एक उदाहरण देना पर्याप्त होगा—

"जीवन मे अनुभव का महत्वपूर्ण स्थान है। ये अनुभव जब बहुत से लोगो द्वारा समर्पित हो जाते है तब कहावतो का रूप धारण कर लेते है। बिहारी सतई के बारे मे प्रसिद्ध है कि "देखन मे छोटे लगे घाव करे गम्भीर"।

यह उक्ति कानून के ऊपर भी लागू है। कहावते भाषा के भूषण है, ध्वनि कहावतो के कारण शोभित होती है। और ध्वनि को आचार्य आनदवर्धन ने काव्य मे प्रमुख स्थान दिया है। कहावतो का प्रभाव अनुपम, उनका आकर्षण अद्भुत एव उनका सौंदर्य असाधारण है।"

१ राष्ट्रीय अपराध निवारण के सदर्भ मे नीति, हिन्दी प्रचार समाचार नई दिल्ली, १६ जुलाई, १९७१ पृ० २३

प्रदेश और भाषाएँ भिन्न-भिन्न है, जाति और धम भिन्न-भिन्न है, फिर भी लोगो के भावो मे ऐक्य हे, इसी क फल-स्वरूप जो शाब्दिक उद्गार या कहावते हे—उनमे एकता पायी जाती है। यह आवश्यक नही कि सभी देशो की सभी समय की कहावते एक सी हो, अत देशकाल परिस्थिति की भिन्नता के कारण कुछ कहावतो मे थोडी सी भिन्नता हो जानी है। वास्तव मे भिन्नना मे जो एकता मिलती ह वह हमारी मस्कृति की अखण्डता की द्योतक हे। इस तरह की विवेचना देश की भावात्मक एकता या विश्वबन्धुत्व की स्थापना मे सहायक सावित होगी। देशभेद के आवरण के पीछे मानव स्वभाव एक ह। इसकी पूरी-पूरी जानकारी कहावतो के तुलनात्मक अध्ययन मे ही सभव है।"[1]

इम उद्धरण मे देखे तो ये वाक्य खण्ड लेखक की तकपूर्ण, युक्ति प्रधान विवेचनात्मक शैली के परिचायक है।

इस प्रकार श्री माणकचद जी नाहर के निबन्ध-माहित्य का अध्ययन करने पर पता चलता है कि उन्होने अपनी लेखनी कई विपयो पर चलाई है। साहित्यिक, समीक्षात्मक, आलोचनात्मक और शोधपरक निबन्ध के साथ ही उन्होने धार्मिक, ऐतिहासिक महत्व के लेख भी लिखे है। उनके लेखो मे राष्ट्रीय और सास्कृतिक चेतना के अतिरिक्त धार्मिक निष्ठा और तर्काश्रित बौद्धिकता मिलती है। उनके निबन्धो मे उनका प्रखर व्यक्तित्व विद्यमान है। साहित्य की कसौटी पर उनके निबन्ध अत्यन्त सफल सिद्ध हुए हे। सशक्त भाषा और विपयानुकूल शैली उनके सभी निबन्धो मे देखी जाती हे। अनेक शैलियो के व्यावहारिक प्रयोग उनके विविध विपयो के निबन्धो मे मिलते है। वास्तव मे उनका निबन्ध-साहित्य हिंदी-साहित्य जगत् मे एक नई कडी जोडने का प्रयास हे। इनके निबधो मे नई बौद्धिकता का विकास है। अहिंदी भाषी प्रदेश मे रहकर पूर्ण निष्ठा के साथ निबन्धकार के रूप मे हिंदी-साहित्य की जो सेवा श्री नाहर जी कर रहे है, वह स्तुत्य है।

१ कन्नड तथा कश्मीरी कहावतें तुलनात्मक सर्वेक्षण, राष्ट्र सेवक जून, १९७२, पृ० ३९

अध्याय ५

ब० माणकचंद नाहर का जीवनी-साहित्य

श्री ब० माणकचन्द नाहर के सर्जनात्मक साहित्य का एक बडा हिस्सा जीवनी-साहित्य भी हे। हिंदी साहित्य मे अन्य विधाओ की अपेक्षा इस विधा की सर्जना कम हुई है ' इस दृष्टि से श्री नाहर का योगदान अमूल्य माना जा सकता है, क्योकि इन्होने ऐतिहासिक, देश-सेवक, साहित्यकार, वैज्ञानिक इत्यादि अनेक अकाल पुरुषो की जीवनियां हिंदी-साहित्य को प्रदान की है। जीवनी साहित्य की प्राय सभी तात्विक विशेषताएँ उनकी इन रचनाओ मे विद्यमान हैं। उनके जीवनी-साहित्य के विश्लेषण और मूल्याकन मे पूर्व जीवनी-साहित्य का स्वरूप और उसकी तात्विक विशेषताएँ समझ लेना उचित रहेगा।

जीवनी : पारिभाषिक स्वरूप और विशेषताएँ

जीवनी एक नव-विकसित गद्य-विधा है, जिसे ललित गद्य के अन्तर्गत समाविष्ट किया जा सकता है। इम गद्य-विधा को जीवनचरित या ''चरित्र'' भी कहा जासकता है। जव कोई लेखक किसी अन्य व्यक्ति के जीवन का क्रम-बद्ध परिचय प्रस्तुत करता है, तव इस गद्य-विधा की सृष्टि होती है। जीवनी-लेखक के लिये अन्त वर्तिनी एकता के अभाव मे डा० हरदयाल ने अकुशता ही हाथ लगने का उल्लेख किया हे—

''जीवनी मे किमी व्यक्ति विशेप की जीवन की स्थूल, बाह्य घटनाओ और सूक्ष्म अन्तर्भूमियो—दोनो का वर्णन—विश्लेपण हो सकता है। साहित्यिक विधा के रूप मे जीवनी-लेखक का अपना एक दृष्टिकोण होना चाहिए, जिमसे कि चरित्र-नायक के जीवन की विखरी हुई घटनाओ को एकसूत्रता प्रदान की

जा सके। यदि घटनाओं की अन्तर्वर्तिनी एकता को खोज सकने वाली दृष्टि का जीवनी-लेखन में अभाव है तो किसी जीवनी का चाहे चरित-नायक कितना ही रोचक एवं महान् व्यक्तित्व सम्पन्न व्यक्ति क्यों न हो—स्थायी महत्व की कलात्मक रचना नहीं बन सकती है।"[१]

इस प्रकार जीवनी लिखने के लिए चरित-नायक के जीवन की घटनाओं में व्याप्त एकता के सूत्र की खोज एक आवश्यक तत्त्व के रूप में मानी जा सकती है।

जीवनी एक ओर इतिहास से पृथक् वस्तु है तो दूसरी ओर काल्पनिक कथा से कोसों दूर विधा। इस रूप में जीवनी में न तो कोरा तथ्य-निरूपण होना चाहिए और न कोरी कल्पना। इसका तात्पर्य यह है कि कल्पना की शरण में बिना जाए केवल सत्य घटनाओं पर आधारित ऐसा वर्णन इस विधा के लिए अपेक्षित नहीं जो कोरा वर्णन हो, उसमें कलात्मकता, साहित्यिकता न हो।

जीवनी एक ओर संस्मरण नामक गद्य-विधा से इस रूप में पृथक् है कि जहाँ संस्मरण में लेखक की निज की प्रतिक्रियाएँ चित्रित की जाती हैं, वहाँ जीवनी में गहरी प्रामाणिकता एवं लेखक की तटस्थता रहती है। यों रेखाचित्र नामक विधा में लेखक की तटस्थता रहती है, परन्तु फिर भी उसमें आत्माभिव्यक्ति के लिए अवसर रहता है। जीवनी के लिए सामग्री-चयन करना इसीलिए अधिक कठिन होता है। डा० कमलेश ने इसीलिए जीवनी-लेखन को एक दुस्तर कार्य माना है। उनका कथन है—

"जीवनी लिखना श्रम-साध्य कार्य है और उसमें बहुत कुछ सतर्कता बरतनी पड़ती है। चरित-नायक के देवत्व अथवा राक्षसत्व का सन्तुलित रूप समक्ष रखकर ही यह कठिन कार्य सम्पन्न हो सकता है और उसी से पाठक जीवनोपयोगी तथ्यों का संकलन कर सकता है। अत्यधिक प्रशंसा अथवा अत्यधिक निन्दा से बचना जीवनी-लेखक के लिए नितान्त आवश्यक है।"[२]

जीवनी के विविध रूपों की ओर दृष्टिपात करें तो विद्वानों ने इसके दो मुख्य भेद माने हैं—एक, आत्मकथा और दूसरी—परकथा। इस आधार पर तो आत्मकथा भी जीवनी के अन्तर्गत आ जाएगी "किन्तु आत्मकथा को पृथक् विधा के रूप में स्वीकार किया जाता है। इसलिए हम इस विभाजन को

१ आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य, पृ० १६६

२ हिन्दी वाङमय, बीसवीं शती, पृ० ३७२

उपयुक्त नही मान सकते । जीवनी का विषयगत विभाजन भी किया जाता है । इसके अतगत आत्म चरित्र, सतचरित्र, ऐतिहासिक चरित्र, राजनैतिक चरित्र, विदेशी चरित्र और स्फुट चरित्र आदि भेद माने गये ह । किंतु यह विभाजन वैज्ञानिक एव स्पष्ट नही कहा जा सकता हे। जीवनियो के विविध प्रकारो का निर्धारण करने के क्षेत्र मे डा० गोविन्द त्रिगुणायत का प्रयत्न वैज्ञानिक कहा जा सकता हे । उन्होने जीवनियो के निम्न प्रकारो का उल्लेख किया है[1]—

१ मध्य काल की आदर्शात्मक जीवनियाँ (चौरासी वैष्णवन की वार्ता, गुसाई चरित आदि)
२ उपदेश प्रधान जीवनियाँ (हिंदी मे नेताओ की जीवनिया)
३ घनिष्ठ परिचितो एव सवधियो द्वारा लिखी गयी जीवन-कथाएँ
४ साधारणजन सवधी जीवनियाँ (जैनेन्द्र की "ये" ओर "वे")
५ अनुसधानात्मक या ऐतिहासिक जीवनियाँ
६ मनोवैज्ञानिक जीवनियाँ
७ कलात्मक जीवनियाँ (सौन्दर्यवाद से प्रभावित)
८ व्यग्यात्मक जीवनियाँ (काल्पनिक व्यक्ति का व्यग्यपूर्ण चित्र)
९ वालोपयोगी जीवनियाँ ।

इस प्रकार विषयगत एव साहित्यिक विशेषताओ पर आधारित जीवनियो के विभाजन का एक रूप देखकर हम कह सकते ह कि जीवनी के विविध रूप होते है या हो सकते हैं ।

जीवनी और अन्य सहवर्ती गद्य विधाये, तुलना

हिन्दी गद्य की आधुनिक विधाओ मे सस्मरण और रेखाचित्र जीवनी के बहुत निकट हे, अत इन तीनो मे वहुत कम अन्तर दिखाई देता है । फिर भी कुछ तत्व ऐसे है, जो इन तीनो विधाओ का आधार भूत अन्तर निर्दिष्ट करने के लिए पर्याप्त हैं । पहले इम अन्तर को ही समझ लेना समीचीन होगा ।

संस्मरण और जीवनी—

सस्मरण शब्द की व्युत्पति सम+स्मृ+ल्युट् (अण) से हुई हे जिसका अथ है—सम्यक् स्मरण । सम्यक् शब्द का अथ हे "पूर्णरूपेण" और पूण रूपेण का

१ गोविन्द त्रिगुणायत, शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त, भाग २, १९६८, दिल्ली पृ० ५०६-५०७

आशय है सहज आत्मीयता तथा गम्भीरता से किसी व्यक्ति, घटना, दृश्य वस्तु आदि का स्मरण।[1]

डॉ० शकरदेवरे अवतरे के शब्दो मे—

"सस्मरण भी आत्म-सस्मरण और पर-सस्मरण दोनो होते हैं, जो क्रमश आत्मकथा और जीवनी के उसी प्रकार सक्षिप्त रूप है जैसे—उपन्यास का कहानी, नाटक का एकाकी और महाकाव्य का खण्ड काव्य है।"[2]

डॉ० अवतरे ने सस्मरण नामक गद्य-विधा को स्पष्ट रूप मे स्थापित करने, उसकी सीमाओ को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है। अँग्रेजी मे इस विधा के लिए दो प्रकार के शब्द एव पृथक गद्य विधाएँ पायी जाती है। जब ये सस्मरण लेखक के स्वय के जीवन से सबधित होते है तब "रेमिनसेस" और जब किसी अन्य के जीवन से सबधित होते है तब "मैमॉयर" कहा जाता है, किन्तु हिंदी मे ऐसा पृथक-पृथक नामकरण नही हुआ। यहाँ तो लेखक के स्वजीवन या अन्य व्यक्तियो के जीवन से सबधित होने वाले इस गद्यरूप को सस्मरण ही कहा जाता है।

जैसा कि सकेत किया जा चुका है जीवनी मे दूसरे व्यक्तियो के जीवन के क्रमबद्ध सस्मरण इस रूप मे लिखे जाते है कि उनका तारतम्य बना रहे। इस अर्थ मे सस्मरण को जीवनी का लघु सस्करण कहा जा सकता है। जीवनाशो के बिखरे स्थलो का जब अधिक सजीव अनुभूतियो पर आधारित वर्णन हो तभी सस्मरण बन पाता है। इस प्रकार दोनो विधाओ मे पर्याप्त साम्य भी होता है, किन्तु साथ ही वैषम्य भी। डॉ० त्रिगुणायत इस साम्य-वैषम्य मूलक विचारणा को अत्यन्त सरल शब्दो मे निम्न प्रकार उपस्थित करते है—

"सस्मरण और जीवनी मे भी बडा साम्य है। दोनो ही अतीत जीवन को यथार्थ रूप मे चित्रित करने का प्रयास करते है किन्तु दोनो की चित्रण कला मे भेद होता है। सस्मरण लेखक साहित्यकार पहले होता है, इतिहासकार बाद मे। इसके विपरीत जीवनीकार इतिहासकार पहले है, और साहित्यकार बाद मे। एक मे कलाकार के व्यक्तित्व के भावमय चित्रो की प्रधानता होती है, दूसरे मे तटस्थ वर्णनो की। यही दोनो मे मौलिक अन्तर है।"[3]

१ डा० नगेन्द्र, हिंदी वाड्मय, बीसवी शती, पृ० ३४६

२ डा० शकरदेव अवतरे-हिंदी साहित्य मे काव्यरूपो के प्रयोग, पृ० २३५

३ डॉ० गोविन्द त्रिगुणायत शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त (भाग २), पृ० ४६७

रेखाचित्र और जीवनी

रेखाचित्र नामक विधा के पारिभाषिक निर्धारण का कार्य उतना कठिन नही, जितना उसके लक्षणो का दिग्दर्शन करके अन्य विधाओ से उसका पार्थक्य निर्धारण करना। रेखाचित्र की परिभाषा देने का प्रयत्न डॉ० गोविन्द त्रिगुणायत ने इस प्रकार किया है—

"रेखाचित्र वस्तु, व्यक्ति अथवा घटना का शब्दो द्वारा विनिर्मित वह मर्मस्पर्शी और भावमय विधान है, जिसमे कलाकार का सवेदनशील हृदय और उसकी सूक्ष्म पर्यवेक्षण दृष्टि अपना निर्जीपन उँडेलकर प्राण प्रतिष्ठा कर देती है। अधिक स्पष्ट शब्दो मे कहना चाहे तो कहेगे कि साहित्य की अन्य विधाओ के सदृश ही रेखाचित्र भी कलाकार की किसी व्यक्ति वस्तु या घटना के पूर्व सन्निकर्ष से उद्भुत क्रियाओ और प्रतिक्रियाओ की अभिव्यक्ति है, किन्तु उसकी शिल्प-विधि अपनी स्वतत्र है।"[1]

यहाँ यह स्पष्ट हो जाना चाहिये कि लेखक के व्यक्तिगत जीवन मे आए हुए व्यक्ति, सान्निध्य मे आयी वस्तु या देखी गयी-भोगी गयी घटना का यथार्थ रूप अकित करते हुए रेखाचित्रकार उसके प्रति पाठक की सवेदना उभारते हुए ऐसा भावचित्र निर्माण करता है कि उसमे एक ही वस्तु, व्यक्ति या घटना तक सीमित रह कर गहराई मे जाय और अपनी शैली की मार्मिकता के कारण पाठक पर अन्तर्व्यापी प्रभाव डाले।

दोनो विधाओ मे साम्य का दर्शन करते समय यही कहा जा सकता है कि दोनो मे किसी क्रमबद्ध मानव की कथा को चित्रित किया जाता है। यह बात अलग है कि एक मे किसी मनुष्य का सच्चा जीवन चित्रित किया जाता है, और दूसरे मे कल्पनाधृत जीवन भी चित्रित किया जा सकता है। इन दोनो विधाओ मे वैषम्य का दर्शन करते समय हमे अग्रलिखित बाते स्मरण हो आती है—

१ जीवनी मे कल्पना कम तथा बुद्धि और भावना अधिक रहती है, किंतु रेखाचित्रो मे तीनो का समान रूप से उपयोग किया जाता है।

२ जीवनी मे लेखक की दृष्टि सर्वांगीण चित्रण की ओर रहती है, जबकि रेखाचित्रकार की खण्डित जीवन की ओर।

१ डा० गोविन्द त्रिगुणायत—शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त (भाग-२) पृ० ४६०

३ जीवनीकार शब्दो का प्रयोग वर्णन के प्रवाह के लिए करता है, जबकि रेखाचित्रकार चित्र बनाने के लिए शब्दो का प्रयोग करता है।
४ जीवनी मे लेखक की निजी कल्पना और अनुभूतियाँ एव भावनाएँ उतना महत्त्व नही रखती जितनी रेखाचित्रकार की।
५ जीवनी मे लेखक की चयन-कला का महत्त्व होता है, जबकि रेखाचित्रों मे सूक्ष्म पर्यवेक्षण दृष्टि का महत्त्व अधिक होता है।

ब० माणकचन्द जी नाहर का जीवनी-साहित्य

श्री नाहर के जीवनी-साहित्य का विषय-क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। उन्होने ऐसे ऐतिहासिक पुरुषो को लिया है जिनका योगदान देश-सेवा, साहित्य, विज्ञान, सस्कृति, दर्शन आदि के क्षेत्र मे अविस्मरणीय है। ऐसे अनेक प्रसिद्ध व्यक्तियो के जीवन के विषय मे जानकारी देकर आपने इस विधा को समृद्ध किया है। उनका जीवनी-साहित्य, देश-प्रेम, विज्ञान-प्रेम, साहित्य, दर्शन और सस्कृति-प्रेम का प्रतीक है और उन्होने ऐसी अविस्मरणीय स्मृतियो को अपनी श्रद्धा के पुष्प अर्पित किये है।

उनके जीवनी-साहित्य को हम इस प्रकार वर्गीकृत कर सकते है—

देशभक्तो की जीवनी

१ देशभक्त राय केदारनाथ
२ राष्ट्र-सेविका कमला देवी नेहरू
३ महान् देशभक्त सत्यमूर्ति
४ देशभक्त डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी
५ महान् देशभक्त यतीन्द्रनाथ मुखर्जी।

साहित्यकारो की जीवनी

१ साहित्य नोबलपुरस्कार विजेता महिला नेली साश।
२ श्रीमती भिकाजी कामा
३ राष्ट्रीय एकता के सदर्भ मे महाकवि अकबर।
४ महाकवि कुमार आशान
५ भारत रत्न पांडुरग वामन काणे

वैज्ञानिको की जीवनी

१ पद्मभूपण डॉ० विक्रमसाराभाई

अन्य

१ अरविन्द और उनका दर्शन ।

२ ऐतिहासिक व्यक्तित्व स्व० साहू शान्तिप्रसाद जैन ।

३ स्थावरदास लीलाराम वास्त्राणी ।

देशभक्तो की जीवनियाँ

श्री नाहर ने लगभग छह देशभक्तो की जीवनी लिखी है । ये छह देशभक्त ऐसे है जिनके जीवन-परिचय के विपय मे अन्यत्र हमे जानकारी नही मिलती । इस तरह अप्राप्य जीवनी परक साहित्य-सामग्री का एकत्र रूप श्री नाहर द्वारा लिखित इन जीवनियो में मिलता है । कुछ जीवनियो का सामान्य परिचय इस प्रकार देखा जा सकता है —

१ देशभक्त राय केदारनाथ

इसमे श्री नाहर ने देशभक्त राय केदारनाथ के जीवन-परिचय का और उनके चरित्र का वहुत सारगर्भित परिचय दिया है । १७ जनवरी, १८५६ को दिल्ली मे जन्मे राय केदारनाथ की कुछ चारित्रिक विशेपताओ को इस प्रकार देखा जा सकता है—

(अ) पितृ प्रेम—

श्री नाहर ने इस लेख मे रायकेदारनाथ के पितृ-प्रेम की एक घटना इस प्रकार दी है–

"ये अपने पिता का वहुत आदर करते थे । विवाह के समय इन्होने घोडे पर चढने से इन्कार कर दिया । उन्होने साफ कह दिया कि मैं ऐसी प्रथा को नही मानना चाहता जिसमे पिता तो पैदल चले और पुत्र घोडे पर सवार हो । पिता के प्रति इनके मन मे अगाध श्रद्धा और स्नेह था । वर्षों तक ये सार्व-जनिक रूप से अपने पिता की पादुकाओ पर सिर झुकाकर दफ्तर जाते थे ।"

(ब) शिक्षा प्रेम–

श्री नाहर ने लिखा है कि राय केदारनाथ ने अपने पिता श्री रामजसलाल के नाम पर दिल्ली मे रामजस नामक अनेक शिक्षण सस्थाओ की स्थापना की । आगे वे लिखते है कि सन् १९११ मे अपनी इकलौती पुत्री के देहान्त के पश्चात् आप ने अपनी लाखो की सम्पत्ति रामजस शिक्षा सस्थाओ को दान कर

दी। दिल्ली के प्रसिद्ध आनन्द पर्वत को खरीद कर ऊपर रमणीक बगीचे और भवन स्थापित किये।

(स) मानव-प्रेम–

श्री नाहर लिखते हैं कि केवल विद्या-प्रचार से ही नहीं, मनुष्य की सेवा वे दूसरी तरह से भी करते रहे। जब झग जिले मे प्लेग फैला तो इन्होने बीमारो की सेवा मे दिन और रात एक कर दिया था।

अन्त मे इस लेख का समापन करते हुए वे लिखते हैं कि "आज के युग मे पिता का ऐसा भक्त, देश का ऐसा सेवक, बच्चो का ऐसा हित-चिन्तक दुर्लभ है। आपका समर्पण और त्याग आज के विद्यार्थीयो के लिए विशेष रूप से अनुकरणीय है। आपका परिश्रम, दूरदर्शिता, बाल-कल्याण हेतु जीवन का बलिदान प्रशसनीय एव सराहनीय है। आज दिल्ली के आनन्द पर्वत पर चहल-पहल, बच्चो का शोर गुल, अध्यापको के भाषणो ओर स्कूल लगने के समय टनटनाती हुई घटियो ने वातावरण को एक पवित्र, शुभ पुनीत विद्यालय बना दिया है। विद्या मन्त्रो से गुजायमान स्थल आपका कीर्तिस्तम्भ है, जो आज की पीढी का मार्ग दर्शक है।[१]

२ राष्ट्र-सेविका कमला देवी नेहरू

इसमे श्री माणकचन्द नाहर ने राष्ट्र सेविका कमला देवी नेहरू के जीवन-परिचय और उनके चरित्र का राष्ट्र-सेविका के रूप मे सारगर्भित परिचय दिया है।

आपका जन्म सन् १६०० मे कश्मीरी ब्राह्मण श्री जवाहरलाल कौल के के यहाँ हुआ था। आपके पिता ने आपके लालन-पालन और शिक्षा-दीक्षा पर विशेष ध्यान दिया। अपनी विलक्षण प्रतिभा से अल्पायु मे ही आपने हिन्दी मे विशेष निपुणता हासिल की। आपकी चारित्रिक विशेषताओ को इस प्रकार देखा जा सकता है–

(अ) पतिव्रता–

श्री नाहर ने लिखा है कि कमला देवी नेहरू एक आदर्श भारतीय नारी हैं। उनके पति-प्रेम पर एक स्थल पर श्री नाहर ने लिखा है—"पति के कैद होने से उनके जीवन को भी बहुत बडा धक्का लगा। स्वास्थ्य क्षीण होकर "राजयक्ष्मा–ग्रसित बना। स्विट्जरलैण्ड मे आपकी चिकित्सा हुई।"

१. दक्षिण राजस्थानी पोस्ट, मद्रास, जनवरी–फरवरी १६७४, पृ. २१

(आ) सहानुभूति और प्रेम–

"सोलह वर्ष की अवस्था मे पडित जवाहरलाल नेहरू के साथ विवाह हुआ। कमला देवी के प्रभाव के कारण श्री नेहरू ने भी स्वदेशी वेशभूषा को अपनाया। परिवार के सभी सदस्यो के साथ आपका व्यवहार अनुपम था। कर-वन्दी का आन्दोलन आरम्भ होते समय कमला जी की सहानुभूति और प्रेम के वशीभूत लोग उन्हे माता के समान पूजते थे।

कमला जी तपस्विनी थी। आप शहर के एक कोने से दूसरे कोने मे दौड-दौड कर वीसो को प्रोत्साहन और खाने का प्रवन्ध तक स्वय करती थी।"

(इ) राष्ट्र के प्रति अगाध स्नेह

श्री माणकचन्द नाहर ने कमला देवी नेहरू का राष्ट्र के प्रति अगाध स्नेह इस लेख के कुछ अशो मे व्यक्त किया— "श्रीमती कमला देवी नेहरू ने १९२०-२१ के असहयोग आन्दोलन मे भाग लिया। आपने विदेशी कपडो की होली जलाई। इस गौरवमय महिला के साहस के आगे वडे-वडे नेता भी हार मानते थे। इस अथक परिश्रम ने कमला जी को अन्दर ही अन्दर घुन की तरह खोखला वना दिया। अन्त मे २८ फरवरी १९३६ ई० को प्रात काल वह वीर पुत्री इस अमार ससार से चल पडी। देश ने आपकी असीम सेवाओ को स्थायी वनाने के लिये "कमला नेहरू फण्ड की स्थापना की।"

त्याग और तपस्या के इतिहास मे भारत की प्रत्येक महिला उनके गौरव-मय चरित्र से शिक्षा ले सकती है। आपका साहस अनुकरणीय एव अभि-नन्दनीय है।[1]

३ महान देशभक्त सत्यमूर्त्ति

महान् देशभक्त सत्यमूर्ति के जीवन-परिचय को श्री नाहर ने इस प्रकार प्रस्तुत किया है—

"सत्यमूर्ति का जन्म सन् १८८७ मे तमिलनाडू के विरूमयम नामक ग्राम मे हुआ था। इनके पिता श्री सुन्दरम् अरूयर धर्मनिष्ठ एव प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। सन् १९३५ मे वे भारत की केन्द्रीय विधानसभा के सदस्य चुने गये। इससे पूर्व सन १९३४ मे आप मद्रास के मेयर चुने गये। प्रभावशाली वक्ता, नि स्वार्थ कुशलविग्विेत्ता एव विधायक श्री सत्यमूर्ति राष्ट्रभाषा हिंदी के कट्टर

१ समता सदेश (पाक्षिक), बेंगलोर १७-५ ७६

समर्थक थे । कला, सगीत और नाटक प्रेमी होने के साथ ही माथ मानवीय गुणो के चमकते और उज्ज्वल नक्षत्र थे । मार्च १९४३, मे आपका देहान्त हुआ । आपकी स्मृति मे तत्कालीन राष्ट्रीय कांग्रेस ने अपने कार्यालय-भवन का नामकरण भी "सत्यमूर्ति-भवन" रखा ।"

"स्वतन्त्रता की लडाई मे हजारो लाखो देशभक्तो ने भाग लिया, उन्होने महान् त्याग किया । कईयो ने अपने प्राणो तक का होम कर दिया । ऐसे महापुरुषो मे श्री सत्यमूर्ति अग्रगण्य है ।

स्वतन्त्रता की रजत जयन्ती के इस पर्व पर सम्पूर्ण राष्ट्र की जनता आपको विनम्र श्रद्धाजलि अर्पित करती है ।"[1]

४ देशभक्त डॉ० श्यामाप्रसाद मुखर्जी

डॉ० श्यामाप्रसाद मुखर्जी का जन्म ६ जुलाई, सन् १९०१ को कलकत्ता मे हुआ था । आपकी मातेश्वरी श्रीमती योगमाया देवी धर्म-परायण महिला थी । पिताजी सर आशुतोष मुखर्जी तत्कालीन कलकत्ता हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश, समाज-सुधारक एव शिक्षा-शास्त्री थे । कलकत्ता विश्वविद्यालय के आप प्राण थे । १६ वर्ष की अवस्था मे श्यामा बाबू ने भवानीपुर मित्र इस्टीट्यूट से प्रथम श्रेणी में मैट्रिक उत्तीर्ण किया । १९२१ की बी० ए० परीक्षा मे आप सर्व प्रथम रहे । १९२२ मे सुधादेवी के साथ आपका विवाह हुआ । तत्पश्चात् १९२३ मे आप ने बँगला से एम० ए० एव अगले वर्ष बी० एल० उत्तीर्ण किया और दोनो परीक्षाओ मे विश्वविद्यालय मे सर्व-प्रथम रहे । दो वर्ष बाद आप इगलैण्ड गये और वकालत पास कर स्वदेश लौट आये और कलकत्ता हाईकोर्ट मे वकालत का कार्य प्रारम्भ कर दिया । आप अपने समय के माने हुये गणितज्ञ थे । पन्द्रह अगस्त १९४७ के स्वतन्त्र भारत के सर्व प्रथम मन्त्रिमण्डल मे आप वाणिज्य मत्री रहे ।

२६ अप्रैल, १९५३ को ससद मे आपने जम्मू काश्मीर समस्या पर श्री नेहरू से अपील की लेकिन आपकी अपील नही मानी गयी । अत ८ मई १९५३ को स्वय काश्मीर पधारे । आपका मार्ग मे पानीपत, नीलोखेडी, शाहाबाद, करनाल, अम्बाला, पगवाडा, जालधर और अमृतसर मे लाखो लोगो ने स्वागत किया । जम्बू की सीमा मे प्रवेश करते ही आप बन्दी बना लिये गये । श्रीनगर के निशाल बाग मे आपको रखा गया । वहाँ २३ जून, को

१ महान देशभक्त सत्यमूर्ति, राष्ट्र सेवक, अक्टूबर, १९७२ पृ ३९७

आपका देहान्त हुआ। इतनी अल्पायु मे ही आपने अनेक यशस्वी कार्य किए। अनवध प्रतिभा, दृढ साधना, सजग कर्मठता, अनवद्य सगठन शक्ति, प्रतिक्षण जागरूकता, वलकती हुई सहृदयता, अपार सुहृद परायणता आपका व्यक्तित्व था। विश्व के सम्पूर्ण हि दू एव वौद्ध धर्म मतावलम्वी राष्ट्र आपकी उल्लेखनीय सेवाओ के चिर ऋणी है।

आपकी कार्य कुशलता अवश्य ही अनुकरणीय एव अभिनन्दनीय है।[1]

५ महान् देशभक्त यतीन्द्रनाथ मुखर्जी

महान् देशभक्त यतीन्द्रनाथ मुखर्जी का जन्म १० दिमम्वर १८७६ को जैस्सौर के एक प्रतिष्ठित और सम्पन्न ब्राह्मण परिवार मे हुआ। उनके पिता श्री उमेश चन्द्र प्रकाड विद्वान एव माता श्रीमती शरतशशि देवी कवयित्री थी। किशोरावस्था मे आपने अपने स्थानीय स्थल "कृष्ण नगर" मे एक उन्मत्त घोडे को वशीभूत करके उससे भयभीत जनता को राहत पहुँचायी। उनके समकालीन उन्हे महान् मानने लगे। वे हर समय शात चित्त रहकर साहसिकता की ओर उन्मुख और आत्म-समर्पण के लिये कितने दृढ-प्रतिज्ञ थे।

विद्यार्थी जीवन मे स्वामी विवेकानन्द से उनकी भेट हुई और वे उनसे वहुत प्रभावित हुए। आप वगाल सचिवालय मे "स्टेनोग्राफर" नियुक्त हुए फिर भी वे अपने जीवन मे अपनी रुचि के अन्य महत्वपूण कार्यों के लिये समय निकाल लेते थे। उनके व्यक्तित्व मे इतना आकर्षण था कि युवक गीता और अन्य धार्मिक ग्रन्थो पर उनके व्याख्यान सुनने के लिये उन्हे घेरे रहते थे।

अप्रैल, १९०० मे यतीन्द्रनाथ मुखर्जी का विवाह इन्दु वाला देवी के साथ हुआ। आशीलता, तेजेन और वीरेन आपकी सताने है। १९१४ मे जब युद्ध छिड् गया तो यतीन्द्रनाथ देश की स्वाधीनता के लिये सशस्त्र विद्रोह की तैयारी मे समर्पित हुये। आप अलीपुर वम षडयन्त्र से भी सवधित रहे तथा हावडा षडयन्त्र कॉड मे भी आपने अपनी भूमिका निभायी। ९ सितम्वर १९१५ को बुरावलम नदी के किनारे क्रान्तिकारियो और पुलिस की मुठ-भेड मे आप शहीद हुए। भारतीय डाक-तार विभाग ने ९ सितम्वर १९७० को आपकी स्मृति मे डाक-टिकट जारी करके इस महान् सपूत को देश की कोटि कोटि जनता के साथ अपनी मौन श्रद्धांजलि अर्पित की।

१ राष्ट्र सेवक जुलाई, १९७३ पृ १५५

राष्ट्रीय प्रेम सदर्भ मे आपका जीवन आदर्श स्तम्भ है ।[1]

(ब) साहित्यकारो की जीवनियाँ

हिन्दी साहित्याकाश मे पुरुष साहित्यकारो के समक्ष अपनी अद्भुत प्रतिभा के साथ प्रकाशमान कुछ ऐसी देवियाँ है जिन्होने अपनी प्रतिभा और कृतियो द्वारा हिंदी साहित्य मे चार चाँद लगा दिये हैं जिनमे, कुछ नाम उल्लेखनीय है—

१ साहित्य नोबल पुरस्कार विजेता महिला नेली साख्श

विराट कवयित्री नेली साख्श का जन्म १० दिसम्बर (नोवल दिवस) १८६१ ई० को बर्लिन मे प्रसिद्ध उद्योगपति धार्मिक यहूदी परिवार मे हुआ था । सत्रह वर्ष की आयु मे आपकी पहली कविता प्रकाशित हुई । तत्पश्चात् छोटे-छोटे किस्से कहानियाँ भी लिखे । तीस वर्ष की आयु मे पहला कविता सग्रह "आख्यायिकाएँ" शीर्षक से प्रकाशित होकर सम्मानित एव लोकप्रिय हुआ ।

इस विराट कवयित्री का नाम विश्व के महान साहित्यकारो मे लिया जाने लगा था । आपकी निम्नलिखित रचनाएँ उल्लेखनीय हैं— हैविटेशन्स ऑफ डेथ, एक्लिप्स ऑफ द स्टार्स, नोबाडी नोज एनीथिग, नाइट वाज दि मैजिक डासर तथा अब्राहम इन साल्ट इत्यादि । इन रचनाओ को "मानव आत्मा का स्वच्छ दर्पण" कहा गया है । आपको "जर्मन बुक ट्रेड" का शाति पुरस्कार एव अन्तराष्ट्रीय पुरुस्कार भी मिले । १९६६ मे स्वीडिश एकाडेमी के विश्व के सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान "नोवल पुरस्कार" से सम्मानित होकर, चार वर्ष पश्चात् अमर बनी ।

विश्व भर मे अप्रत्याशित रूप मे हर कही स्वतन्त्रता का विस्तार हो गया है । नारी भी स्वतन्त्र रहना चाहती है और हर क्षेत्र मे पुरुष के बराबर होने की होड मे वह अपने आपको पिसती-पिसती महसूस करती है जैसे किसी शायर ने कहा था—"पुरानी रोशनी मे नई मे फर्क इतना है, इसे किश्ती नही मिलती इसे साहिल नही मिलता ।"

जी हाँ, आधुनिक नारी अपनी अत्यधिक आधुनिकता के भ्रम मे निरुउद्देश्य हो गई है । वह दिशा-भ्रष्ट दशा मे है । उसे जबरदस्त समझौता करना पडेगा । यहाँ, किन्तु परन्तु का प्रश्न नही है । समता के भ्रम मे उसे विषम

१ अप्रकाशित ।

नही बनना चाहिये । उसे समझना चाहिये कि पुरुष काया है और स्त्री उसकी छाया है । शायद इसी कारण जनकनुता को विदा करते हुये राज ऋषि ने कहा था—

"छायैव अनुगता सदा ।"[1]

२ श्रीमती भिकाजी कामा

भिकाजी कामा का जन्म २४ सितम्बर, १८५१ को बम्बई शहर मे हुआ था । आपके पिता श्री फ्राम जी सोखा जी पटेल वहाँ के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे । भिकाजी कामा ने एक पारसी स्कूल, मे शिक्षा पायी, तत्पश्चात् उनका विवाह एक तत्कालीन मशहूर वकील श्री के० आर० कामा के साथ हुआ ।

भारत की दु स्थिति और अग्रेजो की दमन-नीति को सारे ससार मे प्रकट करने के लिए श्रीमती भिकाजी कामा ने सन् १९०७ मे जर्मनी के अतराष्ट्रीय समाजवाद काग्रेस मे एक जोरदार भाषण दिया । भाषण के अन्त मे उन्होने एक तिरगा झण्डा फहराया जिसे उन्होने भारत का राष्ट्रीय झण्डा बतलाया । इसमे हरा, पीला और लाल रग थे तथा "वन्देमातरम्" शब्द लिखे थे ।

छोटी उम्र से ही भिकाजी कामा देश-सेवा और समाज-सेवा मे भाग लेने लगी । भारत पर विदेशियो का शासन उनको बहुत अखरता था । आप अक्सर कहती थी—"भारत स्वतत्र है, भारत भारतीयो का है, इस पर किसी विदेशी का कोई अधिकार नही हो सकता । इस सदर्भ मे आपने अमेरिका, यूरोप आदि देशो मे भ्रमण कर भारत के राजनैतिक जागरण तथा स्वाधीनता के लिये मदद मागी । उन्होने अपने भाषण मे कहा—"हम भारतीय शाति प्रिय है, हम किसी तरह की हिंसात्मक क्राति नही चाहते । मगर हम देश की आजादी चाहते है । भारतीयो से वह कहती थी—दोस्तो, आगे बढो, भारत माता के बच्चो को आजादी के रास्ते पर ले आओ । हम सब भारतीय भारत की उन्नति के लिए बराबर लडते रहेगे ।" इस सिलसिले मे ब्रिटिश सरकार ने आपको वही गिरफ्तार कर लिया । जेल मे आपका स्वास्थ्य बिगड गया । स्वास्थ्य-लाभ हेतु भारत आने के लिये कामा से ब्रिटिश सरकार लिखित माफी पत्र चाहती थी, लेकिन आपने नही दिया । सख्त बीमार होने पर कामा को भारत आने की अनुमति ब्रिटिश सरकार ने स्वयमेव दी ।

भारत लौटने पर ३० अगस्त १९३६ को आप बम्बई मे स्वर्ग सिधार कर राष्ट्रीय स्मारक बनी । इस तरह भारत की आजादी के लिए कुर्बानी करने

१। दक्षिण राजस्थानी पोस्ट, महिला विशेषाक, जून, १९७६

वालो मे श्रीमती भिकाजी कामा भी एक थी। देश-सेविका होने के साथ ही साथ शिक्षा, साहित्य और कला मे विशेष अभिरुचि रखती थी और इनसे संबधित राष्ट्रीय एव अन्तराष्ट्रीय सस्थाओ से श्रीमती कामा सबधित थी। भारत की स्वतन्त्रता की रजत जयती के इस पुनीत पर्व पर सम्पूर्ण जनता आपको श्रद्धाजलि अर्पित करती है।[1]

३ राष्ट्रीय एकता के संदर्भ मे महाकवि अकबर

श्री माणकचन्द नाहर ने महाकवि अकवर के जीवन-परिचय, साहित्यिक परिचय और देश-भक्ति पर सारगर्भित लेख प्रस्तुत किया है।

"सैयद अकवर हुसैन का जन्म नवम्बर, सन् १८४६ ई० मे कसवा वारा इलाहावाद मे हुआ था। बाल्यावस्था से ही आपको कविता लिखने का शौक था। प्रयाग के एक उर्दू कवि और प्राध्यापक वहीद के निर्देशन मे आपकी प्रारम्भिक शिक्षा सम्पन्न हुई। वर्षों तक आपने कायम मुकाम सेशन जजी भी की और अपना काम इस योग्यता के साथ किया कि सरकार ने सन् १८९८ मे आपको "खान वहादुर" की पदवी दी।"

महाकवि अकवर की कुछ चारित्रिक विशेषाएँ इस प्रकार देखी जा सकती है—

(अ) देश भक्ति

अकवर के जीवन के अन्तिम दिनो मे असहयोग आन्दोलन भारत मे गूज रहा था। आपकी आत्मा मे पूर्ण देश भक्ति थी।

"मेरी तरफ से सारा जहाँ वदगुमाँ है अब।
आजादिये ख्याल वो मुझमे कहाँ है अब॥
रखती है फूँक-फूँक के बाते मेरी कदम।
तेगे-जवाँ नही है अमाये-जवाँ है अब॥"

मातृभूमि हिन्दुस्तान के प्रति आपका एक शेर—

'पैदा हुए है हिंद मे इस अहद मै जो आप।
खालिक शुक्र कीजिये आराम कीजिए॥
वेइन्तिहा मुफीद है यह मगरिबी उमूम।
तहसील इनको भी महेरो-गाम कीजिए॥

१ राष्ट्र सेवक अगस्त, १९७२ पृ०, २३०

(ब) असहयोग आन्दोलन–

श्री माणक चन्द नाहर ने लिखा कि यदि आप अँग्रेजी शासन के कर्मचारी नही होते तो गाधी जी असहयोग आन्दोलन मे अवश्य भाग लेते—

"मदखूलये गवर्नमेट अकबर अगर न होता ।
इसको भी आप पाते गाँधी की गोपियो मे ॥"

(स) हिन्दू-मुस्लिम एकता—

महाकवि अकबर की दृष्टि मे हिन्दू-मुस्लिम एक थे—

'चुगलियाँ इक दूसरे की वक्त पर जडते भी है ।
नागहाँ गुस जो आ जाता है लड पडते भी है ॥
हिदू और मुस्लिम है फिर भी एक और कहते है सच ।
है नजर आपस की हम मिलते भी है, लडते भी है ॥"

४ महाकवि कुमार आशान

महाकवि कुमार आशान का जन्म १२ अप्रैल, १८७३ मे केरल मे हुआ । आपने सस्कृत का उच्च अध्ययन बगाल मे किया । श्री रामकृष्ण परमहस, स्वामी विवेकानन्द जैसे महापुरुषो से प्रेरणा और बगाल की नवीन साहित्यिक प्रणालियो और समाजोद्धार के कार्यकलापो से भी प्रभावित हुए ।

व० माणकचन्द नाहर ने महाकवि कुमार आशान के जीवन के विभिन्न पक्षो को प्रकाशित किया है, जिनमे कुछ निम्न हैं—

१—साहित्यकार

आपकी बाल्यकालीन रचनाओ मे किशोर-प्रेम, प्रकृति निरीक्षक आदि का वर्णन मिलता है । केरल के प्रसिद्ध समाजोद्धारक महात्मा श्री नारायण गुरु स्वामी के निरन्तर सम्पर्क-प्रभाव से और निजी मानसिक प्रकृति के अनुरूप आपके कवित्व और व्यक्तित्व के निर्माणक तत्वों मे अध्यात्मवाद (विशुद्ध मानवतावाद) और दार्शनिकता की झलक मिलती है ।

कुमार आशान का प्रसिद्ध खण्डकाव्य "वीणपूवु" (झराफूल) १६०१ मे प्रकाशित हुआ । इस काव्य ने स्वच्छन्दतावादी कविता को मलयालम मे सुप्रतिष्ठित कर दिया । उनके दो प्रसिद्ध खण्डकाव्य (प्रेमाख्यानक) "नलिनी" और "लीला" अपनी तीव्र अनुभूति प्रवणता और कमनीय शिल्पविधान के कारण उल्लेखनीय हैं । इसमे कवि की लेखनी प्रेम के अपार्थिव पक्ष को प्रतीतिगम्य बनाने मे सर्वथा सफल हुई है ।

२—समाज सुधारक एव पत्रकार

आशान ने समाज की सेवा का दृढ व्रत धारण करके एम० एन० डी० पी० योग के मन्त्री के रूप मे सामाजिक कार्य और "विवेकोदय" के सम्पादक की हैसियत से प्रशसनीय एव सराहनीय कार्य किया। आपने भगवान बुद्ध के स्नेह और अहिसा के सदेश को ग्रहण करके अनेक मनोहर काव्यो की रचनाएँ की।

३—अनुवाद

आपने एडविन अर्नाल्ड कृत "लाइट ऑफ एशिया" नामक प्रसिद्ध काव्य का मलयालम मे सुन्दर अनुवाद प्रस्तुत किया। "सौन्दर्य लहरी", "प्रबोध चन्द्रोदय", "बुद्ध चरितम्" आदि सस्कृत रचनाओ का अनुवाद भी आपने किया। बुद्ध चरित को पूर्ण करने के पहले ही "बोट दुर्घटना" से कवि भारतीय साहित्य के इतिहास मे अमर बने।

आपके काव्यो मे प्रेम, विरह, राजनीति और व्यक्ति धर्म, सामाजिक धर्म, धम, समाज सबधी विधि-निषेध सबका सहज मानव-भावो के परिप्रेक्ष्य मे पुन मूल्याकन किया गया है। आशान के काव्य विश्व की समृद्ध-भाषाओ मे मलयालम को भी गणनीय स्थान प्रदान कराने मे समथ है।[1]

वैज्ञानिकों की जीवनी

श्री नाहर ने देशभक्तो, साहित्यकारो के अलावा वैज्ञानिको की जीवनियाँ भी लिखी है, जिनमे से एक जीवनी का परिचय इस प्रकार है—

१ पद्मविभूषण डा० विक्रम साराभाई

विश्व विख्यात भारतीय वैज्ञानिक डॉ० विक्रम साराभाई का जन्म १२ अगस्त १९१९ को अहमदाबाद मे हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा पिता श्री अम्बालाल साराभाई और माता श्रीमती सरलादेवी की छत्र-छाया मे उन्ही द्वारा स्थापित विद्यालय मे हुई। गुजरात कालेज मे शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् आप कैम्ब्रिज विश्व विद्यालय के सेट जान्स कालेज मे विज्ञान के गहन अध्ययन हेतु प्रविष्ट हुए।

द्वितीय विश्व युद्ध के समय आप स्वदेश लौट आये और "ब्रह्माण्ड किरणो" के बारे मे आपने बेगलूर मे इण्डियन इन्स्टीट्यूट ऑफ साइस के अन्तर्गत अनुसधान किया। यहाँ नोबल पुरस्कार प्राप्त भारतीय वैज्ञानिक सर सी० पी०

१ दक्षिण राजस्थानी पोस्ट अप्रैल, १९७४, पृ० २१

रमण का सफन मार्ग दर्शन मिला। साथ ही साथ डॉ० होमी भाभा का भी सहयोग प्राप्त हुआ।

युद्ध के पश्चात् सन् १९४६ मे आप पुन विलायत गये। वहाँ कैम्ब्रिज शहर की "कैवेडिश प्रयोगशाला" मे उन्होने 'फोटोफिजियन" सबधी अनुसधान किया और इसके उपलक्ष्य मे आप सन् १९४७ मे इसी विश्व विद्यालय द्वारा डाक्टर की उपाधि से विभूपित हुए। इमी वप आपने जापान मे सम्पन्न "प्रोडक्टिविटी कॉंग्रेस" मे भारत का प्रितिनिधित्व किया।

शस्त्र नियन्त्रण और नि शस्त्रीकरण की समस्याओ मे डॉ० साराभाई ने वडी रुचि ली थी। अनेक अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक सस्थाओ मे उन्होने उच्च पदो पर काम किया। भारत के केन्द्रीय मत्रिमण्डल की वैज्ञानिक मलाहकार समिति के सदस्य के रूप मे उन्होने सन् १९६५ से १९६८ तक काम किया। सन् १९६८ से १९७१ तक वे विज्ञान और टेक्नोलोजी सबधी समिति के सदस्य रहे। मई सन् १९६६ से मृत्यु पर्यन्त भारतीय अणु आयोग के अध्यक्ष रहे। अपकी मृत्यु ३० दिसम्बर १९७१ को केरल मे हुई। मरणोपरान्त आप पद्मविभूपण से विभूपित हुये।[1]

अन्य महापुरुषो की जीवनी

१ महान् दार्शनिक अरविन्द

महान् दार्शनिक अरविन्द का जन्म १५ अगस्त, १८७२ ई० को बगाल मे हुआ था। आपके पिता डाक्टर कृष्णधन घोष (सिविल सजन) पश्चिमी सभ्यता मे रँगे हुए थे। माता श्रीमती स्वर्णलता देवी वास्तव मे सस्कारो की देवी थी। पॉच वर्ष की अवस्था मे आपने प्रारम्भिक शिक्षा हेतु दार्जिलिंग के एक स्कूल मे प्रवेश पाया। तत्पश्चात् सात वप की आयु मे आप माता-पिता के साथ इगलैण्ड गए। वहाँ सम्पन्न और सभ्य अग्रेज परिवार डूएट दम्पति के सरक्षण मे आपने अपनी कुशाग्र बुद्धि से लैटिन भाषा मे विशेप योग्यता प्राप्त की। अठारह वर्ष की अवस्था मे आप आई० सी० एस० की परीक्षा मे बैठे। इगलैण्ड मे ही अरविन्द की भेंट तत्कालीन बडोदा नरेश से हुई और उन्होने अरविन्द की प्रतिभा देखकर उन्हे सहर्ष अपना निजी सचिव नियुक्त किया।

वे दशन की पूर्वीय एव पाश्चात्य गगा-जमुना के पवित्र सगम, तन-मन-प्राण सभी को दैवी सत्ता के अवरोहण का माध्यम बना देने वाले एक योगी,

१ भक्तामर, १९७२, पृ० ४६

पृथ्वी पर ईसा के "स्वगराज्य" की कल्पना को मूर्तिमान बनाने का आयोजन करने वाले युग-प्रवतक नेता, और थोथी सस्कृति तथा कृत्रिम सभ्यता के भार से लडखडाती हुई मानव-जाति को अति-मानव के विज्ञानमय लोक की ओर जगाने वाले एक महान् पथ-प्रदशक थे।

इस प्रकार यह महान् दार्शनिक ५ दिसम्बर सन् १९५० को हमारे बीच से उठ गया। उनका दशन आधुनिक युग मे उल्लेखनीय एव वन्दनीय है। उनके आदर्श भारतीय दशन के कीर्ति -स्तम्भ है। उनका जीवन युवा-पीढी हेतु अनुकरणीय, प्रशसनीय एव सराहनीय है।[1]

ऐतिहासिक व्यक्तित्व स्व० साहू शान्तिप्रसाद जैन

सन १९११ मे उत्तर प्रदेश के नजीबाबाद शहर मे अग्रवाल जैन परिवार मे श्री दीवानचन्द जी एव मातेश्वरी मूर्तिदवी जी के यहा आपका जन्म हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा इस शहर मे समाप्त करने के पश्चात् आपने आगरा एव काशी विश्वविद्यालय से विज्ञान एव अन्य विषयो मे स्नातक उपाधि प्रथम श्रेणी मे प्राप्त की।

हिंदी, अँग्रेजी, गुजराती, मराठी भाषाओ मे दैनिक समाचार पत्रो का आपने श्रीगणेश किया। आल इण्डिया दिगम्बर भगवान महावीर २५०० वी निर्वाण महोत्सव सोसाइटी के अध्यक्ष तथा भगवान महावीर २५०० वी निर्वाण महोत्सव राष्ट्रीय समिति के कार्याध्यक्ष रहकर सम्पूर्ण देश मे भगवान महावीर परिनिर्वाण का जो व्यापक कायक्रम हुआ और जो उस कार्य मे चेतना जागृत हुई, वह श्री साहू जी की ही प्रेरणा, परिश्रम और लगन से सगठन होकर हुई।

आप द्वारा स्थापित भारतीय ज्ञान-पीठ, दिल्ली राष्ट्रीय स्तर की सस्था है, जो प्रतिवर्ष सर्वोच्च साहित्यिक कृति पर भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार एक लाख रुपये का प्रदान करती है। इसके अतिरिक्त साहू जैन चैरीटेबल सोसाइटी एव साहू जैन ट्रस्ट भी आपके ऐतिहासिक स्मारक है। प्रत्येक विधा एव क्षेत्र मे आपका अनुपम योगदान अनुकरणीय एव अभिनन्दनीय है।[2]

थावरदास लीलाराम वास्वाणी

श्री वास्वाणी का जन्म २५ नवम्बर, १८७९ को हैदराबाद (सिन्ध) मे

१ जिनवाणी जयपुर, मार्च, १९७२ पृ० १९७
२. वीर (मेरठ), पृ० १०२

हुआ । डी० जी० सिंध कालेज, करांची मे एम० ए० करने के पश्चात कलकत्ते के विद्यासागर (तत्कालीन मेट्रोपालिटन) कालेज मे प्रोफेसर नियुक्त हुये। बगभग आन्दोलन के सक्रिय कार्यकर्ता रहकर आपने देश–भक्ति का आदर्श रखा। आप क्रमश लाहौर के दयालसिंह कॉलेज, कूच विहार के विक्टोरिया कॉलेज और पटियाला के महेन्द्रा कालेज के प्रिंसपल पद पर एक शिक्षा शास्त्री के रूप मे लोकप्रिय एव प्रतिष्ठित हुये। इस अवधि मे आपने बर्लिन (जर्मनी) मे वेल्ट कॉंग्रेस (विश्वधर्म सम्मेलन) मे भारत के प्रतिनिधि के रूप मे प्रतिनिधित्व किया।

सन् १६१६ मे अपनी माता के निधन के पश्चात् आप अपने पद से त्याग-पत्र देकर राष्ट्र सेवा के व्यापक क्षेत्र मे प्रविष्ट हुये। बाल ब्रह्मचारी बनकर आपने प्रभु-भक्ति अगीकार की।

पूना मे धर्मार्थ औषधालय, सेंट मीरा कालेज, और पशु-पक्षियो के कल्याण के लिये स्थापित "जीवदया विभाग" आपकी अनोखी कीर्ति के आदर्श स्तम्भ है।

आपने अग्रेजी मे सैकडो पुस्तके तथा सिंधी मे ३०० से अधिक पुस्तके लिखी है। आपकी अनेक पुस्तको का जर्मनी भाषा मे तथा अन्य भारतीय भाषाओ मे अनुवाद हुआ। वे कवि, योगी मनीषी, कुशल तथा मधुर वक्ता एव इसके साथ गरीबो के सच्चे सेवक थे। १६ जनवरी, १६६६ को पूना मे आपका देहावसान हुआ। २५ नवम्बर १६६६ को आपकी स्मृति मे भारतीय डाक-तार विभाग ने "स्मारक डाक टिकट" जारी किया और इस महान शिक्षा शास्त्री, मानवतावादी, साधु वास्वाणी को श्रद्धाजलि अर्पित की थी, भारतीय जनता के लिये वास्वाणी का जीवन अनुकरणीय एव अभिनन्दनीय है।[1]

ब० माणकचन्द नाहर के जीवनी-साहित्य भाषा शैली

(अ) भाषा—उनके जीवनी साहित्य की भाषा अत्यन्त सरल और प्रभावपूर्ण है। उसमे अंग्रेजी और उर्दू के बहु प्रचलित शब्दों का स्वाभाविक प्रयोग देखने को मिलता है। संस्कृत के तत्सम शब्दों का प्रयोग होने पर भी उनकी भाषा मे बोझिलता, दुरूहता और कृत्रिमता नही है।

उनकी भाषा चरित्र-चित्रण के सर्वथा अनुकूल, वाक्य अत्यन्त गठे हुए और चित्रात्मकता की अद्भुत शक्ति से सम्पन्न है। उनकी भाषा की सभी विशेषताएँ एक जीवनी के इस अश मे देखी जा सकती है—

"छोटी उम्र से ही भिकाजी कामा देश-सेवा और समाज-सेवा मे भाग लेने लगी। भारत पर विदेशियो का शासन उनको बहुत अखरता था। आप अक्सर कहती थी—'भारत स्वतत्र है। भारत भारतीयो का है, इस पर किसी विदेशी का कोई अधिकार नही हो सकता।" इस सदर्भ मे आपने अमेरिका यूरोप आदि देशो मे भ्रमण कर भारत के राजनैतिक जागरण तथा स्वाधीनता के लिये मदद माँगी। उन्होने अपने भाषण मे कहा—"हम भारतीय शांतिप्रिय है, हम किसी तरह की हिंसात्मक क्रान्ति नही चाहते। मगर हम देश की आजादी चाहते हैं।" भारतीयो से वह कहती थी—दोस्तो ! आगे बढो, भारत माता के बच्चो को आजादी के रास्ते पर ले जाओ। हम सब भारतीय भारत

हुआ । डी० जी० सिंध कालेज, करांची मे एम० ए० करने के पश्चात कलकत्ते के विद्यासागर (तत्कालीन मेट्रोपालिटन) कालेज मे प्रोफेसर नियुक्त हुये । बगभग आन्दोलन के सक्रिय कार्यकर्ता रहकर आपने देश–भक्ति का आदर्श रखा । आप क्रमश लाहौर के दयालसिह कॉलेज, कूच विहार के विक्टोरिया कॉलेज और पटियाला के महेन्द्रा कालेज के प्रिंसपल पद पर एक शिक्षा शास्त्री के रूप मे लोकप्रिय एव प्रतिष्ठित हुये । इस अवधि मे आपने वर्लिन (जर्मनी) मे वेल्ट कॉंग्रेस (विश्वधर्म सम्मेलन) मे भारत के प्रतिनिधि के रूप मे प्रतिनिधित्व किया ।

सन् १६१६ मे अपनी माता के निधन के पश्चात् आप अपने पद से त्याग-पत्र देकर राष्ट्र सेवा के व्यापक क्षेत्र मे प्रविष्ट हुये । वाल-ब्रह्मचारी बनकर आपने प्रभु-भक्ति अगीकार की ।

पूना मे धर्मार्थ औपधालय, सेंट मीरा कालेज, और पशु-पक्षियो के कल्याण के लिये स्थापित "जीवदया विभाग" आपकी अनोखी कीर्ति के आदर्श स्तम्भ हैं ।

आपने अग्रेजी मे सैंकडो पुस्तके तथा सिंधी मे ३०० से अधिक पुस्तकें लिखी है । आपकी अनेक पुस्तको का जर्मनी भाषा मे तथा अन्य भारतीय भाषाओ मे अनुवाद हुआ । वे कवि, योगी मनीषी, कुशल तथा मधुर वक्ता एव इसके साथ गरीबो के सच्चे सेवक थे । १६ जनवरी, १६६६ को पूना मे आपका देहावसान हुआ । २५ नवम्बर १६६६ को आपकी स्मृति मे भारतीय डाक-तार विभाग ने "स्मारक डाक टिकट" जारी किया और इस महान शिक्षा शास्त्री, मानवतावादी, साधु वास्वाणी को श्रद्धाजलि अर्पित की थी, भारतीय जनता के लिये वास्वाणी का जीवन अनुकरणीय एव अभिनन्दनीय है ।[1]

ब० माणकचन्द नाहर के जीवनी-साहित्य भाषा शैली

श्री माणकचन्द नाहर का जीवनी साहित्य भाषा शैली की दृष्टि से अनुपम है । आपने इन जीवनियो मे सरल प्रवाहपूर्ण और आकर्षक शैली मे तथ्यपूर्ण वाते कही है । चरित्र-चित्रण की दृष्टि से सभी जीवनियाँ अत्यन्त सफल है । उन्होने जिस महापुरुष के जीवन को अपने लेखो के लिये चुना है, उस महापुरुष के चरित्र के सभी आवश्यक पहलू वडी कुशलता के साथ उभारे है । उनके जीवनी-साहित्य की भाषा और शैली की विशेषताएँ पृथक्-पृथक् इस प्रकार रेखाकित की जाती हे ।

१ अप्रकाशित ।

(अ) भाषा—उनके जीवनी साहित्य की भाषा अत्यन्त सरल और प्रभावपूर्ण है। उसमे अंग्रेजी और उर्दू के बहु प्रचलित शब्दो का स्वाभाविक प्रयोग देखने को मिलता है। सस्कृत के तत्सम शब्दो का प्रयोग होने पर भी उनकी भाषा मे बोझिलता, दुरूहता और कृत्रिमता नही है।

उनकी भाषा चरित्र-चित्रण के सर्वथा अनुकूल, वाक्य अत्यन्त गठे हुये और चित्रात्मकता की अद्‌भुत शक्ति से सम्पन्न है। उनकी भाषा की सभी विशेषताएँ एक जीवनी के इस अश मे देखी जा सकती है—

"छोटी उम्र से ही भिकाजी कामा देश-सेवा और समाज-सेवा मे भाग लेने लगी। भारत पर विदेशियो का शासन उनको बहुत अखरता था। आप अक्सर कहती थी—"भारत स्वतत्र है। भारत भारतीयो का है, इस पर किसी विदेशी का कोई अधिकार नही हो सकता।" इस सदर्भ मे आपने अमेरिका यूरोप आदि देशो मे भ्रमण कर भारत के राजनैतिक जागरण तथा स्वाधीनता के लिये मदद माँगी। उन्होने अपने भाषण मे कहा—"हम भारतीय शातिप्रिय है, हम किसी तरह की हिंसात्मक क्रान्ति नही चाहते। मगर हम देश की आज़ादी चाहते है।" भारतीयो से वह कहती थी—दोस्तो! आगे बढो, भारत माता के बच्चो को आजादी के रास्ते पर ले जाओ। हम सब भारतीय भारत की उन्नति के लिये बराबर लडते रहेगे। इस सिलसिले मे ब्रिटिश-सरकार ने आपको वही गिरफ्तार कर लिया। जेल मे आपका स्वास्थ्य बिगड गया। स्वास्थ्य-लाभ हेतु भारत आने के लिये कामा से ब्रिटिश सरकार लिखित माँफी पत्र चाहती थी, लेकिन आपने नही दिया। सख्त बीमार होने पर कामा को भारत आने की अनुमति ब्रिटिश सरकार ने स्वयमेव दी।"[१]

(ब) शैली

श्री नाहर के जीवनी-साहित्य की शैली विविधता पूर्ण है। इस विधा के अनुकूल वर्णनात्मक और विवरणात्मक शैलियो के साथ उन्होने प्रवाह शैली का भी प्रयोग किया है। उनके द्वारा लिखित जीवनियो मे दो-चार को छोडकर प्राय सभी मे इन तीनो शैलियो का समन्वित रूप देखने को मिलता है। इन तीनो ही शैलियो के कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं—

१—वर्णनात्मक शैली—"विराट कवयित्री नेली साख्श का जन्म १० दिसम्बर, (नोबल पुरस्कार दिवस) १८६१ ई० को बर्लिन मे प्रसिद्ध उद्योगपति

१ श्रीमती भिकाजी कामा, राष्ट्र सेवक, अगस्त, १९७२

धार्मिक यहूदी परिवार मे हुआ था। सत्तह वर्ष की आयु मे आपकी पहली कविता प्रकाशित हुई। तत्पश्चात् छोटे-छोटे किस्से कहानियाँ भी लिखे। तीस वर्ष की आयु मे पहला कविता-सग्रह "आख्यायिकाएँ" शीर्षक से प्रकाशित होकर सम्मानित एव लोकप्रिय हुआ।"[1]

२—विवरणात्मक शैली—"आप कागज, चीनी, वनस्पति, सीमेंट, एसबेस्टाज से निर्मित वस्तुएँ, भारी रसायन, कृषि-उपयोग मे आने वाला नाइट्रोजन खाद, पावर एलकोहल, प्लाईवुड, साईकिल, कोयले की खाने, लाइट, रेलवे इजीनियरिंग कारखाने आदि प्रारम्भ कर उद्योग जगत् मे प्रतिष्ठित हुए। आपकी विशिष्ट प्रतिभा तथा बहुत व्यापक अनुभवो के कारण आपको "राष्ट्रीय-समिति" मे औद्योगिक वर्ग का प्रतिनिधित्व करने हेतु मनोनीत किया गया। भारतीय औद्योगिक प्रतिनिधि के रूप मे आप सन् १९३६ मे डच, सन १९४५ मे आस्ट्रेलिया एव १९५४ मे सोवियत रूस पधारे।"[2]

३—प्रवाह शैली—"२३ जून, को आपका देहान्त हुआ। इतनी अल्पायु मे ही आपने अनेक यशस्वी काय किये। अनवध प्रतिभा, दृढ साधना, सजग कमठता, अनवध सगठन शक्ति, प्रतिक्षण जागरूकता, छलकती हुई सहृदयता, अपान सुहृद परायणता आपका व्यक्तित्व था। विश्व के सम्पूण हिंदू एव बौद्ध धम मतावलम्बी राष्ट्र आपकी उल्लेखनीय सेवाओ के चिरऋणी है।"[1]

उनकी शैली की एक और विशेषता है, वह यह कि उन्होने जीवनिया लिखते समय रोचक प्रसगो और उद्धरणो का अवसरानुकूल प्रयोग किया है। इन प्रसगो और उद्धरणो से जहाँ कथन मे रोचकता और प्रामाणिकता आई है, वही सम्बद्ध महापुरुषो का चरित्र भी पूरी तरह उभर कर आया है। यथा—

"किशोर अवस्था मे आपने अपने स्थानीय स्थल "कृष्णनगर" मे एक उन्मत्त घोडे को वशीभूत करके तत्कालीन उससे भयभीत जनता को राहत पहुँचायी, साथ ही साथ अपने मन और शरीर के अद्भुत विकास का परिचय दिया। युवावस्था मे आपने बगाल के एक शाही वाघ का अकेले ही सामना करके उसे मार डाला। तब से आप "बाघा" यतीन के नाम से लोकप्रिय हुए। उनके समकालीन उन्हे महामानव मानने लगे। यह साहसिक काय केवल उनकी पाशविक शारीरिक शक्ति और महान् मस्तिष्कीय जागरूकता का प्रदशन

१ साहित्य नोबल पुरस्कार विजेता महिला नैली साक्श, दक्षिण पोस्ट, पृ० ६३
२ एतिहासिक व्यक्तित्व स्व० साहू शांति प्रसाद जैन, वीर, मेरठ पृ० १०२
३ देशभक्त डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी, राष्ट्र सेवक, जुलाई, ७३, पृ० १५३

ही नहीं था, बल्कि यह इस बात की मिसाल थी कि वे हर समय कैसे शात चित्त रहकर साहसिकता की ओर उन्मुख और आत्म-समर्पण के लिये कितने दृढ़-प्रतिज्ञ थे।[1]

समग्रत श्री माणकचन्द नाहर का जीवनी-साहित्य उनके निबन्ध साहित्य और काव्य की तरह ही उत्कृष्ट है। इस विधा को समृद्ध करने के लिए उन्होने अनेक महापुरुषो की अनेक शिक्षाप्रद जीवनियाँ प्रस्तुत की है। राष्ट्र-सेवक, साहित्यकार, वैज्ञानिक, समाज सुधारक इत्यादि महापुरुषो की यह प्रेरणादायक जीवनियाँ भाषा और शिल्प की दृष्टि से भी अत्यन्त सफल और मूल्यवान है। जीवनी–साहित्य के क्षेत्र मे आपका यह योगदान सराहनीय है।

१ महान देशभक्त यतीन्द्रनाथ मुखर्जी (अप्रकाशित)

अध्याय ६

ब० माणकचन्द नाहर का बाल-साहित्य

वाल-साहित्य की कोई निश्चित परिभापा नही दी जा सकती है क्योंकि वालक अपनी रुचि के अनुसार ही अपने साहित्य का निर्णय करते हे। वालक जव जन्म लेता है तो वह सस्कार विहित और विश्व से अज्ञात रहता है। पचतत्र के लेखक के अनुसार—जिस तरह किसी नये पात्र के कोई सस्कार नही रहते, उसी प्रकार वच्चो की स्थिति होती है। इसलिए उन्हे कथा आदि के द्वारा ही नीति के सस्कार वताने चाहिए। जैन धम और वौद्ध धर्म मे भी वालक को अज्ञान तथा उसे ज्ञान का मार्ग वताने वाले साहित्य को वाल-साहित्य वताया गया है। प्राचीनकाल मे बाल-साहित्य से तात्पर्य वच्चो की शिक्षा, उपदेश, आदर्श और नीति के अनुरूप ढालने वाले उपदेश परक-साहित्य से रहा है। युग और समाज के परिवर्तन के साथ-साथ वालसाहित्य की परिभापा मे भी परिवतन होता गया। उसके मूल्य वदलते गये। वस्तुत वालसाहित्य का लक्ष्य वच्चो के मानसिक स्तर तक उतरकर उन्हे रोचक ढग से नई जानकारियाँ देना है। यदि वच्चे मे कल्याण-भावना और सौन्दर्य-परक दृष्टि जाग्रत करनी हो तो उसकी समस्त आकाक्षाओ और जिज्ञासाओ का स्कूली शिक्षा के साथ ही विकास करना आवश्यक है। शिशु-मन की चचल जिज्ञासाओ को नवीन अनुभवो और शिव सकल्पो से प्रेरित करने का मुख्य साघन वालसाहित्य ही है।

वालको का साहित्य भी वयस्को के शास्त्रीय नियमो से वँधा हुआ नही होता है। वडों के नियमो से वँधा हुआ नही होता है। वडो के नियमो से वँधा हुआ साहित्य वालक मनोवैज्ञानिक दृष्टि से नही अ[illegible] पाते।

बाल-साहित्य के नियम बालको की रुचियाँ और उनके बोध स्तर पर निर्भर करते है।

बाल-साहित्य बालक की मनोवैज्ञानिक आवश्यकता होती है। शैशव के बाद जैसे-जैसे बच्चे मे जिज्ञासा, कौतूहल और रुचि का विकास होता है, वैसे-वैसे बालसाहित्य के प्रति उसका आकर्षण बढता जाता है। बालसाहित्य से बालक अपनी ज्ञानपिपासा तथा जिज्ञासा सतुष्ट कर सकता है। डा० हरिकृष्ण देवसरे तो बालसाहित्य और स्कूली साहित्य मे अन्तर स्पष्ट करते हुये बाल-साहित्य को पूर्णत स्वतन्त्र मान लेते है—स्कूली साहित्य जहाँ बच्चो को एक-एक सीढी चढना सिखाता है, उनकी उँगली पकडकर आगे ले चलता है, वही बालसाहित्य ज्ञान के असीम भण्डार को बच्चो के सामने प्रस्तुत करता है। और बच्चे उसमे से अपने इच्छानुसार अपनी जिज्ञासाओ तथा ज्ञान की तुष्टि के लिए ग्रहण कर लेते है।[1]

अत बाल-साहित्य-रचना का आधार मनोविज्ञान होता है। इसलिये वास्तव मे बाल-साहित्य क्या है, इसका निर्णय बच्चे स्वय ही करते है, क्योकि छोटे बच्चो के लिये लिखी गई हर प्रकार की पुस्तक बाल-साहित्य नही कही जा सकती है। बाल-साहित्य का स्वरूप बालको की रुचि, वातावरण और सामाजिक परम्पराओ और सास्कृतिक वैविध्य पर आधारित होता है। इस दृष्टि से डॉ० श्रीप्रसाद बाल-साहित्य की परिभाषा इस प्रकार देते हैं—

वह समस्त साहित्य जिसमे बाल-साहित्य के तत्व है अथवा जिसे बालको ने पसन्द किया है, भले ही जिसकी रचना मूलत बालको के लिए न हुई हो, बाल-साहित्य है।[2]

वास्तव मे बाल-साहित्य बालको की रुचि और मनोरजन के अनुकूल होना चाहिये जिससे उनकी मनोभावनाएँ विकसित हो सकें। निरकारदेव सेवक का कथन है—जिस साहित्य से बच्चो का मनोरजन हो सके, जिसमे वे रस ले सके और जिसके द्वारा वे अपनी भावनाओ का विकास कर सके, वह बाल-साहित्य है।

अत स्पष्ट है कि बालसाहित्य के निर्णय मे बालको की रुचि का महत्त्वपूर्ण हाथ होता है। इसलिये बाल-साहित्य का निर्माण बाल-अनुभूति को लेकर होना

१ डॉ० हरिकृष्ण देवसरे, हिन्दी बालसाहित्य एक अध्ययन, पृ० ३
२ डॉ० श्री प्रसाद हिंदी बाल-साहित्य, पृ० १४

चाहिये। परन्तु यह स्पष्ट होना चाहिये कि बालको के अनुभूति-क्षेत्र को लेकर लिखा गया या लिखा जा रहा समूचा साहित्य बाल-साहित्य नही है। बालक-अपने साहित्य मे अपनी भावनाओ, कल्पनाओ तथा अनुभूतियो का चित्रण देखकर अधिक प्रसन्न और आनन्दित होते हैं, इसलिये बालसाहित्य मे बालको की आन्तरिक अनुभूतियो और कल्पनाओ को उन्ही की भाषा मे व्यक्त किया जाना चाहिए। बालक अपने साहित्य मे अपने रूप-सौन्दर्य और चेष्टाओ का सुन्दर वणन पढकर उतने प्रसन्न नही हो सकते जितने अपने मनोनुकूल और अपनी मनोभावनाओ पर आधारित चित्रण को देखकर वे आनन्द प्राप्त कर सकते है।

हिन्दी बाल-साहित्य की प्रमुख विधाये

हिन्दी बालसाहित्य की प्रमुख विधाये इस प्रकार है—

१—हिन्दी बाल-काव्य

२—हिन्दी बाल-कहानियाँ

३—हिन्दी बाल-उपन्यास

४—हिन्दी बाल-नाटक

५—हिन्दी बाल-निबन्ध

६—हिन्दी बाल-जीवनी साहित्य।

७—हिन्दी बाल-पहेलियाँ।

बाल-साहित्य की परम्परा

बाल-साहित्य का इतिहास इतना प्राचीन नही है जितनी कि अन्य साहित्य-विधाओ का, फिर भी सस्कृत साहित्य मे बच्चो को सतुष्ट करने वाली सस्कृत की महत्वपूर्ण कृति पचतत्र की रचना हुई। नीति और उपदेश प्रधान पचतत्र की कहानियाँ अधिकाशतया बच्चो के मनोनुकूल है। सस्कृत के किसी स्पष्ट बालसाहित्य का अग न होते हुये भी पचतत्र बालोपयोगी कृति है। पचतत्र के अतिरिक्त हितोपदेश, कथासाहित्यसागर और जातक कथाएँ भी बच्चो को एक सीमा तक सन्तोप प्रदान करती है। दूसरी ओर अनेक लोक कथाए भी बालोपयोगी हैं।

हिन्दी मे बाल-साहित्य का विकास उन्नीसवी शताब्दी के अन्त मे होता है। अँग्रेजी शासनकाल मे आधुनिक शिक्षा के विद्यालय उस समय आरम्भ

किये गये थे। इन विद्यालयो मे बालको के लिए जो पाठ्य-पुस्तके तैयार की गई थी उनमे बालोपयोगी रचनाओ का समावेश किया गया था। यही आधुनिक बाल-साहित्य की श्रीगणेश है। इसी क्रम मे प० श्रीधर पाठक और हरिऔध जैसे उस समय के साहित्यकारो ने बालको के लिये रचनाएँ की हैं। श्रीधर पाठक का बाल-कविता सकलन 'बाल-विनोद' सन् १६०६ ई० मे प्रकाशित हुआ था। यह हिन्दी की प्रथम उपलब्ध बाल-काव्य-कृति है।

हिन्दी का प्रारम्भिक बाल-साहित्य कहानी और काव्य के रूप मे ही रहा है। पौराणिक कहानियाँ और लोक कथाएँ प्रारम्भ मे अधिक प्रस्तुत की गई। अँग्रेजी बाल-साहित्य के प्रभाव से कालान्तर मे बालजीवन की समस्याओ पर आधारित कहानियाँ लिखी गयी। प्रेमचन्द की बालपयोगी कृति कुत्ते की कहानी पचतत्र की परम्परा मे है, पर उसमे किसी प्रकार की नीति या उपदेश नही है। पचतत्र की भाति केवल पशु-जीवन ग्रहण किया गया है और कुत्ते के माध्यम से मानवीय सवेदनाओ का ताना-बाना बुना गया है। इसके साथ ही धीरे-धीरे बच्चो के लिये कहानी रची गई जिनमे अवतार सिंह, हरिकृष्ण देवसरे, यादराम रसेन्द्र, मनोहर वर्मा, मस्तराम कपूर, उर्मिला आदि प्रमुख है। कहानी के विकास के क्रम मे ही बाल-उपन्यास की भी रचना हुई। धर्मवीर भारती ने बालक प्रेम और परियाँ नाम से एक बालोपयोगी उपन्यास की रचना की थी। वास्तव मे हिन्दी मे बाल-उपन्यास पिछले तीन दशको से ही लिखे जा रहे है। जिनमे सत्यप्रकाश अग्रवाल का एक डर, पाच निडर महत्वपूर्ण उपन्यास कृति प्रकाशित हुई। बाल-उपन्यासो की रचना कम हुई है। इसका सम्भवत कारण यह रहा हो कि कुशल साहित्यकार बाल-साहित्य के प्रति कम आकृष्ट हुए। अमृतलाल नागर के बजरगी पहलवान और बजरगी स्मगलरो के फदे मे दो बाल उपन्यास प्रकाशित हुए। बँगला मे सत्यजीत राय के अनेक महत्वपूर्ण बाल उपन्यास प्रकाशित हुए है। मराठी का भी बाल उपन्यास 'श्याम चि आई' है हिन्दी मे युग-विधायक कृतियाँ बाल उपन्यास के क्षेत्र मे अधिक नही है।

हिन्दी मे रगमच का विधिवत् विकास न हो पाने से वयस्को के लिए ही नाटको की रचना विधिवत् नही हो पायी है तो बच्चो के लिए नाटक की रचना कैसे होती। साथ ही बाल शिक्षा के व्यवस्थित न होने के कारण ही हिन्दी का बाल-साहित्य भी पर्याप्त रूप से समृद्ध नही है। शिक्षा मे नाटक को विशेष स्थान नही दिया गया है, क्योकि नाटक मचन के लिए ही होते है। इन

सभी परिस्थितियो ने नाटक लेखन को अत्यन्त सीमित कर दिया है। फिर भी हिन्दी मे कुछ मौलिक नाटक रचे गये है, और कुछ नाटको के अनुवाद भी प्रस्तुत किये गये हैं।

बालको के निबन्ध-रचना आरम्भ से ही होती रही है, बालको का ज्ञान विकसित करने को विविध विषयो पर लेखको ने निबन्ध रचे है। आरम्भ मे निबन्ध धार्मिक और पौराणिक विषयो का ज्ञान प्रदान करने के लिए था। वर्तमान निबन्ध वैज्ञानिक विषयो से सम्बद्ध है, अथवा देश विदेश का परिचय प्रदान करते है। आकाश के ग्रह-नक्षत्रादि का परिचय देने वाले या विज्ञान की सामान्य जानकारी प्रदान करने वाले अथवा देश के और विदेश के भौगोलिक स्थलो का ज्ञान बढाने वाले निबन्ध चम्पक, पराग, नन्दन, बालभारती आदि पत्रिकाओ मे प्रकाशित होते रहते हैं।

बाल-साहित्य के विकास मे बाल पत्रिकाओ का भी महत्वपूर्ण योगदान है। आरम्भ की पत्रिकायें—चमचम, खिलौना, शिशु (१९१६), बालसखा (१९१७), बालक (१९२७), बाल-विनोद (१९३४), कुमार (१९३२), वानर (१९३१), तथा बाद की पत्रिकाएँ पराग, नन्दन, चम्पक, बाल-भारती आदि के माध्यम से तथा अनेक साप्ताहिक एव दैनिकपत्रो के माध्यम से बाल-साहित्य का समुचित विकास हो रहा है।

बाल-साहित्य का महत्व

बाल-साहित्य के महत्व को नकारा नही जा सकता है। बालक अपनी पाठ्य-पुस्तको के अतिरिक्त कुछ और भी पढना चाहते है जो उनकी जिज्ञासा तथा उत्सुकता को उभार सके तथा सहज ढग से उसकी पूर्ति मे सहायक भी बन सके। बालक खेल-कूद, सिनेमा, भ्रमण, तथा स्कूलो मे विविध प्रकार के कायक्रमो, अन्त्याक्षरी, वाद-विवाद प्रतियोगिताओ इत्यादि मे भाग लेकर अपना मनोरजन कर सकते है। किन्तु इन सबसे पृथक् वे अपना एक निजी ससार भी चाहते है, जहा पहुँचकर वे एकान्तिक भाव से अपने कल्पित साथियो के साथ उठ-बैठ सके, कल्पित स्थानो पर आ-जा सके और रम-बस सके। बाल-साहित्य बालको की इसी कल्पना एव भावनाओ तथा अभिलाषा की पूर्ति मनोरजक ढग से करता है। वस्तुत बन्धु-बान्धव माता-पिता, इष्ट मित्रो के उपरान्त बालको का अतरग मित्र पुस्तके ही हो सकती है। पुस्तको के साथ उनका यह सम्बन्ध अधिक स्थायी तथा अधिक उपयोगी सिद्ध हो

सकता है, बाल-साहित्य की उपयोगिता इस दृष्टि मे और भी अधिक बढ़ जाती है।

बाल-साहित्य का यदि साहित्यिक मूल्यांकन किया जाय तो स्पष्ट होगा कि बाल-साहित्य समस्त साहित्य का मूल है। विश्व का उत्कृष्टतम साहित्य लोक साहित्य से ही विकसित हुआ है और लोक साहित्य बालक की जिज्ञासा और कौतूहल की उपज है।

बाल-साहित्य के द्वारा बालको का केवल ज्ञान ही विकसित नही होता अपितु उनके जीवन मे अतिरिक्त सरसता भी आ जाती है। अपने जीवन की अनेक समस्याओ का उन्हे समाधान भी प्राप्त होता है। यह बालसाहित्य का शैक्षिक मूल्य है, परन्तु आधुनिक युग का सबसे मूल्यवान तत्व है–सर्जना। हर बच्चे मे कोई न कोई प्रवृत्ति होती है, प्रतिभा होती है। उस प्रतिभा का विकास तभी होता है, जब कि उसको सर्जनशक्ति विकसित होती है। वह किसी की बनी बनाई चीज तभी तक लेता है, जब तक वह अपनी चीज स्वयं नही बनाना सीख जाता है। सर्जनशील बाल-साहित्य बालक की प्रतिभा तथा कल्पना को रचनात्मक रूप मे परिवर्तित करके उन्हे साहित्यकार वैज्ञानिक और कलाकार बनाता है।

सर्जनात्मक बाल-साहित्य जहाँ बालक को वैज्ञानिक दृष्टि देता है, वही ललित बाल-साहित्य बालक को सौन्दर्यबोध और व्यक्तित्व-निर्माण की दृष्टि देता है।

यह तो बाल-साहित्य का सामूहिक शैक्षिक और मनोवैज्ञानिक मूल्य था। इसके अतिरिक्त बाल साहित्य के राष्ट्रीय तथा सास्कृतिक महत्व को भी सैद्धान्तिक रूप मे स्वीकार किया जा सकता है। बाल पुस्तकें राष्ट्रीय भावनाओ तथा विश्वबन्धुत्व की भावनाओ को भी बनाये रखती है। बालक को विश्व का सबसे विशाल और उदार हृदय वाला विश्व नागरिक कहा गया है। उसकी ही तरह उसका साहित्य भी उदार और स्वच्छन्द होता है। यह बाल-स्वभाव है कि बालक अपने खेल के समवयस्क साथियो को अपने परिवार के सदस्यो से भी अधिक प्यार करते है। उनके ससार मे व्यक्ति से व्यक्ति का सम्बन्ध केवल मनुष्यता के नाते होता है। देश, जाति, वर्ण और धर्म के आधार पर होने वाले सम्बन्धो की वहाँ कोई मान्यता नही होती।

बाल-साहित्य का महत्व सार्वभौमिक तथा सार्वकालिक है। यह साहित्य सम्पूर्ण बाल-पीढ़ी के मन से जुड़ा होता है जो कि देश तथा समाज का आधार

स्तम्भ है। आज के युग मे बालक के जीवन का अपना स्वतन्त्र अस्तित्व है, यह घोषणा निरन्तर विकसित होते हुए बाल-साहित्य ने स्पष्ट रूप से कर दी है। बालक ही प्रगतिशील राष्ट्र तथा समाज का निर्माता होता है। इसके लिए आवश्यक है कि उसका स्वस्थ बौद्धिक तथा मानसिक विकास हो, और इसका दायित्व बाल-साहित्य पर ही है। १६७६ का वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय बाल-वर्ष के रूप मे मनाया जाना बालक के महत्त्व को समझाने का सराहनीय प्रयास है।

ब० माणकचंद का बाल-साहित्य

श्री नाहर ने बाल साहित्य पर अनुसधान करके अध्ययन तो प्रस्तुत किया ही है, साथ ही बच्चों के लिए भी ज्ञान-विज्ञान और मनोरजन से पूर्ण साहित्य की सर्जना भी की है। बाल-साहित्य पर उनका गम्भीर अध्ययन "तमिल और तेलगू का बाल-साहित्य एक अध्ययन" (नवभारत टाइम्स बम्बई, ४ १० ७०) तथा "मलयालम और कन्नड के बाल साहित्य का सक्षिप्त इतिहास" जैसे निबधो मे देखने को मिलता है। इस गम्भीर अध्ययन के अतिरिक्त उन्होने बच्चो के लिये हिन्दी मे द्वाक्षर, त्रक्षर, उलटा पलटना सार्थक प्रयोग (तुलनात्मक सर्वेक्षण) (भक्ताभर, १६७२), 'दुनिया की यादगारे, (मगलदीप, १६७६), 'बच्चो का प्रिय फल बेर,' (साप्ताहिक राष्ट्रदूत, १६ जून १६७०) इत्यादि जैसे ज्ञान प्रदायक और रोचक, मनोरजक लेख भी लिखे है। उनके कुछ प्रमुख बालोपयोगी लेखो का सामान्य परिचय यहाँ पर देना उचित ही रहेगा।

१. हिंदी मे द्वाक्षर-त्रक्षर

भक्तावर के १६७२ के अक मे प्रकाशित इस बालोपयोगी लेख मे कुछ ऐसे सार्थक शब्दो का परिचय दिया है जिनको पलटकर या उलटकर पढे तो वैसे ही अर्थ का बोध होता है जैसा अपनी वर्तमान स्थिति मे है। जैसे काका, दादा दीदी, नाना, बाबा, बीबी, शीशी, इत्यादि। इस लेख मे हिंदी के अतिरिक्त तमिल और गुजराती भाषाओ के भी ऐसे ही शब्दो का प्रयोग दिया गया है। इस तरह यह लेख बच्चो का मनोरजन तो करता ही है, उनका ज्ञानवर्द्धन भी करता है।

२. दुनिया की यादगारे

मगलदीप के १६७६ के अक मे श्री नाहर का एक बालोपयोगी लेख

प्रकाशित हुआ है। इस लेख पर यह टिप्पणी अंकित है "अंतर्राष्ट्रीय बाल-वर्ष के सुअवसर पर बालको की ज्ञान वृद्धि हो, विश्व की आश्चर्यजनक घटनाओ से वे अवगत हों, इस उद्देश्य से दुनिया की अजब यादगारें प्रस्तुत हैं"। इस लेख मे दी गई कुछ विचित्र यादगारो का उल्लेख करना यहाँ अनावश्यक नही होगा।

मेढक—जापान की राजधानी टोक्यो के अन्तर्गत कीओ विश्वविद्यालय के प्राणि-विज्ञान विभाग मे ससार के अनेक वैज्ञानिको ने मानव-कल्याण के लिए अनेक सफल परीक्षण किये। उन परीक्षणो के दौरान करीब एक लाख मेढको की हत्या हुई। वैज्ञानिको ने इन एक लाख मेढको को श्रद्धाजलि अर्पित की—"उन अज्ञात प्राणियो के लिये यह स्मारक बना है जिन्होंने मानव-कल्याण के लिए अपने जीवन का बलिदान किया" (टोक्यो, जापान—पत्थरो का स्मारक)

मुर्गा—रोम मे टाइवर नदी मे एक बार रात्रि मे जोरो की बाढ आई। उस समय सभी लोग गहरी नींद मे सो रहे थे। किसी को भी इस बात की जानकारी नही थी कि बाढ के रूप मे साक्षात् यमदूत उनकी ओर बढ रहा है। मगर मुर्गा के चिल्लाने का कारण भी जाना। बाढ के पानी को बढते देख सभी ने आनन-फान अपने को और अपने बहुमूल्य सामान को बचाने का प्रबन्ध किया। मुर्गा की इस कर्तव्य-निष्ठा से रोमवासी बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने उनकी स्मृति मे टाइवर नदी पर एक मजबूत स्मृति-पुल बना दिया।

चोर—एक गरीब मगर ईमानदार व्यक्ति ने ल्यूवक के सेंट मेरी चर्च मे गरीबो के ही सन्दूक को तोडकर उसके अन्दर पडे कुछ छोटे सिक्के चुरा लिये और अपनी तत्कालीन आवश्यकताओ की पूर्ति की।

कुछ समय पश्चात् वह गरीब आदमी अमीर बन गया। तब एक रात्रि को उसने चर्च मे पुन प्रवेश किया और उसी सदूक के ताले तोडकर उसमे स्वर्ण मुद्राये भर दी तथा साथ मे अपने अपराध की स्वीकृति के लिये क्षमा-याचना का पत्र लिखकर भी रख दिया। अगले दिन जब सदूक को खोला गया तो उसमे स्वर्ण मुद्रायें देखकर सभी आश्चर्यचकित रह गये। ऐसे ईमानदार व्यक्ति का सार्वजनिक सम्मान हो, ऐसी खोज की गयी। लेकिन उस आदमी का पता नही चला। उसी चर्च मे उसकी स्मृति को अमर बनाने हेतु "ईमानदारो का स्मारक" बनाया गया। (ल्यूबक, सेंट मेरी चर्च)[1]

१ दुनियाँ की यादगारें, मानदीप, १९७९ (वार्षिक अक—१७), बम्बई, पृ०-२२९

हाथी दाँत—तमिलनाडू मे रामनाथपुरम जिले मे एक पहाडी के शिखर पर भगवान शकर के मन्दिर के साथ एक हाथी के दाँत का भी स्मारक बनाया गया है। कहा जाता है कि एक हाथी नित्य प्रति आकर भगवान शकर की वन्दना करता था, इसके एक ही दाँत था, उसकी मृत्यु पर भक्तो ने उस हाथी के दाँत की स्थापना सन् १९७१ मे कर दी। वस्तुत यह हाथी दात का अजीब स्मारक है।

मोर—बीकानेर के राजा अनूपसिंह की जब मृत्यु हुई और उनके शव को चिता मे जलाया गया तो पास मे एक वृक्ष से एक मोर उस चिता मे आ कूदा। लोग आश्चर्यचकित रह गये। लोगो ने उस मोर को बचाने का प्रयत्न किया, इतने मे दूसरा और तीसरा मोर चिता मे आ कूदा। इसके बाद तो चिता मे लगातार मोर आ आकर गिरने लगे। लोग उन्हे बचाने के लिये जुट गये। किवदती है कि चिता मे से एक आवाज गूँजी—"इन मोरो को चिता मे जलने दो। पिछले जन्म मे ये सब राज परिवार के सदस्य थे। दुष्कर्मो के कारण मोर बने है। चिता मे जलने से इनकी सद्गति होगी" घटना के बाद इन मोर-मोरनियो का स्मारक भी महाराज के स्मारक के साथ ही बना हुआ है।

इस लेख मे अत्यन्त रोचक ढग से कुछ रोचक स्मारको का वर्णन किया है। मनोरजन के साथ ही इस लेख से बच्चो मे सामान्य ज्ञान की भी रुचि जागृत होती है और उन का ज्ञान-वर्द्धन होता है।

दुनियाँ की अजब यादगारे (दो)

'जैन जगत्' हिन्दी मासिक बम्बई के जून, १९७९ अक मे उपयुक्त लेख की तरह ही यह लेख भी प्रकाशित हुआ है। इस लेख मे 'मगलदीप' मे प्रकाशित पिछले लेख की तरह की कुछ और यादगारो (स्मारको) का परिचय दिया गया है। ऐसी कुछ नई यादगारे इस लेख मे द्रष्टव्य है—

मक्खी—"रोम के सुप्रसिद्ध कवि वर्जिल को एक मक्खी से बहुत स्नेह हो गया था। उसकी मृत्यु पर उसने घोर व्यथा व्यक्त की और उसके अतिम सस्कार पर लगभग पचास हजार रुपये खर्च किये तथा उसका स्मारक बनाया।"[1]

बकरा—युगोस्लाविया मे एक किसान ने अपने प्रिय बकरे की मृत्यु

१ बाल जगत्/दुनिया की अजब यादगारे, जैन जगत् (हिंदी मासिक), बम्बई, जून, ७९, पृ० २५

पर शानदार जुलूस निकाला। उसके अतिम सस्कार पर हजारों लोग एकत्रित हुए जिस स्थान पर उसे दफनाया गया, वहाँ पर कीमती पत्थरो से बनी बकरे की प्रतिमा स्थापित की गयी और उसके चारो तरफ एक बाग लगा दिया गया।[1]

बच्चो का प्रिय फल बेर

साप्ताहिक राष्ट्रदूत, छपरा, जून, १६७० अक मे प्रकाशित इस लेख मे बेर नामक फल का बडा ही ज्ञानवर्धक परिचय दिया गया है। इस लेख की भाषा अत्यन्त सरल, स्पष्ट और प्रभावपूर्ण है। इसके अतिरिक्त इस लेख मे अपनी कल्पना द्वारा श्री नाहर ने अनेक मनोरजक प्रसगो का समावेश कर रोचकता की वृद्धि की है जैसे—

"महाकवि तुलसीदास जी ने शायद काशी मे बेर अधिक खाये होंगे, तभी, आत्मानुभूति करके उन्होने महाकाव्य रामचरित मानस मे शबरी के झूठे बेर रामचन्द्र जी को खिलाने के प्रसग का बडा रोचक वणन किया। इसमे भक्त की श्रद्धा का, भगवान की भक्तो पर कृपा का वर्णन मिलता है। साथ ही साथ बेर का महत्व मालूम होता है—

"सबरी कटुक बेर तजि मीठे,
की कछु सकन न मानी।
भाई॥"

१ वही।

हाथी दाँत—तमिलनाडु मे रामनाथपुरम जिले मे एक पहाडी के शिखर पर भगवान शकर के मन्दिर के साथ एक हाथी के दांत का भी स्मारक बनाया गया है। कहा जाता है कि एक हाथी नित्य प्रति आकर भगवान शकर की वन्दना करता था, इसके एक ही दांत था, उसकी मृत्यु पर भक्तो ने उस हाथी के दाँत की स्थापना सन् १९७१ मे कर दी। वस्तुत यह हाथी दांत का अजीब स्मारक है।

मोर—बीकानेर के राजा अनूपसिंह की जब मृत्यु हुई और उनके शव को चिता मे जलाया गया तो पास मे एक वृक्ष से एक मोर उस चिता मे आ कूदा। लोग आश्चर्यचकित रह गये। लोगो ने उस मोर को बचाने का प्रयत्न किया, इतने मे दूसरा और तीसरा मोर चिता मे आ कूदा। इसके बाद तो चिता मे लगातार मोर आ आकर गिरने लगे। लोग उन्हे बचाने के लिये जुट गये। किंवदती है कि चिता मे से एक आवाज गूँजी—"इन मोरो को चिता मे जलने दो। पिछले जन्म मे ये सब राज परिवार के सदस्य थे। दुष्कर्मो के कारण मोर बने है। चिता मे जलने से इनकी सद्गति होगी" घटना के बाद इन मोर-मोरनियो का स्मारक भी महाराज के स्मारक के साथ ही बना हुआ है।

इस लेख मे अत्यन्त रोचक ढग से कुछ रोचक स्मारको का वर्णन किया है। मनोरजन के साथ ही इस लेख से बच्चो मे सामान्य ज्ञान की भी रुचि जागृत होती है और उन का ज्ञान-वर्द्धन होता है।

दुनियाँ की अजब यादगारे (दो)

'जैन जगत्' हिन्दी मासिक बम्बई के जून, १९७९ अक मे उपर्युक्त लेख की तरह ही यह लेख भी प्रकाशित हुआ है। इस लेख मे 'मगलदीप' मे प्रकाशित पिछले लेख की तरह की कुछ और यादगारो (स्मारको) का परिचय दिया गया है। ऐसी कुछ नई यादगारे इस लेख मे द्रष्टव्य है—

मक्खी—"रोम के सुप्रसिद्ध कवि वर्जिल को एक मक्खी से बहुत स्नेह हो गया था। उसकी मृत्यु पर उसने घोर व्यथा व्यक्त की और उसके अतिम सस्कार पर लगभग पचास हजार रुपये खर्च किये तथा उसका स्मारक बनाया।"[1]

बकरा—युगोस्लाविया मे एक किसान ने अपने प्रिय बकरे की मृत्यु

१ बाल जगत्/दुनिया की अजब यादगारे, जैन जगत (हिंदी मासिक), बम्बई, जून, ७९, पृ० २५

पर शानदार जुलूस निकाला। उसके अतिम सस्कार पर हजारों लोग एकत्रित हुए जिस स्थान पर उसे दफनाया गया, वहाँ पर कीमती पत्थरो मे उनी बकरे की प्रतिमा स्थापित की गयी और उसके चारो तरफ एक बाग लगा दिया गया।'[1]

बच्चो का प्रिय फल वेर

साप्ताहिक राष्ट्रदूत, छप्परा, जून, १९७० अक मे प्रकाशित इस लेख मे वेर नामक फल का वडा ही ज्ञानवर्धक परिचय दिया गया है। इस लेख की भाषा अत्यन्त सरल, स्पष्ट और प्रभावपूर्ण है। इसके अतिरिक्त इस लेख मे अपनी कल्पना द्वारा श्री नाहर ने अनेक मनोरजक प्रसगो का समावेश कर रोचकता की वृद्धि की है जैसे—

"महाकवि तुलसीदास जी ने शायद काशी मे वेर अधिक खाये होंगे, तभी, आत्मानुभूति करके उन्होने महाकाव्य रामचरित मानस मे शवरी के झूठे वेर रामचन्द्र जी को खिलाने के प्रसग का वडा रोचक वणन किया। इसमे भक्त की श्रद्धा का, भगवान की भक्तो पर कृपा का वणन मिलता है। साथ ही साथ वेर का महत्व मालूम होता है—

"सबरी कटुक वेर तजि मीठे,
की कछु सकन न मानी।
भाई ।।"

१ वही।

अध्याय ७

ब० माणकचंद नाहर का पत्रकारिता और प्रकीर्ण साहित्य

पत्रकारिता शब्द पत्र-पत्रिकाओ से घनिष्ठ सम्बन्ध रखने वाला शब्द है। इसे समझने से पूर्व पत्र और पत्रिकाओ के सम्बन्ध मे समझ लेना आवश्यक है। पत्र-पत्रिकाएँ वह साधन है जिसके माध्यम से साहित्य का प्रसार तीव्र गति से दूर दूर तक सम्भव है। व्यक्ति अपने विचार, धारणा, मतव्य, समर्थन या विरोध इस साधन के माध्यम से करता है। क्रिया अथवा प्रतिक्रिया के लिए यह सहज-सुगम व उपयोगी माध्यम है। पत्र-पत्रिकाओ मे जो व्यक्ति अपने कुछ विशिष्ट गुणो से लेख देते है, सम्पादन करते है, उन्हे पत्रकार कहा जाता है। पत्रकार पत्र-पत्रिकाओ के माध्यम से समाज को जो दृष्टि देता है उसे साहित्य के अन्तगत माना जाता है और वही दृष्टि पत्रकारिता कहलाती हे। इस प्रकार कहा जा सकता है कि पत्रकारिता एक व्यवसाय है और वह अध्यापन की भाँति एक पवित्र व्यवसाय है। यह जीवन के उन सन्दर्भो को उजागर करता है जो मानव-मात्र के लिए कल्याणकारी है। एक जागरूक पत्रकार की लेखनी तत्कालीन समाज की चुनौतियो को ही स्पश करती है। पत्रकारिता के द्वारा समाज को जो दृष्टि दी जाती है वह ही पत्रकारिता-साहित्य कहलाता है।

हिन्दी मे पत्रकारिता-साहित्य की स्थिति

प्राचीन काल मे साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए प्रचारक एक स्थान से दूसरे स्थान तक भ्रमण किया करते थे। आश्रमो मे गोष्ठी आदि का आयोजन

किया करते थे। प्रचार-प्रसार का दूसरा माध्यम राज्य-सभाएँ थी जहाँ कविगण अपनी रचनाएँ सुनाया करते थे। यह क्रम कविसम्मेलन के रूप मे आज भी है। किन्तु ये माध्यम सीमित है, व्यापकता के लिये पत्र-पत्रिकाएँ ही उचित साधन कहे जाते है।

भारत मे पत्र-पत्रिकाओ का इतिहास सन् १८२१ ई० से आरम्भ हुआ। यद्यपि प्रेस की स्थापना ईस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा सन् १६७४ मे हो चुकी थी। स्वदेशी पत्रिका 'सवाद कौमुदी' का सर्व प्रथम प्रकाशन राजा राममोहन राय ने किया। इसके बाद 'समाचारदर्पण', 'दिग्दर्शन', वगदूत आदि पत्रिकाएँ प्रकाशित हुई। हिन्दी के सर्व प्रथम पत्र होने का श्रेय 'उदन्त मार्तण्ड' को है जिसका प्रकाशन सन् १८२६ मे हुआ। इसके पश्चात् भारतेन्दु युग मे अनेक पत्र-पत्रिकाओ का प्रकाशन हुआ जिनमे जागरण सम्बन्धी लेख प्रकाशित हुए जिनसे सामाजिक चेतना को नई दिशा मिली तथा साहित्य मे नूतन क्रांतिकारी परिवर्तन आया। इस युग मे गद्य की विभिन्न विधाओ का विकास हुआ। कहानी, समीक्षा, यात्रावृत्त, जीवनी तथा वैज्ञानिक लेख प्रकाशित होकर पत्रकारिता को नई दिशा मिली।

द्विवेदी युग मे 'सरस्वती' पत्रिका का परिष्कृत रूप आया। इस पत्रिका के सन्दर्भ मे डॉ० ओमप्रकाश सिहल ने लिखा कि—"इसमे सन्देह नही 'सरस्वती' ने भाषा और साहित्य दोनो क्षेत्रो मे नये स्वरूप का निर्माण किया। यह सचमुच आलोच्य युग की साहित्यिक उच्चता का निकष बन गई थी।" इस युग मे पत्रकारिता मे दो रूप साहित्यिक एव राजनीतिक नाम से प्रचलित हुए। द्विवेदी युगीन पत्र-पत्रिकाओ के सन्दर्भ मे कहा गया है कि—"आलोच्य युग की साहित्य-समृद्धि एव भाषा परिष्कार मे पत्र-पत्रिकाओ का बहुत बड़ा योगदान है। भारतेन्दु युग मे तो पत्रकारिता और साहित्य दोनो प्राय एक ही स्तर पर विकसित हो रहे थे। आलोच्य युग मे कुछ गम्भीर साहित्यिक पत्रिकाएँ प्रकाशित होने लगी जो समाज-सुधार या राजनीतिक उथल-पुथल से प्रत्यक्ष सम्बन्ध नही रखती थी। गद्य की विविध शैलियो एव विधाओ के विकास मे इस युग की पत्रकारिता का विशेष योगदान रहा है।

छायावाद-युगीन पत्र-पत्रिकाएँ

इस युग मे पत्र-पत्रिकाओ के क्षेत्र मे विकास की गति तेजी से बढ़ी, साथ

आयुर्वेद, शिक्षा तथा विविध सम्प्रदायो व सघो की स्वतत्र पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित होने लगी जिससे पत्रकारिता साहित्य की श्री वृद्धि होने लगी।

स्वातंत्र्योत्तर पत्र-पत्रिकाएँ

स्वतत्रता के पश्चात् देश मे विविध विचार-धारा के अनुसार पत्र-पत्रिकाओ का प्रकाशन हो रहा है। इस युग मे एक ओर समर्थ पत्रकारो की ईमानदार कलम ने देश वा भाषा की प्रगति के लिये उत्सर्ग किया, तो दूसरी ओर व्यावसायिक प्रवृत्ति ने पत्रकारिता के मूलभूत स्वरूप को एक अन्य ही दिशा देने की कोशिश की है।

पत्रकारिता-साहित्य का वर्गीकरण

आज पत्र-साहित्य अति विशद व व्यापक स्वरूप ले चुका है। इसे कई दृष्टियो से वर्गीकृत किया जा सकता है—

(१) अवधि की दृष्टि से—

दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक, पाण्मासिक, वार्षिक।

(२) विषय की दृष्टि से—

समाचार पत्र पत्रिकाएँ, शैक्षणिक पत्र-पत्रिकाएँ, वैज्ञानिक पत्र-पत्रिकाएँ, राजनीतिक, व्यावसायिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, आर्थिक एव सामाजिक पत्र-पत्रिकाएँ।

(३) प्रवृत्ति की दृष्टि से—

ज्ञानवर्द्धक, मूल्याकन, हास्य-व्यग्य, समारोह पत्र पत्रिकाएँ।

(४) वर्ग विशेष की दृष्टि से—

महिला, बाल, प्रौढ, किशोर पत्र-पत्रिकाएँ।

इनके अतिरिक्त कुछ ऐसी है जो सभी वर्गों, सभी विचार-धाराओ तथा सभी प्रवृत्तियो का प्रतिनिधित्व करती हैं।

पत्रकारिता का महत्त्व

इतिहास इस बात का साक्षी है कि पत्रकारिता ने समाज को ही नहीं, बल्कि समस्त राष्ट्र को भी बदल दिया। 'कलम बडी है या तलवार' के अनुसार कलम ने, प्राचीन काल के चारण कवियो को वाणी ने, क्या परिवर्तन कर नही दिखाया ?

माणकचन्द नाहर का पत्रकारिता-साहित्य

यह पृथ्वी रत्नगर्भा है। इसने समय-समय पर अनेकानेक रत्न दिये हैं। हिन्दी-साहित्य-जगत् को भी समय-समय पर इसी प्रकार के रत्न उपलब्ध होते रहे जिन्होंने अपनी आभा से हिन्दी-साहित्याकाश को आलोकित किया। श्री माणकचन्द जी नाहर स्वातन्त्र्योत्तर युग के नयी पीढ़ी के हिन्दी सेवकों में बहु-मुखी प्रतिभा के धनी है। आप एक उच्चकोटि के साहित्यकार, हिन्दी के अनन्य सेवक है। आपके निबन्ध, कविताएँ, जीवनियाँ, कहानिया विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं मे प्रकाशित होते रहते है। इस प्रकार उनकी प्रतिभा साहित्य की अनेक विधाओं मे समान रूप से उभर कर आई है। उन्होंने उच्चकोटि के निबन्ध, महत्त्वपूर्ण काव्य और जीवनी-साहित्य के अतिरिक्त और भी कई प्रकार का साहित्य लिखा है। जब कभी उनके साहित्यिक कार्य का मूल्यांकन होगा अथवा किया जाएगा तो उनका इस तरह के साहित्य का भी महत्त्वपूर्ण स्थान होगा जो कि उनके प्रकीर्ण साहित्य के अन्तर्गत है।

श्री माणकचंद नाहर एक कुशल पत्रकार है। इसलिये पत्र-पत्रिकाओं मे उनकी बहुत रुचि और गति है। इस बात का प्रमाण उनके द्वारा सम्पादित 'भक्तामर' नामक पत्रिका तो है ही, इसके अतिरिक्त उनके कई लेख पत्र-पत्रिकाओं मे प्रकाशित है। 'राष्ट्र-भारती' पत्रिका (वर्धा से प्रकाशित), 'नवभारत टाइम्स' (बम्बई से प्रकाशित), 'साप्ताहिक राष्ट्रदूत', 'सम्मेलन-पत्रिका' (प्रयाग १९७१), 'नवनीत' (बम्बई), 'सरस्वती' (प्रयाग), 'अग्रगामी', 'सुलभा', 'सद्भावना', 'धन्वन्तरी', 'जोरदार', 'हिन्दी-साहित्य', अमर-जगत्', 'भाषा', 'सयुक्त-भारती', 'युग प्रभात', 'राष्ट्रदूत', आदि पत्र-पत्रिकाओं मे आपके विभिन्न प्रकार के लेख प्रकाशित हुये है जिनसे उनके विभिन्न गुणो का आभास मिलता है। उनके कुछ लेख शिक्षा-शास्त्री के रूप को, कुछ लेख राष्ट्र-भक्त रूप को कुछ धार्मिक प्रवृत्ति को उजागर करते हैं। यथा—शिक्षा शास्त्री के रूप मे 'रूस और अमेरिका की प्रारम्भिक शिक्षा' (तुलानात्मक सर्वेक्षण) "राष्ट्र भारती", वर्धा से प्रकाशित।

राष्ट्रभक्त रूप मे

(१) 'सांस्कृतिक एकता की प्रतीक कहावतें—नवभारत टाइम्स (बम्बई)

(२) 'मन्दिर भी मस्जिद भी'—नवनीत (बम्बई)

(३) 'हिन्दी और तमिल कहावतो का तुलनात्मक अध्ययन', भाषा-शिक्षा मत्रालय भारत सरकार।

इनके अतिरिक्त उनके लेखो मे भावात्मक एकता के पग-पग पर दर्शन होते है जिसकी कि देश को नितान्त आवश्यकता है। 'तमिल और काश्मीरी कहावतें', सरस्वती (प्रयाग), 'कन्नड और काश्मीरी कहावने', सरस्वती (प्रयाग) तथा 'स्वतत्रना की नीव एकता' नामक लेख इस भावनात्मक एकता को उजागर करते है। पत्रकारिता साहित्य पर भी कुछ लेख उनके प्रकाशित हुये है जैसे— जैन पत्र-पत्रिकाएँ इत्यादि।

उपर्युक्त पत्र-पत्रिकाओ मे श्री माणकचद जी नाहर के लेखो का अध्ययन करने पर उनकी कुछ विशेपताएँ सामने आती है जो कि इस प्रकार व्यक्त की जा सकती है—

(१) उनके सम्पादकीय गुणो का पता चलता है।
(२) लेखो के अध्ययन से उनके सामान्य ज्ञान का पता चलता है।
(३) देश-विदेश की घटनाओ के प्रति उनकी रुचि का पता लगता है।
(४) एक जागरूक नागरिक के गुण उनमे दृष्टिगोचर होते है।
(५) हिन्दी के अनन्य सेवक के रूप मे सबके समक्ष उभर कर आते है।
(६) 'सहितस्यभाव' का समावेश उनके लेखो मे हुआ हे।
(७) भावात्मक एकता का भाव उनके लेखो मे मिलता है।

ज्ञान-विज्ञान विषयक साहित्य

यद्यपि भारतेन्दु युग मे गद्य की विविध विधाओ पर कार्य होने लग गए थे, उम ममय पत्रकारिता को एक नयी दिशा मिली थी, इसके साथ ही इसी युग मे वैज्ञानिक लेख भी प्रकाशित होकर पत्रकारिता को एक और नयी दिशा मिल गई थी। विज्ञान या विशिष्ट ज्ञान के साथ अनुभव का ज्ञान मिल जाने से वह व्यावहारिक बन जाता है और इससे ज्ञान-विज्ञान का और भी महत्त्व बढ जाता है। पत्रकारिता-जगत् मे ज्ञान-विज्ञान विपयक साहित्य का सजन पूर्ण रूप से स्वातत्र्योत्तर युग की देन है। इसीलिए इस विधा मे हिन्दी-साहित्य मे बहुत कम ही सामग्री मिलती है। श्री नाहर जी ने इस क्षेत्र मे भी अपनी लेखनी चलाई है। इस दृष्टि से हम उनके एक लेख का उल्लेख करना चाहेगे। 'धन्वन्तरि' नामक आयुर्वेदिक पत्रिका मे उन्होने 'पचगव्य और उसके विविध प्रयोग' शीपक से लेख प्रकाशित कराया है। इस लेख मे पचगव्य के लाभकारी प्रयोगो पर सस्कृत श्लोको के आलोक मे बहुत ही शास्त्र-सम्मत जानकारी दी गई है। गाय के दूध, दही, घी, गोमूत्र और गोवर को पचगव्य कहते है वेदो मे गौ-दूध को अत्यन्त लाभदायक बताया गया है। श्री नाहर

जी की अनुभवी लेखनी से प्रसूत इस ज्ञान गर्भित लेख मे हमे बहुत ही अच्छी जानकारी पढने को मिलती है।

'हिन्दी और तमिल की कहावते', 'सास्कृतिक एकता की प्रतीक कहावतें' 'क, ख, ग, घ, च, छ' 'हिन्दी के सख्यावाचक शब्दो का त्रिकोणात्मक अध्ययन' नामक निबन्ध जहाँ उन्हे भाषा-विज्ञान का ज्ञाता घोषित करते हैं वहाँ ज्ञान-विज्ञान विषयक साहित्य पर प्रकाश डालते है। यहा तक कि बालोपयोगी ज्ञान-विज्ञान विषयक लेख भी इन्होने लिखे है जो कि अबोध बच्चो का मनोरजन तो कराते है, साथ ही उनका ज्ञानवर्द्धन भी होता है। ऐसा लेख भक्तामर' पत्रिका १९७२ मे 'द्वाक्षर-त्रक्षर, उलटा पलटना सार्थक प्रयोग' तुलनात्मक सर्वेक्षण के रूप मे है। जैसे—काका, दादा, बाबा, नाना, चमच, जहाज, नवीन इत्यादि।

विशेषताएँ

नाहर जी के ज्ञान-विज्ञान विषयक लेखो से उनकी कुछ विशेषताएँ दृष्टि-पथ मे आती है यथा—

(१) हिन्दी-साहित्य की विविध विधाओ को समृद्ध करने के लिए सतत प्रयत्नशील।

(२) सरल से सरल और गहन से गहन विषयो को पाठको को उनकी अवस्था के अनुसार समझाने की क्षमता।

(३) अपना कार्यक्षेत्र अहिन्दी प्रदेश होते हुए भी हिन्दी की अनन्य सेवा।

अनुवाद-साहित्य

प्रत्येक देश और काल मे दूसरे देश और काल की भावनाओ तथा विचारो की अभिव्यक्ति के माध्यम मे अन्तर रहा है। यह अन्तर तत्सम्बन्धी देश और तत्कालीन मानव समाज की भाषा और बोली के अन्तर के कारण ही रहा है। युग-विशेष और देश-विशेष का कोई भी विचारक जो कुछ सोचता-विचारता है, उसे अपनी भाषा मे लेखबद्ध कर लेता है। अब उस भाषा को न जानने वाले लोगो के लिए वह विचार-राशि दुर्लभ और अग्राह्य है, उन्हे उन विचारो का बोध नही हो पाता है। यह अबोधता की दीवार भाषा के कारण उत्पन्न होती है। भाषा के इस व्यवधान को दूर करना ही अनुवाद का काम है।

अनुवाद के द्वारा ही एक भाषा मे व्यक्त विचारो या भावो को अन्य भाषाओ मे व्यक्त कर सुलभ किया जा सकता है । इस प्रकार कहा जा सकता है कि—भावाभिव्यक्ति को एक भाषा से दूसरी भाषा मे रूपातरित करने की एक विशिष्ट कला ही अनुवाद है । बिना अनुवाद का सहारा लिए विश्व के विविध देशो के परस्पर भावो या विचारो मे निकटतम सम्पर्क स्थापित करने की क्रिया सम्पादित नही हो सकती । यही नही, एक देश के विभिन्न प्रान्तो के लोग भी परस्पर एक दूसरे के भावो को बिना अनुवाद के समझने मे सक्षम नही होते । भावो या विचारो के अतिरिक्त सस्कृति के प्रसार तथा समृद्धि के लिए भी अनुवाद की उपयोगिता है । किसी सस्कृति के प्रसार तथा समृद्धि मे अनुवाद का बहुत बडा योगदान रहा है ।

गणित, ज्योतिष, आयुर्वेद, दर्शन, साहित्य के क्षेत्र मे भारत की जो देन है वह अनुपेक्षणीय है, और अरब से ग्रीस होते हुए यूरोप तक पहुँची है । 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' को पढकर प्रसिद्ध जर्मन कवि-दार्शनिक गेटे ने जिस आनन्द का अनुभव किया था वह अनुवाद के ही परिणाम स्वरूप था । शापेनहावर ने हमारे उपनिषदो को ज्ञान की प्रौढतम परिणति माना और हमारी सस्कृति तथा धर्म को गौरव प्रदान किया है ।

भारत जैसे देश के लिए, जो अनेक प्रान्तो मे बँटा हुआ है, और जहाँ प्राय प्रान्त-विशेष की अपनी-अपनी स्थानीय भाषाएँ है, अनुवाद की बडी आवश्यकता पडती है । भारत मे प्राय चौदह प्रकार की समृद्ध साहित्यिक भाषाएँ बोली जाती है । अत 'भारती' केवल तमिल की ही सम्पत्ति नही और न 'गीताजलि' बँगला की । प्रसाद का 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' देश के कोने-कोने मे फैला है । इस प्रकार भावनात्मक एकता पैदा करने मे अनुवाद को पर्याप्त श्रेय प्राप्त है ।

आज हिन्दी के अच्छे-अच्छे साहित्यकारो की रचनाओ का विदेशी भाषाओ मे भी अनुवाद हो रहा है । सूरसागर, सूरसारावली, रामचरितमानस, गीताजलि, कामायनी आदि-आदि का विभिन्न भाषाओ मे अनुवाद हो चुका है । साथ ही हिन्दी-साहित्य मे भी इस पर कार्य हो रहा है । अग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन रूसी आदि भाषाओ के साहित्य का अनुवाद हिन्दी मे किया जा रहा है ।

नाहर का अनुवाद साहित्य

श्री ब० माणकचन्द नाहर मे सर्जनात्मक प्रतिभा विशिष्ट है, उन्होने

हिन्दी साहित्य की सर्जना मे अपना जो योगदान दिया है उसका विशेष महत्त्व है। उनके मौलिक साहित्य के अतिरिक्त हमे उनके द्वारा कुछ अनूदित साहित्य भी उपलब्ध होता है। अनेक भाषाओ पर उनका अधिकार है, यही कारण है कि उन्होने अनेक हिन्दीतर भाषाओ की श्रेष्ठ रचनाओ का हिन्दी मे बडा ही अच्छा अनुवाद उपस्थित किया है। इन अनुवादो मे उनकी सर्जनात्मक प्रतिभा को भी अपने पूरे प्रभाव के साथ देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए एक मणिपुरी कविता रनशिग का हिन्दी अनुवाद द्रष्टव्य है—

मूल कविता	हिन्दी अनुवाद
लोइची चीगी नापे न्योमदा चिक लेम्न शातलिवी कोई लोई मिने निथवो शिग कौवी लैराओ। चिकल लमदम असिदा साईव कनाबु येदुना करि वार वलबु खल्लीवा हाई युने कोई लोई मिलेन निचिवी नहाकी चमल सा वार बदा करवा मचु शलवा मलवा चचागी थम्मोईना। लॉवा फुद्रे को ईमा नहाकी शैलवा मचूहा शानिवा मचु शदूना ओईहान्निव मओदा ओईदुना ताइव लेते औईवगुम नचासु ओईहन वीयु ईमा।	मणिपुर की पहाडियो मे कपास की खेती मुझे बडी सुहानी लगती है। पहाडो की तराई मे कपास विनाले को देखकर मेरा मन नाचने लगता है। कपास पहले सफेद सात्विक अर्थात् सहज और सरल होती है। इसी प्रकार मनुष्य भी सहज और सरल है— मनुष्य भी आदि रूप मे निष्कलक और निरजन होता है। मनुष्य के परिश्रम से कपास के कई रूप हो सकते है। इसी प्रकार मनुष्य भी अपनी सगति से प्रयास से उन्नति और अवनति कर सकता है। अत मे कवि विनती करता है कि हे कपास! मुझे भी अपनी तरह सहज और सरल बनाओ।

इस अनुवाद मे अत्यन्त ही स्वाभाविकता और कलात्मकता देखने को मिलती है। वास्तव मे अनुवाद का काम बहुत ही कठिन है। इसके लिए विशेष प्रतिभा की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त यह भी ध्यान देने की बात है कि गद्य की अपेक्षा काव्य का अनुवाद करना और भी कठिन है, क्योकि जिस भाषा के काव्य का अनुवाद किया जाता है उस भाषा पर अनुवादक का पूरा अधिकार होना चाहिए। उसे उस भाषा के एक एक शब्द और

शब्दो की अर्थच्छवियो की सही पकड होनी चाहिए। इस कविता के अनुवाद से यह सिद्ध है कि श्री माणकचद नाहर मे एक कुशल अनुवादक के गुण विद्यमान है। अनूदित कविता मे मूल कविता की समस्त सवेदना अपने पूरे प्रभाव के साथ अभिव्यक्त हुई है।

विशेषताएँ

श्री नाहर की अनुवाद करने की क्षमता से उनकी कुछ विशेषताएँ दृष्टि-पथ मे आती हैं—

(१) विद्वान् अनुवादक का दोनो भाषाओ पर समान अधिकार ज्ञात होता है।

(२) मूल भाषा मे परस्पर के भाव के लिए प्रतीकात्मक शब्द का प्रयोग करने मे सफल हुए है।

(३) अनुवाद करके अहिन्दी प्रान्तों के साहित्यकारो के भाव हिन्दी प्रान्तो को भी हृदयगम कराए गए है।

(४) भावात्मक एकता स्थापित कराने का प्रयास है।

निष्कर्ष

श्री माणकचद नाहर के प्रकीर्ण साहित्य के अध्ययन करने के पश्चात् यह निश्चित रूप से कहा जा सकता हे कि निवन्ध, काव्य और जीवनी-साहित्य जैसी विधाओ मे नए अध्याय जोडने वाले इस साहित्यकार ने पत्रकारिता-साहित्य, ज्ञान-विज्ञान विषयक् साहित्य और अनुवाद-साहित्य के रूप मे एक उत्कृष्ट और महत्त्वपूर्ण साहित्य को समृद्ध किया है, साथ ही देश मे भावनात्मक एकता, राष्ट्रप्रेम, धार्मिक भावना, निष्पक्ष रूप से व्यवहार करने और सर्वजन हिताय की भावना को वढावा दिया है। वास्तव मे यह साहित्य भी वहुत ही उपयोगी है और उनकी प्रखर प्रतिभा का परिचायक है। ऐसे होनहार, प्रतिभावान् साहित्यकार को ईश्वर चिरायु रखे, यही हार्दिक कामना हे।

अध्याय ८

हिंदी साहित्य में ब० माणकचंद नाहर का स्थान

हिन्दी-साहित्य के अगाध सागर मे इतने बहुमूल्य रत्न छिपे हुये है कि आज तक उनसे हमारा परिचय नही हो पाया है। प्रतिभा के धनी, साहित्य के मनीषी, भावो के निवेश, काव्य-कमलाकर के दिवाकर, उदारता के उदाहरण एव प्रसन्नता की निधि श्री माणकचन्द नाहर के सतरगी व्यक्तित्व से अधिकाश हिन्दी प्रेमी अद्यावधि अपरिचित से ही है। नई पीढी के हिन्दी सेवको मे आपका अनुपम योगदान है। भारती के भव्य-भवन मे नित्य आकर नवीन काव्य प्रसूनो से माँ की पूजा करना आपका सहज धर्म है। कविता के क्षेत्र मे आज-कल लेखनी "सत्याग्रह" का लोभ सवरण नही करती। यथार्थ के चितेरे होने के साथ ही साथ आप अच्छे निवन्धकार और आलोचक भी है। अपनी प्रखर प्रतिभा और मौलिक चिंतन से आपने हिन्दी साहित्य की जो श्री वृद्धि की है और कर रहे है, वह विविध रूपो मे स्मरणीय हे।

श्री ब० माणकचन्द नाहर बहुमुखी प्रतिभा के धनी है। आपका व्यक्तित्व अनेक विशेषताओ को लिए है। आप एक उच्च कोटि के साहित्य-सर्जक होने के साथ ही शिक्षा-शास्त्री, समाज-सेवक, राष्ट्रभाषा हिन्दी के अनन्य सेवक, राष्ट्रभक्त और सक्रिय राजनीतिज्ञ भी हे। इस तरह उनका कार्य-क्षेत्र अत्यन्त व्यापक होने के कारण उनका व्यक्तित्व भी बहुमुखी है।

हिंदी साहित्य की विविध विधाओ को प्रगतिवान् बनाने मे श्री नाहर का विशेष योगदान है।

श्री माणकचन्द जी नाहर के निबध-साहित्य का अध्ययन करने पर पता चलता है कि उन्होने अपनी लेखनी कई विषयो पर चलाई है। साहित्यिक, समीक्षात्मक, आलोचनात्मक और शोधपरक निबन्धो के साथ ही धार्मिक, ऐतिहासिक महत्व के लेख भी उन्होने लिखे है। आपके लेखो मे राष्ट्रीय और सास्कृतिक चेतना के अतिरिक्त धार्मिक निष्ठा और तर्काश्रित बौद्धिकता मिलती है। उनके निबधो मे उनका प्रखर व्यक्तित्व विद्यमान है। साहित्य की कसौटी पर उनके अनेक निबन्ध अत्यन्त सफल सिद्ध हुए है। सशक्त भाषा और विषयानुकूल शैली उनके सभी निबन्धो मे देखी जाती है। अनेक शैलियो के व्यावहारिक प्रयोग उनके विविध विषयो के निबन्धो मे मिलते हैं। वास्तव मे उनका निबन्ध-साहित्य हिन्दी साहित्य-जगत् मे एक नई कडी जोडने का प्रयास है। इनके निबन्धों मे नई बौद्धिकता विकासमान है। अहिन्दी भाषी प्रदेश मे रह कर पूर्ण निष्ठा के साथ निबधकार के रूप मे हिन्दी साहित्य की जो सेवा श्री नाहर जी कर रहे हैं, वह स्तुत्य है। उनके विविधता पूर्ण निवन्धो मे एक श्रेष्ठ निबन्ध के सभी तत्व विद्यमान है।

श्री नाहर के काव्य का अध्ययन-विश्लेषण करने पर हम पाते है कि उनकी काव्य रचनाएँ देश-प्रेम, सामाजिक-राजनीतिक व्यग्य को लेकर चली है। उनमे यथाथ की पकड है और भावो तथा विचारो की सघर्न अभिव्यक्ति। विषय वस्तु की दृष्टि से निश्चित ही ये रचनाएँ सशक्त है और कवि की व्यापक दृष्टि की परिचायक ह। कवि ने जीवन को निकट से देखा हे और सफलता पूवक शब्दायित किया है। इस दृष्टि से उनकी व्यग्य रचनाएँ विशेष रूप से सफल बन पडी है।

शिल्प की दृष्टि से भी उनका काव्य सशक्त है। भाषा, बिम्ब, रस और अलकारो की दृष्टि से उनकी कविताएँ पर्याप्त सफल है, किन्तु छन्द की दृष्टि से इतनी सशक्त नही है। सब कुछ मिलाकर उनकी रचनाएँ यह सिद्ध करती है कि श्री माणकचन्द नाहर मे काव्य-प्रतिभा हे, और उनके काव्य मे अनेक सम्भावनाएं सन्निहित है।

श्री माणकचन्द नाहर का जीवनी-साहित्य उनके निवन्ध साहित्य और काव्य की तरह ही उत्कृष्ट है। इस विधा को समृद्ध करने के लिए उन्होने अनेक महापुरुषो की अनेक शिक्षाप्रद जीवनियां प्रस्तुत की है। राष्ट्रसेवक, साहित्यकार, वैज्ञानिक, समाजसुधारक इत्यादि महापुरुषो की यह प्रेरणादायक जीवनियां; भाषा और शिल्प की दृष्टि से भी अत्यन्त सफल और मूल्यवान

है। भाषा और शैली की दृष्टि से उनका जीवनी-साहित्य हिन्दी मे अपना अपूर्व स्थान रखता है। इस तथ्य से इन्कार नही किया जा सकता।

श्री माणकचन्द नाहर के सम्पूर्ण साहित्य के अध्ययन, मूल्याकन करने के पश्चात् यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि निबन्ध, काव्य और जीवनी-साहित्य जैसी विधाओ मे नये अध्याय जोड़ने वाले इस साहित्यकार ने बाल-साहित्य, पत्रकारिता-साहित्य, ज्ञान-विज्ञान-विषयक साहित्य और अनुवाद-साहित्य के रूप मे एक उत्कृष्ट और महत्वपूर्ण साहित्य देकर हिन्दी-साहित्य को समृद्ध किया है। वास्तव मे यह साहित्य भी बहुत ही उपयोगी है और उनकी प्रखर प्रतिभा का परिचायक है।

दक्षिणी भारतीयो की हिन्दी सेवा का जब-जब अध्ययन-मनन किया जाएगा, तब-तब ब० माणकचद नाहर का नाम सबसे पहली पंक्ति मे लिखा हुआ दिखाई देगा। माँ सरस्वती के इस वरद पुत्र की लेखनी भविष्य मे और भी अच्छा साहित्य हिन्दी को देगी, ऐसा विश्वास है। उनके साहित्य के मूल्याकन का काय होना ही चाहिए। हमारा विनम्र दावा है कि उनका अब तक प्रकाशित साहित्य हिन्दी साहित्य के विकास मे महत्त्व रखता है, और श्री नाहर अच्छे लेखको की श्रेणी मे गिने जा सकते हैं।

अध्याय ९

ब० माणकचंद नाहर अपने पत्रों में

पत्र जहाँ एक ओर मानवीय सम्बन्धो के बीच सेतु का काम करते हैं, वही वे पत्र-लेखक के व्यक्तित्व को भी उजागर करते है। यदि पत्रो को मानव-व्यक्तित्व का प्रमाण और मनुष्य के चिन्तन मनन आचार-व्यवहार, उसकी प्रकृति इत्यादि का दस्तावेज कहा जाय, तो अनुचित न होगा। दूर बैठे व्यक्ति के सम्बन्ध मे उस व्यक्ति से अपरिचित व्यक्ति भी पत्रो के माध्यम से ही लग-भग पूरा परिचय प्राप्त कर सकता है। किसी भी साहित्यकार के पत्रो का अध्ययन उसके साहित्य को समझने मे भी सहायक हो सकता हे। इस दृष्टि से पत्रो को कई श्रेणियो मे बाँटा जा सकता है, यथा—

१ साहित्यिक पत्र,
२ व्यक्तिगत पत्र,
३ औपचारिक पत्र,
४ विविध।

साहित्यिक पत्रो मे साहित्यिक समस्याओ पर विचार किया जाता है। कोई लेखक अपने पत्रो के माध्यम से साहित्य के सम्बन्ध मे अपनी विचार-धारा, अपने साहित्य पर पाठको की ओर से पूछे गये प्रश्नो का स्पष्टीकरण इत्यादि बाते व्यक्त कर सकता हे। ऐसे पत्र प्राय विचार-प्रधान होते है, उनमे गम्भीरता होती हे और पत्र-लेखक का व्यक्तित्व, उसकी मान्यताये आदि आद्यन्त उपस्थित रहते है। साहित्यिक दृष्टि से इन पत्रो का विशेष महत्त्व है, क्योकि इनमे साहित्य-सिद्धान्तो की विशेष चर्चा रहती है।

व्यक्तिगत पत्रो मे दैनिक जीवन की झाँकी रहती हे, और लेखक के व्यक्तित्व के अनुकूल गम्भीरता अथवा हलकापन विद्यमान रहता है। वास्तव

मे व्यक्तिगत पत्र ही किसी व्यक्ति को सही रूप मे पहचानने के साधन हैं। इन पत्रो मे औपचारिकता का अभाव होता है, बनावटीपन नही होता है, और मन के भाव निर्बाध-गति से उतरते चले आते है।

औपचारिक पत्र औपचारिक ही होते हे। किसी पत्र के साधारण उत्तर मे, शुभकामनाओ के उत्तर मे, किसी पुस्तक अथवा पत्रिका पर अपनी सम्मति भेजने इत्यादि मे इन पत्रो का रूप देखने को मिलता है। इन पत्रो के माध्यम से भी लेखक के उदारमन का परिचय मिलता है।

श्री माणकचद नाहर एक ऐसे व्यक्ति है, जो अपनी ओर से अनेक व्यक्तियो, सस्थाओ इत्यादि से पत्र-व्यवहार की पहल करते हैं, तथा पत्र लिखने वाले प्रत्येक व्यक्ति को तत्काल उत्तर देते हैं, चाहे वह उनका पूव-परिचित हो अथवा नितान्त अपरिचित। पत्र-लेखन उनके दैनिक जीवन का एक अग है, यहाँ तक कि उनका धम बन गया है। विभिन्न व्यक्तियो और सस्थाओ को लिखे गये उनके सैकडो पत्रो मे से कुछ चुने हुए पत्रो के अश यहाँ इस आशय से प्रस्तुत है कि उनके माध्यम से उनके व्यक्तित्व का पता चल सके।

पहले उनके साहित्यिक पत्रो के कुछ अश देखे जायँ, जिनमे उनका साहित्यिक दृष्टिकोण, उनकी कमठता, लगनशीलता इत्यादि का पता चलता है।

डॉ० हरिमोहन के एक पत्र के उत्तर मे श्री नाहर ने लिखा था—

आपका पत्र मिला, धन्यवाद। मै साहित्य को हमेशा समाज के साथ जुडा हुआ देखना चाहता हूँ। यह ठीक है कि मै अनेक व्यस्तताओ मे फँसा हूँ, किन्तु मेरे सामने साहित्य सजना का प्रश्न भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। मेरा विश्वास है कि विश्व के अनेक देशो के साहित्य ने वहा के समाज को दिशा दी है। मै आपकी इस बात से सहमत हूँ कि साहित्य सिर्फ मनोरजन के लिए नही होता, लेकिन मै मानता हूँ कि साहित्य मे रोचकता का अश भी होना ही चाहिए।

आपको मेरी दहेज-विषयक कविता अच्छी लगी, आभारी हूँ। और नया क्या चल रहा है? लिखे। आशा है सानन्द होगे।

स्नेहाधीन—
माणकचन्द

इसी तरह डॉ० नगेन्द्रकुमार शर्मा के नाम लिखा, उनका एक पत्र द्रष्टव्य है—

आदरणीय डॉ० साहब,

आपका कृपा-पत्र मिला। हार्दिक आभारी हूँ। अनुवाद के माध्यम से

मेरा उद्देश्य दो भाषाओ के बीच परस्पर ज्ञान का आदान-प्रदान करना है, इसी-तरह दो भाषाओ के साहित्य भी एक दूसरी भाषा को परस्पर निकट लाने मे सहायक हो सकती है। आप स्वय अनेक भाषाओ के विद्वान् है, इस आवश्यकता को आप अच्छी तरह समझ सकते हे। मेरी उत्कट इच्छा हे कि मैं दक्षिण भारतीय भाषाओ और राष्ट्र-भाषा हिन्दी को परस्पर गले मिलाऊँ, और इन भाषा-भाषियो को इन भाषाओ के ज्ञान-भण्डार से अवगत कराऊँ। आपने भाषा और व्याकरण की दृष्टि से जिन त्रुटियो की ओर सकेत किया है, भविष्य मे उनका ध्यान रखूँगा। आप इसी तरह अपना स्नेह भाव बनाये रखे।

कृपाकांक्षी—
माणकचंद

इसी तरह के अनेक पत्र यहाँ उद्धृत किये जा सकते है, किन्तु स्थानाभाव से सभी पत्रो को देना असभव है। अब कुछ और पत्राशो को यहाँ उद्धृत किया जा रहा है, जिनमे उनके निर्भीक व्यक्तित्व, इच्छा-आकाक्षा, कर्मठता, साहित्य-सेवा की वाञ्छा, सजगता इत्यादि बातो पर प्रकाश पडता है।

१— श्री

प्रतिष्ठा मे
महाराजा करणी सिंह जी,
बीकानेर

माणकचन्द नाहर, एम० ए०
५८, मैलापुर बाजार रोड
मद्रास—४
७-१०-८०

सादर नमस्कार। मुझे जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि महाराज गगा सिंह जी की जन्म शताब्दी समायोजित हो रही हे। इसके पूर्व पत्र मे मैंने तदर्थ बधाई-सदेश भेजा था, प्राप्त हुआ होगा। समय-समय पर राजस्थानी भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु मैंने आपसे सपर्क साधा है।[1]

इस शताब्दी पर आपके स्नेह, सहयोग और आशीर्वाद से राजस्थानी भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु 'सेठ बख्तावर राजस्थानी विश्वविद्यालय' आरम्भ करने की प्रस्तावना आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ। निकट भविष्य मे बीकानेर की स्थापना के भी ५०० वर्ष पूरे हो रहे है। इस अवधि तक सेठ बख्तावर राजस्थानी विश्वविद्यालय अपना बहुमुखी कार्य आरम्भ कर सके, ऐसी मेरी आपसे सादर प्रार्थना है।

१ १५-१ १९६८ को मद्रास मे आपसे भेट आपके सम्मान मे आयोजित सम्मान समारोह का सयोजक

मैं यदा, कदा एव सर्वदा राष्ट्रीय एव अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित साहित्यकारो, विद्वानो, सामाजिक कार्यकर्त्ताओ तथा महाकवियो एव वैज्ञानिको की जन्म शताब्दियो मे प्रतिभागी रहा करता हूँ। इधर मद्रास मे भी 'राजा अन्नामलै चेट्टीयार' की जन्म-शताब्दी की सयोजना हुई। यद्यपि रियासत की दूरी २०००-२५०० किलोमीटर की दूरी है, परन्तु प्रजा की भलाई के सदर्भ मे आप दोनो मे काफी समानता एव निकटता है। इस वर्ष सौभाग्य से हेलेन केलेर' की भी जन्म-शताब्दी है। सपूर्ण विश्व मे विकलागो की आशा के रूप मे आप लोकप्रिय थे। सयुक्त राष्ट्रसघ ने भी १९८१ को विकलाग व्यक्तियो के लिए अतर्राष्ट्रीय वर्ष घोषित किया है। मेरे पिताश्री कालजयी सेठ बख्तावर चन्द जी नाहर (१९१५-४६) ओसवाल समाज की अग्रगण्य विभूति थे, आप जैन-जाति के नाहर[1] घराने के उल्लेखनीय नागरिक थे। तत्कालीन बीकानेर राज्य मे आए अकाल (१८९९-१९०० व १९३८-३९) के राहत हेतु आपका कार्य सराहनीय था।

× × × ×

ऐसी आदर्श विभूति सेठ बख्तावर चन्द जी नाहर की स्मृति मे बीकानेर मे राजस्थानी भाषा विश्वविद्यालय की स्थापना स्वयमेव गौरव है। मै इस सदर्भ मे सलग्न बीस लाख रुपये की "वित्तीय-सग्रह-योजना" भी प्रस्तुत कर रहा हूँ। इस पर सरकारी अनुमति अगीकृत बराबर इस योजना को क्रियान्वित कराना है। शेष कार्य मै स्वय करने को तैयार हूँ।

राजस्थान विधान-सभा मे 'सेठ बख्तावर राजस्थानी विश्वविद्यालय बिल पारित कराना है। तत्पश्चात Association of Indian Universities एव University Grant Commition New Delhi' की औपचारिकताएँ भी पूरी करनी है। सौभाग्य है कि महाराजा गगासिह जी के साथ 'विकलागो की आशा के मसीहा' हेलेन कलर की भी जन्म-शताब्दी इसी वर्ष है। इस सुअवसर पर मैं अपनी मातेश्वरी अम्मापिया झनकर बाई नाहर की स्मृति मे बीकानेर मे EYE BANK OR EAR BANK OR KIDNEY BANK" की स्थापना की पहल करना चाहता हूँ।

आशा है कि आप पारस्परिक सहयोग प्रदान कर मेरे अभियान की शुरु-

1 बीकानेर राज्य के आर्थिक विकास मे जैनियो का योगदान
2 Report on the Famine operations in the Bikaner state—1939-40 page 21-113

आत मे सहभागी बनकर इस शताब्दी मे कामयाब होगे।

आपका—
माणकचद

प्रतिलिपि—

श्री हीरालाल जी पारख, बीकानेर
श्री आसकरण जी पारख,
विकास अधिकारी, जीवन बीमा निगम
बीकानेर।

२—प्रतिष्ठा मे,
सचिव महोदय
साहित्य-अकादेमी
रवीन्द्र भवन
३५, फिरोजशाह रोड, नई दिल्ली

माणकचद नाहर, एम० ए०
निदेशक,
सेठ बरतावर रिसर्च इस्टीट्यूट
५८ मैलापुर बाजार रोड, मद्रास
२७-११-८०

सादर नमस्कार। मैने साहित्य अकादेमी के स्थापन से लेकर आज तक उसके क्रिया-कलापो, गतिविधियो मे सक्रिय तेजी लाने के लिए समय समय पर सुझाव दिए है, औपचारिक रूप मे मेरे पास पत्रोत्तर के रूप मे साहित्य-अकादेमी के अधिकारियो के ढेर सारे पत्र है। इन पदाधिकारियो एव अधिकारियो मे पचास-प्रतिशत से भी अधिक व्यक्ति श्री क्षेमचन्द्र जी 'सुमन' द्वारा प्रकाश्य पुस्तक मे स्थान पाने के योग्य हो गए है। मेरे द्वारा लिखित दो पृष्ठ सुझावो का पत्रोत्तर दो पक्तियो मे आया है। किसी भी एक सुझाव पर अमल नही हुआ है। मेरा शारीरिक तथा मानसिक व्यायाम कितना हुआ होगा, उसका आप अदाजा लगा लीजिए। डाक-व्यय इस सन्दर्भ मे गौण है।

खैर! इतने सारे सघर्ष के बावजूद भी मै निराशा मे आशा की किरण सदैव पाता हूँ। उपराष्ट्रपति पद के लिए उम्मीदवार, दजनो बार लोक सभा, तमिलनाडु विधान-सभा, तमिलनाडु विधान परिषद् की सदस्यता के लिए उम्मीदवार बनकर निराशा की आशा मे मैने प्रयोग किया है। हर बार थोडी प्रगति कर रहा हूँ। सफलता की मजिल दूर होकर भी नजदीक आ रही है। शनै शनै ईश्वर मेरे अभीष्ट मार्ग मे सफलता अवश्य प्रदान करेगा। ऐसा मेरा आत्म-विश्वास है।

× × × ×

मेरी लेखनी से हार, निराशा और तिरस्कार को बहुत सम्मान मिला है।

चाहे वह कविता के माध्यम से या निबध के माध्यम से प्रकट हुई है। ऐसे लिखने बैठूँ तो यह छोटा सा पत्र-सघर्षों का, आपदकथाओ का, बाधाओ का विपदाओ का शोध-ग्रथ हो जायेगा। शोध-ग्रथ लिखने का समय किधर है। हाँ मेरी कविताओ एव निबधो पर स्नातकोत्तर उपाधि-स्तर का शोध हो गया है। अब पी-एच०-डी० के शोधार्थी भी तुलनात्मक रूप मे मेरे साहित्य पर Ph D का शोध-ग्रथ तैयार करने की योजना बना रहे हैं।

मैंने यदा, कदा और सर्वदा साहित्य-अकादेमी मे हिंदी-परामर्श मडल के सदस्य बनने हेतु पहल की। जब ६५ मे पत्र लिखा तो जवाब आया, ६८ तक हिंदी का परामर्श-मण्डल गठित हो गया है, और जब ६८ मे लिखा तो पत्रोत्तर आया ७१ तक का गठित हो गया है। इस प्रकार औपचारिक पत्र व्यवहार होता रहा।

चूँकि साहित्य अकादेमी द्वारा राजस्थानी भाषा मान्य हुई और उसका परामर्श-मडल गठित हुआ, तब मैंने सोचा हिंदी की भीड-भाड मे, दीर्घ सूची मे महारथियो मे मेरा कहाँ नबर आयेगा। अत मैंने निर्णय लिया कि मातृ-भाषा राजस्थानी होने के नाते तथा राजस्थानी का कवि व लेखक होने के नाते तथा सुदूर दक्षिण की प्राय राजस्थानी शिक्षण, सामाजिक, व्यापारिक सस्थाओ से सबधित होने के नाते राजस्थानी परामर्श-मण्डल मे सदस्य बनकर साहित्य-अकादेमी मे मौलिक योगदान दूँ, लेकिन वहाँ भी ७२ से ७५ तक, ७५ से ७८ तक की बात ही रही। ज्यादा मैंने कोशिश की तो साहित्य-अकादेमी के अधिकारियो ने राजस्थानी के परामर्श-मडल के सयोजक के हाथ सुपुर्द कर दिया, उन्होने फिर टालमटोल ही कर दिया, देखिए इस टालमटोल मे मेरा कुछ नुकसान नही है।

मैं अपने ज्ञान से, ध्यान से, शिक्षण-प्रशिक्षण से, आदर्श से, कर्त्तव्य से, नीति से, अनुभव से, सदाचार से, प्रेम-प्रमोद से, आनद-मनोद से साहित्य अकादेमी के माध्यम से जन-जन को, कन-कन को अभिभूत करना चाहता हूँ, अत मेरे निवेदन को टाल-मटोल मत कीजिये ?

मै हिन्दी परामर्श—मडल मे भी सेवा देने के लिए तैयार हूँ। चूँकि मेरा पाव शताब्दी से अधिक निवास मद्रास रहा। तमिल साहित्य और सस्कृति पर अनेक निबध प्रकाशित हुए है, तमिल परामर्श-मडल मे भी सदस्य बनने की योग्यता रखता हूँ। एक तमिल भाषी सदस्य से भी अधिक मैं तमिल की साहित्यिक अभिवृद्धि हेतु सुझाव दे सकता हूँ। कार्य-योजना सचालन कर

सकता हूँ। हिन्दी-तमिल, राजस्थानी-तमिल सबधी मेरे पास अनेक तुलनात्मक विषय है जो तमिल भाषा की अभिवृद्धि मे चार-चांद लगा सकते हैं, और तमिल-भाषी सदस्य इससे अनभिज्ञ है, अछूते है।

लेकिन मेरी इच्छा है कि राजस्थानी परामश-मडल मे ही अपना योगदान दूँ। चूकि साहित्य शब्द है। साहित्य की अभिवृद्धि मे भौगोलिक सीमाएँ बाँधना भी उचित नही है।

एक हिन्दी-भाषी ने केरल जाकर मलयालम सीखी। मलयालम मे प्रेमचन्द उपन्यास का अनुवाद किया। अब पूरा प्रेमचद साहित्य मलयालम मे अनुवादित ह, २० से २५ % साहित्य मलयालम मे अनुवादित हे, अब जरा देखिये इस हिन्दी भाषी का मलयालम मे योगदान है या नही।

मुझ से कोई पूछे कि विश्व मे राजस्थानी भाषा बोलने वाला शहर कौन सा है। मैं उत्तर दूँगा—कलकत्ता (जहाँ १५-२० लाख लोगो द्वारा राजस्थानी बोली जाती है)। दूसरा प्रश्न पूछो कि ऐसे बडे शहरो के नाम दीजिए, जहाँ राजस्थानी अधिक बोली जाती है—(करीब एक लाख से अधिक लोगो द्वारा)। बम्बई, इन्दौर, नागपुर, मद्रास, हैदराबाद, बगलौर इत्यादि। और फिर मै स्वाभाविक रूप से जयपुर, उदयपुर, कोटा, बीकानेर का नाम लूँगा।

देखिये राजस्थानी भाषी ज्यादा राजस्थान के बाहर के हे,उनकी अवहेलना मत कीजिये, उन्हे राजस्थानी परामश-मडल मे लेकर उनका भी सहयोग लीजिये। उनसे मौलिक योजनाएँ लेकर क्रियान्वित कीजिए ? साहित्य अकादेमी को चमकृत कीजिए। मेरा राजस्थानी भाषा के सम्बन्ध मे पूरे राष्ट्र का पूरा अध्ययन है। विशेपकर तमिलनाडु मे विशेपकर विरोधाभास के तथ्य आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ—

"तमिलनाडु मे प्रवासी राजस्थनी शत-प्रतिशत ग्रामीण अचलो मे तमिल भाषा और सस्कृति से घुल-मिल रहे है। तमिल भाषा मे अधिकार और वचस्व रखते है, इसे यो कहिए कि—"तमिल का प्रवासी राजस्थानियो पर प्रभाव" गहरा है।

उदाहरण १—एक सज्जन जो राजस्थानी भाषी हैं अभी सत्तारूढ दल से विधान सभा मे चुने गए हैं, धारा प्रवाह से तमिल बोल लेते ह। यदि सयोगवश उनके सामने कोई धारा प्रवाह राजस्थानी बोल ले तो उनके समझ नही आये और समझ मे आ जाय तो प्रत्युत्तर नही दे सके।

साधारण बोलचाल राजस्थानी बोल लेते है।

२—एक सज्जन जो राजस्थानी भाषी है अभी सत्तारूढ क्षेत्रीय पार्टी मे राज्यसभा के लिए मनोनीत हुए है। उनका भी पाय इसी प्रकार राजस्थानी ज्ञान है।

मै ऐसी राजस्थानी भाषा-भाषी समस्याओ से अवगत हूँ, साहित्य अकादमी के माध्यम से कुछ मौलिक काय करना चाहता हूँ। आशा है आप अवसर प्रदान करेगे।

यह तो हुई परामर्श-मडल की बात, मै साहित्य अकादेमी की वित्तीय समिति मे भी रहकर ऐसे मौलिक कार्यों की सयोजना कर सकता हूँ जिससे वर्ष भर मे करोडो रुपयो की आय हो जो उदीयमान साहित्यकार के प्रोत्साहन हेतु काम आ सके। चूँकि मै विश्वविद्यालय मे क्रिकेट का खिलाडी रहा, कभी-कभी अपने मन मे पाच दिन खेलने वाले प्रसिद्ध खिलाडी की यशोगाथा, उपलब्धियो की तुलना मे सत्तर-अस्सी वर्ष से साहित्य सेवा करने वाले साहित्यकार से कर बैठता हूँ और कभी-कभी नेताओ और अभिनेताओ के साथ तुलना कर लेता हूँ। मेरे हृदय मे साहित्यकार के प्रति असीम वेदना है, ईश्वर मौका देगा तो साहित्य और साहित्कारो का मापदड ऊँचा उठाऊँगा। आम जनता की अभिरुचि परिष्कृत कर साहित्य को और अधिक आकर्षित बनाने का प्रयास करूँगा।

आपका—

माणकचद नाहर

इसके अतिरिक्त उनके अनेक व्यक्तिगत पत्रो मे उनका निर्भीक व्यक्तित्व सघर्ष की क्षमता, जीवन के प्रति आस्था, चिन्तन मनन, अदम्य-उत्साह इत्यादि श्रेष्ठ मानवीय गुणो के दर्शन होते है।

औपचारिक पत्रो की सख्या भी अन्य पत्रो की तरह बहुत है, उन्होने अनेक पत्र-पत्रिकाओ को अपनी प्रतिक्रिया और शुभकामना ऐसे पत्रो के माध्यम से दी है। अनेक सस्थाओ और समितियो तथा आयोजनो के लिये वे समय-समय पर अपने शुभकामना सन्देश भेजते रहे है, इसके साथ ही प्रत्येक अवसर पर शुभकामना पत्र (Greetings) अपने इष्ट मित्रो, प्रशसको, प्रसिद्ध लेखको और राजनीतिक व्यक्तियो को भेजते रहते है। इस तरह के पत्र मानव-मानव के बीच मैत्री और आत्मीय सम्बन्ध बनाने के ठोस साधन हैं।

उपर्युक्त परिप्रेक्ष्य मे यह कहा जा सकता हे कि विभिन्न व्यक्तियो-सस्थाओ इत्यादि को लिखे गये अपने पत्रो मे श्री माणकचन्द नाहर का विनम्र, साहसी, विनोदी, विचारवान व्यक्तित्व झलकता दिखाई देता है, इन पत्रो से पता चलता है कि उनमे गजब का जीवट है। वे दिखावे से कोसो दूर है, अत्यधिक प्रशसा उन्हे अच्छी नही लगती, यही कारण है कि इस ग्रन्थ के सम्पादक ने जब उनको यह लिखा कि हम लोग मिलकर आपके व्यक्तित्व-कृतित्व पर एक पुस्तक निकालने जा रहे हे, तो उन्होने लिखा कि "अभी इसकी कोई आवश्यकता नही है। मै तो सरस्वती-मन्दिर का एक साधारण पुजारी हूँ, मुझे अनवरत, सारस्वत-सेवा करने दीजिए। अच्छा हो कि किसी सुप्रसिद्ध साहित्यकार पर आप ग्रन्थ निकालें।" उनकी सादगी और विनम्रता का इससे बडा प्रमाण और क्या हो सकता है ?

ईश्वर से हमारी प्रार्थना है कि श्री नाहर दीर्घकाल तक साहित्य-साधना करते रहे और आजीवन स्वस्थ एव प्रसन्न रहे।